04 - कौन-सा विपक्ष, किसका विपक्ष और कैसा विपक्ष?

05 - संत मुक्ताबाईः सामाजिक -आध्यात्मिक योगदान देने वाली विदुषी

06 - सिकुड़ने लगी गरीब की थाली

07 - प्रभारी मंत्री श्री पंवार की अध्यक्षता में जिला विकास...



A Daily News Magazine

इंदौर

मंगलवार, 12 मई, 2026

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 219, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2



subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews


**प्रसंगवश**

# ग्रेट निकोबार प्रोजेक्ट क्या है, जिस पर मचा है सियासी बवाल

**बीबीसी रिपोर्ट**

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने मोदी सरकार के ग्रेट निकोबार प्रोजेक्ट पर पिछले दिनों तीखा हमला किया। यह परियोजना 81 हज़ार करोड़ रुपये की है। राहुल गांधी ने कहा, ''ये हमारे जीवनकाल में देश की प्राकृतिक और जनजातीय विरासत के खिलाफ़ सबसे बड़े घोटालों और सबसे गंभीर अपराधों में से एक है।'' यह परियोजना भारत के सुदूर दक्षिण-पूर्वी इलाकों में स्थित ग्रेट निकोबार आईलैंड में विकसित की जा रही है। योजना के तहत ट्रांसशिपमेंट पोर्ट, एयरपोर्ट, टाउनशिप और पावर प्लांट का निर्माण किया जाएगा। सरकार इसे ख़ासकर हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की स्थिति मज़बूत करने के लिहाज़ से रणनीतिक और आर्थिक दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण बता रही है। लेकिन आलोचकों का कहना है कि इस परियोजना से पर्यावरण को भारी नुक़सान हो सकता है। इससे शॉम्पेन और निकोबारी जनजातियों पर गंभीर असर पड़ सकता है।

राहुल गांधी ने सरकार के इस प्रोजेक्ट की आलोचना करते हुए एक वीडियो संदेश में कहा कि वह प्रोजेक्ट नहीं है। यहां लाखों पेड़ों को काटने के लिए उन्हें चिह्नित किया गया है। यह 160 वर्ग किलोमीटर में फैले वर्षावन को ख़त्म करने का फ़ैसला है। यह उन समुदायों की अनदेखी है, जिनके घर उनसे छीन लिए गए हैं।'

उन्होंने ग्रेट निकोबार आईलैंड के जंगलों का दौरा करते हुए कहा कि वहां के पेड़ लोगों की 'यादों से भी पुराने' है। यहां के जंगल पीढ़ियों से पले-बढ़े हैं और यहां रहने वाले खूबसूरत लोगों से उनके हक़ की चीज छीनी जा रही है।

द्वीप पर रहने वाला हर एक व्यक्ति इस परियोजना के खिलाफ़ है, लेकिन उनसे इस परियोजना के बारे में पूछा ही नहीं गया है। उन्हें यह भी नहीं पता कि उनकी ज़मीन के बदले उन्हें क्या मुआवजा मिलेगा। राहुल गांधी ने इसे 'खुलेआम लूट' बताया। राहुल गांधी इस मुद्दे को लेकर निकोबार जिले के कैंपबेल पहुंचे और वहां उन्होंने परियोजना के खिलाफ़ विरोध कर रहे आदिवासी नेताओं से मुलाक़ात की। कुछ आदिवासी समुदायों ने आरोप लगाया है कि केंद्र सरकार ने पारदर्शिता नहीं बरती, पर्यावरणीय जोखिमों को नज़रअंदाज़ किया और आदिवासी अधिकारों की लगातार अनदेखी की।

दूसरी ओर भाजपा ने इस परियोजना का विरोध करने पर राहुल गांधी को घेरा है। बीजेपी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि कांग्रेस और राहुल गांधी कर रहे हैं विरोध। अंडमान निकोबार द्वीप समूह पर मोदी सरकार 92 हजार करोड़ रुपये का 'ग्रेट निकोबार प्रोजेक्ट' बना रही है। यह सिर्फ एक बंदरगाह नहीं, यह भारत की समुद्री सीमाओं की सुरक्षा है। यह हिंद महासागर में भारत की ताक़त का ऐलान है, यह चीन को सीधा जवाब है। चीन नहीं चाहता यह प्रोजेक्ट बने, और हैरानी की बात यह है कि राहुल गांधी भी नहीं चाहते।

''अब सवाल यह है कि आखिर किसके इशारे पर हो रहा है यह विरोध? किसके हित में है भारत की सुरक्षा को कमजोर करना?''

ग्रेट निकोबार का इलाक़े से सबसे अहम समुद्री मार्ग मलक्का स्ट्रेट है। जियोपॉलिटिकल तौर पर देखें तो ये बेहद अहम इलाक़ा है। भारत और चीन दोनों के लिए हिंद महासागर में वर्चस्व कायम करना अहम रणनीतिक लक्ष्य है। ख़ासकर ग्रेट निकोबार प्रोजेक्ट को चीन की 'मोतियों की माला' (स्ट्रिंग ऑफ़ पर्ल्स) स्ट्रेटजी के जवाब के तौर पर देखा जा रहा है।

विशेषज्ञों का कहना है कि यह परियोजना निवेश ला सकती है, व्यापार बढ़ा सकती है और भारत की समुद्री ताक़त को मजबूत कर सकती है। ठीक वैसे ही जैसे हॉन्गकॉन्ग ने चीन को मजबूती दी है। 166 वर्ग किलोमीटर में फैली इस परियोजना में एक ट्रांसशिपमेंट बंदरगाह, एक बिजली संयंत्र, एक हवाई अड्डा और एक नया शहर बनेगा। ये इस इलाक़े को हिंद महासागर और स्वेज नहर और दूसरे अहम वैश्विक व्यापारिक मार्ग से जोड़ने के लिए डिजाइन किए गए हैं। सरकार का कहना है कि दुनिया के सबसे व्यस्त समुद्री मार्ग मलक्का स्ट्रेट के पास बन रही इस परियोजना से अंतरराष्ट्रीय व्यापार और पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। सरकार का अनुमान है कि 30 वर्षों में परियोजना पूरी होने तक द्वीप पर लगभग साढ़े छह लाख लोग रह रहे होंगे। विशेषज्ञों का मानना है कि अरबों डॉलर की यह योजना क्षेत्र में चीन के बढ़ते असर के मुक़ाबले के लिए भारत के लक्ष्य का एक हिस्सा है।

लेकिन इस योजना ने उन द्वीपवासियों के बीच चिंता पैदा कर दी है, जिन्हें अपनी ज़मीन, संस्कृति और जीवन शैली के खोने का डर है। उन्हें डर है कि यह परियोजना उन्हें विलुप्त होने के कगार पर पहुंचा सकती है। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह दुनिया की कुछ सबसे अलग-थलग और कमजोर जनजातियों का घर है, जिनमें से पांच समूहों को 'विशेष रूप से कमजोर' के रूप में वर्गीकृत किया गया है। इनमें जारवा, उत्तरी सेंटिनली, ग्रेट अंडमानी, ओंगे और शॉम्पेन जनजातियां शामिल हैं। जारवा और उत्तरी सेंटिनली जनजातियाँ काफ़ी हद तक बाहरी दुनिया से संपर्क में नहीं आई हैं, वहीं ग्रेट निकोबार द्वीप समूह के लगभग 400 शॉम्पेन लोगों को भी बाहरी दबावों के कारण अपनी जीवनशैली खोने के ख़तरा है। यह एक खानाबदोश जनजाति है, जिनमें से अधिकांश लोग जंगल के अंदरूनी हिस्सों में रहते हैं। उनकी संस्कृति के बारे में ज़्यादा कुछ पता नहीं है क्योंकि उनमें से बहुत कम लोगों का ही बाहरी दुनिया से संपर्क रहा है।

पर्यावरणविदों का कहना है कि इस परियोजना से पर्यावरण को बहुत अधिक कीमत चुकानी होगी। भारत के पर्यावरण मंत्रालय ने कहा है कि परियोजना के लिए द्वीप के कुल क्षेत्रफल का केवल 130 वर्ग किलोमीटर या 14 फ़ीसदी हिस्सा ही साफ किया जाएगा। फिर भी यहां लगभग साढ़े नौ लाख से अधिक पेड़ हैं. विशेषज्ञों का कहना है कि वास्तविक संख्या इससे कहीं अधिक हो सकती है। साल 2024 में 39 अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों (जीनोसाइड एक्सपर्ट्स) ने चेतावनी दी कि ये प्रोजेक्ट शोंपेन जनजाति के लिए डेथ सेंटेंस की तरह हो सकता है। इसके अलावा अक्तूबर 2025 में कई पर्यावरणविदों और शोधकर्ताओं के सामूहिक समूह ने सरकार को पत्र लिखकर इस प्रोजेक्ट को रोकने की मांग की थी। उन्होंने इसके पर्यावरण पर गंभीर प्रभाव की बात कही थी। इकोलॉजिस्ट माधव गाडगिल ने बताया था, 'सरकार हमेशा यह दावा करती है कि जंगल का केवल एक हिस्सा ही साफ़ किया जाएगा। लेकिन जो इन्फ्रास्ट्रक्चर आप बना रहे हैं, उससे ज़्यादा प्रदूषण पैदा होगा। उसका असर पूरे हैबिटेट पर पड़ेगा। द्वीप के दक्षिण-पूर्वी हिस्से में स्थित गलाथी बे पर इसका असर पड़ेगा, जो सदियों से विशाल लेदरबैक समुद्री कछुओं के अंडे देने (नेस्टिंग) का स्थान रहा है।

**(बीबीसी कलेक्टिव न्यूज रूम रिपोर्ट के संपादित अंश)**

# विश्वभर की शक्तियां भारत को दबोचने मैदान में उतरीं, हम डटे रहे,डरे नहीं

● **प्रधानमंत्री मोदी ने कहा-पोकरण परमाणु परीक्षण से हिल गई थी पूरी दुनिया** ● **सोमनाथ मंदिर प्राण-प्रतिष्ठा के 75 साल पूरे होने के मौके पर हुए शामिल**

**जामनगर (एजेंसी)।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सोमवार को गुजरात के सोमनाथ मंदिर में प्राण-प्रतिष्ठा के 75 साल पूरे होने के मौके पर कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने कहा- आज का दिन एक और वजह से भी खास है। आज के ही दिन 11 मई 1998 को देश ने पोकरण में परमाणु परीक्षण किया था। तब दुनिया भर की शक्तियां भारत को दबोचने मैदान में उतर गई थीं। पीएम ने कहा- भारत के लिए सारे रास्ते बंद कर दिए गए थे। लेकिन हम डरे नहीं, डटे रहे। भारत ने पोकरण परमाणु परीक्षण को ऑपरेशन शक्ति नाम दिया था। क्योंकि शिव के साथ शक्ति आराधना ही हमारी परंपरा रही है। मैं भगवान सोमनाथ के चरणों में नमन करते हुए ऑपरेशन शक्ति की बधाई देता हूं।

## ● पीएम बोले- भारत को कोई झुका नहीं सकता

सोमनाथ हमें याद दिलाता है कि कोई भी राष्ट्र तब तक मजबूत नहीं बन सकता, जब तक वह अपनी जड़ों से जुड़ा न रहे। भारत में विरासत और आधुनिकता एक-दूसरे से अलग नहीं हैं, दोनों साथ-साथ चलते हैं। हमारे देश में सांस्कृतिक और पवित्र स्थलों के पुनर्निर्माण को लेकर काफी राजनीति हुई है। दुर्भाग्य से आज भी ऐसी ताकतें हैं, जो राष्ट्रीय स्वाभिमान से ज्यादा तुष्टिकरण को महत्व देती हैं। लुटेरों ने सोमनाथ मंदिर की भव्यता मिटाने की कोशिश की। इस मंदिर को बार-बार तोड़ा गया, लेकिन हर बार इसका पुनर्निर्माण हुआ। दुनिया की कोई ताकत भारत को झुका नहीं सकती और न ही दबा सकती है।

● **वाजपेयी सरकार में हुआ था दूसरा परमाणु परीक्षण-** 11 मई 1998 को अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में भारत ने अपना दूसरा परमाणु परीक्षण किया था। यह काफी गोपनीय ऑपरेशन था। इसकी तैयारियां इतनी गुप्त थीं कि विदेशी खुफिया एजेंसियों को इसकी भनक तक नहीं लगी। इन परीक्षणों के जरिए भारत ने दुनिया को अपनी रणनीतिक और वैज्ञानिक ताकत दिखाई। लेकिन परमाणु परीक्षणों के बाद अमेरिका, जापान और कुछ पश्चिमी देशों ने भारत पर कई आर्थिक और तकनीकी प्रतिबंध लगाए थे।

**प्रदेश ने चीतों को अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराकर बनाया परिवार का हिस्सा : मुख्यमंत्री डॉ.यादव**

# कूनो नेशनल पार्क के जंगल में विमुक्त किए 2 मादा चीते

**भोपाल (नप्र)।** मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश की धरती ने चीतों को अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराकर, उन्हें पुर्नस्थापित करने का महत्वपूर्ण कार्य कर अपने परिवार का हिस्सा बनाया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने लगभग साढ़े तीन वर्ष पहले कूनो में चीता प्रोजेक्ट की शुरुआत की थी। आज देश में चीता पुनर्स्थापना का यह प्रोजेक्ट सफलता के साथ में आयामों की ओर तेजी से बढ़ रहा है। इस महत्वपूर्ण कार्य में मध्यप्रदेश नित नए कीर्तिमान रच रहा है। यह बात उन्होंने श्योपुर जिले के कूनो नेशनल पार्क में 2 मादा चीतों को खुले जंगल में विमुक्त करते हुए कही।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कूनो नदी के किनारे स्थित चीता रिलीज साइट पर सीसीवी -2, सीसीवी -3 चीतों को खुले जंगल में छोड़ा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश धर्म, निवेश एवं जैव विविधता के प्रमुख केंद्र के रूप में उभर रहा है। नाइजीरिया, दक्षिण अफ्रीका और अब बोत्सवाना से लाए गए चीतों के पुनर्स्थापन को निरंतर सफलता मिल रही हैं और आज प्रदेश ने देशभर में चीता स्टेट के रूप में पहचान बनाई है। वर्तमान में चीतों की संख्या 57 है, जिनमें से 54 कूनो नेशनल पार्क में और 03 गांधी सागर अभ्यारण्य में है।

इस अवसर पर नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री राकेश शुक्ला, मध्यप्रदेश वन विकास निगम के अध्यक्ष श्री रामनिवास रावत, सहरिया विकास प्राधिकरण की अध्यक्ष श्रीमती गुड्डी बाई आदिवासी, श्री शशांक भूषण, श्री राघवेन्द्र जाट, श्री सुमित सिंघल, श्री शुभम मुदगल, श्री बाबू सिंह यादव, श्री कौशल गोयल आदि जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

पीसीसीएफ श्रीमती समिता राजौरा, डीआईजी श्री संजय कुमार जैन, कलेक्टर सुश्री शीला दाहिमा, पुलिस अधीक्षक श्री सुधीर कुमार अग्रवाल, डीएफओ कुनो श्री आर थिरूकुराल, सामान्य श्री केएस रंधा, सीईओ जिला पंचायत श्रीमती सौम्या आनंद, एडीएम श्री रूपेश उपाध्याय, एडिशनल एसपी श्री प्रवीण भूरिया सहित अन्य अधिकारी भी कार्यक्रम स्थल पर उपस्थित थे।

# ट्रम्प ने जंग रोकने के लिए ईरान का प्रस्ताव ठुकराया

● **मुझे पसंद नहीं आया, अमेरिका ने एनरिच्ड यूरेनियम सौंपने की शर्त रखी**

**तेहरान/वॉशिंगटन (एजेंसी)।** अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने ईरान के नए शांति प्रस्ताव को खारिज कर दिया है। ट्रम्प ने ट्रूथ सोशल पर लिखा, मैंने ईरान के प्रतिनिधियों का जवाब पढ़ा। मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं आया। इसे स्वीकार नहीं किया सकता। इससे पहले भी ट्रम्प ने ईरान पर खेल खेलने का आरोप लगाया था। ईरानी सरकारी मीडिया के मुताबिक, तेहरान ने रविवार को पाकिस्तान के जरिए अमेरिका को अपना नया प्रस्ताव भेजा। रिपोर्ट के मुताबिक, प्रस्ताव में युद्ध खत्म करने, फारस की खाड़ी और होर्मुज स्ट्रेट में समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करने, प्रतिबंध हटाने और परमाणु कार्यक्रम पर बातचीत की बात कही गई थी। अमेरिका ने इस हफ्ते ईरान को 14 सूत्रीय प्रस्ताव भेजा था। इसके तहत ईरान को कम से कम 12 साल तक यूरेनियम संवर्धन रोकना होगा और अपने पास मौजूद करीब 440 किलो एनरिच्ड यूरेनियम अमेरिका को सौंपना होगा। इसके बदले अमेरिका प्रतिबंधों में ढील देगा, ईरान की फ्रीज की गईं अरबों डॉलर की संपत्तियां छोड़ेगा, साथ ही ईरानी बंदरगाहों पर लगी नौसैनिक नाकेबंदी हटाएगा। रिपोर्ट्स के मुताबिक ईरान अपने परमाणु कार्यक्रम और हाईली एनरिच्ड यूरेनियम पर पूरी तरह समझौता करने को तैयार नहीं है।

# 45 दिनों में बीएसएफ को जमीन, आयुष्मान भारत लागू

**बंगाल का सीएम बनते ही सुवेंदु अधिकारी ने लिए 6 बड़े फैसले**

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** पश्चिम बंगाल के सीएम सुवेंदु अधिकारी की अध्यक्षता में सोमवार को सभी संबंधित अधिकारियों के साथ पहली कैबिनेट बैठक आयोजित की गई। बैठक के बाद सीएम सुवेंदु ने कि अधिकारियों के साथ उनकी बातचीत अच्छी रही। उन्होंने आगे कहा, हम बंगाल की जनता को भरोसा दिलाते हैं कि डबल-इंजन की सरकार में विकास से जुड़े सभी काम पूरे किए जाएंगे। इसको लेकर हमारी पहली कैबिनेट बैठक में छह फैसले लिए गए। इसके साथ ही मुख्यमंत्री सुवेंदु ने सभी मतदाताओं, चुनाव आयोग (ईसीआई), केंद्रीय बलों, पुलिस, पर्यवेक्षकों और सभी राजनीतिक दलों के प्रति आभार व्यक्त किया। वहीं, कैबिनेट बैठक में लिए गए सभी छह फैसलों को लेकर उन्होंने कहा, हमारे संघर्ष के दौरान जिन 321 लोगों की जान चली गई, उनके संबंध में अगर उनके परिवार चाहें, तो सरकार इसकी जांच शुरू करेगी। इसके साथ ही उन्होंने बताया कि सीमा सुरक्षा के उद्देश्य से सीमावर्ती क्षेत्रों में बीएसएफ को जमीन हस्तांतरित करने की प्रक्रिया शुरू हो रही है। हमारा लक्ष्य इस हस्तांतरण प्रक्रिया को 45 दिनों के भीतर पूरा करना है। बंगाल में आयुष्मान भारत योजना भी शुरू की जाएगी।

## सरकारी नौकरी के लिए 5 साल बढ़ाई गई उम्र सीमा

जन आरोग्य योजना और प्रधानमंत्री की अन्य योजनाएं भी आने वाले दिनों में राज्य में लागू की जाएंगी। इसके साथ ही सरकारी नौकरी के लिए उम्र सीमा पांच साल बढ़ाई गई है। इसके अलावा कैबिनेट ने मुख्य सचिव को राष्ट्रीय और राज्य कैडर के अधिकारियों के लिए केंद्र सरकार के प्रशिक्षण को शुरू करने के लिए कदम उठाने का अधिकार दिया है।

## इन 6 फैसलों पर लगी मुहर

अत्याचार पीड़ितों के लिए सुरक्षा : जिन परिवारों पर अत्याचार हुए हैं, उन्हें सामाजिक सुरक्षा देने और उनकी पूरी जिम्मेदारी लेने का फैसला लिया गया। आयुष्मान भारत योजना : आयुष्मान भारत योजना को अब बंगाल में लागू किया जाएगा। बीएसएफ को बाड़ के लिए जमीन : सीमा सुरक्षा बल को तारबंदी (बाड़) के लिए 45 दिनों के अंदर जमीन देने का फैसला लिया गया। भारतीय न्याय संहिता : राज्य में भारतीय न्याय संहिता को लागू करने पर मंजूरी। विस्थापितों को अधिकार : शरणार्थियों और विस्थापितों को भूमि अधिकार देने पर निर्णय लिया गया।

## शरद की सुबह

जब मैं धूप को चुनती हूं
तो चुन लेती हूं
ढेर सारी असुविधाएं,
वातानुकूलन के विरुद्ध
खड़े पांव चुन लेती हूं,
बीजों को कोख देने का
दुस्साध्य जतन।

लेकिन,
चुनती धूप को ही हूं
क्योंकि धूप को चुनना
माने सड़न के विरुद्ध
कई हथियार चुन लेना....

क्योंकि धूप को चुनना
माने बरसने की,
उगने की,
हरियाने की
छा जाने की,
फलने की,
फूलने की
सभी संभावनाओं को चुन लेना.....।

– डॉ. ममता खेड़े

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c | न्यूनतम 18°c

# सुबह सवेरे

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

इंदौर ■ मंगलवार, 12 मई 2026

संक्षिप्त समाचार

## उमर अब्दुल्ला ने अमित शाह से की मुलाकात

● जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा बहाल करने के मुद्दे पर हुई बात

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला सोमवार को नई दिल्ली में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह से मुलाकात की। उमर अब्दुल्ला से जब उनसे पूछा गया कि क्या वह केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के साथ बैठक में जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल करने का मुद्दा उठाएंगे, तो उन्होंने कहा कि वह जम्मू कश्मीर से जुड़े सभी मुद्दों पर बातचीत करेंगे। उन्होंने कहा, काश गृह मंत्री से एक ही मुलाकात में राज्य का दर्जा बहाल हो जाता। अगर ऐसा होता तो हमें बहुत पहले ही यह मिल गया होता। लेकिन

हां, मैं बैठक में राज्य का दर्जा बहाल करने सहित अन्य मुद्दे जरूर उठाऊंगा। मुख्यमंत्री ने जम्मू कश्मीर में शराब पर प्रतिबंध लगाने की मांग संबंधी विवादास्पद बयान पर भी स्पष्टीकरण दिया। उन्होंने कहा, शराब बेचने वाली ये दुकानें उन लोगों के लिए हैं, जिनके लिए इसके सेवन को लेकर कोई धार्मिक बाधाएं नहीं है। हमारी धार्मिक मान्यताएं इसकी अनुमति नहीं देतीं। समस्या यह है कि विपक्ष मेरे बयानों को तोड़-मरोड़ कर भ्रम पैदा करने की कोशिश कर रहा है। दरअसल गांदरबल में पत्रकारों से बातचीत में अब्दुल्ला ने कहा था कि जो लोग शराब पीते हैं वे अपनी मर्जी से ऐसा करते हैं, कोई उन्हें दुकानों तक नहीं ले जाता है।

## यूपी में ब्राह्मण समाज सबसे ज्यादा असुरक्षित

● मायावती बोलीं-सरकार कानून-व्यवस्था सुधारे

**लखनऊ (एजेंसी)।** बसपा सुप्रीमो मायावती ने यूपी मंत्रिमंडल पर कहा कि मंत्रियों की संख्या घटना-बढ़ाना सत्ताधारी पार्टी का आंतरिक मामला है। इसकी आलोचना उचित नहीं, लेकिन सरकार को इसका सकारात्मक असर आमजन, खासकर गरीबों, मजदूरों, किसानों, युवाओं और महिलाओं की सुरक्षा पर दिखाना चाहिए। नहीं तो, इसको राजनीतिक जुगाड़ और सरकारी संसाधन पर बढ़ा हुआ

बोझ ही माना जाएगा। बसपा प्रमुख मायावती ने हाल ही में राजधानी लखनऊ में भाजपा के युवा ब्राह्मण नेता पर हुए जानलेवा हमले का जिक्र करते हुए कानून-व्यवस्था पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि इस घटना से एक बार फिर चर्चा शुरू हो गई है कि यूपी में ब्राह्मण समाज उपेक्षित ही नहीं, बल्कि काफी असुरक्षित भी है। मायावती ने जोर देकर कहा कि बीएसपी की सरकारों में समाज के हर वर्ग को न्याय और सुरक्षा मिली। ब्राह्मण समाज सहित सभी तबकों को सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय के सिद्धांत के तहत संरक्षण दिया गया। जान-माल और मजहब की सुरक्षा के साथ बेहतरीन कानून-व्यवस्था हमारी पहचान रही।

**सरकार संवैधानिक जिम्मेदारी निभाएं-** मायावती ने आगे कहा कि समाज के कमजोर तबकों सहित हर वर्ग को जान, माल व मजहब की सुरक्षा और न्याय महसूस होना चाहिए। यह सरकार और मंत्रियों की पहली संवैधानिक जिम्मेदारी है। अगर यह परिलक्षित नहीं होगा तो जनता सरकार के कार्यकलापों पर सवाल उठाएगी। बसपा सुप्रीमो का यह बयान ऐसे समय में आया है जब योगी आदित्यनाथ सरकार ने रविवर को ही मंत्रिमंडल का विस्तार किया है। यूपी सरकार में अब मंत्रियों की संख्या बढ़कर 60 हो चुकी है। योगी सरकार में दो कैबिनेट और 4 राज्य मंत्रियों ने शपथ ली है।

# होर्मुज में भारतीय की मौत के बाद ऐक्शन में सरकार

● अब ब्रिक्स के मंच पर ईरान से होगी भारत की बातचीत

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** स्ट्रेट ऑफ होर्मुज में जारी तनाव और हाल ही में यहां गुजरात की एक नाव डूबने से एक भारतीय की मौत के बाद भारत सरकार ऐक्शन में आ गई है। भारत इस सप्ताह नई दिल्ली में होने वाली ब्रिक्स के शेरपा और विदेश मंत्रियों की बैठक के दौरान इस मुद्दे को उठाएगा और ईरान से इस पर बातचीत करेगा। रिपोर्ट्स के मुताबिक दोनों देशों के बीच अहम बैठक होगी जहां भारत अपने फंसे हुए जहाजों को निकालने और सुरक्षित रास्ता सुनिश्चित कराने के लिए ईरान से बातचीत करेगा। बता दें कि दुनिया के सबसे प्रमुख जलमार्गों से से एक होर्मुज में बीते मार्च महीने से ही तनाव जारी है। अमेरिका और ईरान दोनों ने ही इस रास्ते पर प्रतिबंध लगा दिए हैं जिससे जहाजों की आवाजाही ठप हो गई है। भारत के लिए यह रास्ता बेहद अहम है क्योंकि युद्ध शुरू होने से पहले भारत के कच्चे तेल आयात का 40 फीसदी और एलपीजी आयात का 90 फीसदी हिस्सा यही से गुजरता था। स्ट्रेट ऑफ होर्मुज में तनाव बढ़ने के बाद से भारत के 11 जहाज ही यहां से बाहर निकल पाए हैं, जबकि 13 जहाज अभी भी फारस की खाड़ी में फंसे हुए हैं। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल के मुताबिक इस मसले पर चर्चा जारी है।

### भारतीय की मौत से बढ़ी टेंशन

इस बीच एक भारतीय की मौत से चिंताएं बढ़ गई हैं। शुक्रवार को स्ट्रेट ऑफ होर्मुज के पास आग लगने से एक लकड़ी की नाव पलट गई, जिसमें एक भारतीय नाविक की मौत हो गई। इसमें 18 भारतीय सवार थे। रिपोर्ट्स के मुताबिक मरने वाला नाविक गुजरात का निवासी था और नाव का नाम अल फैज नूरे सुलेमानी 1 था। यह नाव सात मई को दुबई से रवाना हुई थी और यमन के मुक्कम जा रही थी। 8 मई को लगभग एक बजे इस रास्ते को पार करते समय इस पर गोलीबारी हुई और यह हादसा हो गया। जानकारी के मुताबिक यह अहम बैठक 14-15 मई को होगी। समूह के विदेश मंत्रियों की इस बैठक में ईरान के डिप्टी विदेश मंत्री हिस्सा ले सकते हैं। इससे पहले ईरानी विदेश मंत्री अब्बास अराघची के भी बैठक में हिस्सा लेने की चर्चा थी, हालांकि तनाव बढ़ने के बाद इसकी संभावना कम है। ईरान के अलावा रूस, ब्राजील सहित अन्य सदस्य देशों के प्रतिनिधि भी हिस्सा लेंगे।

# समुद्र के रास्ते भारत लौटने का अब खुलेगा नया रास्ता

### पीएम मोदी की यूएई के साथ होगी ऐतिहासिक डील

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** मध्य पूर्व में जारी संकट के बीच भारतीय नागरिकों को वहां से सुरक्षित बाहर निकालने का एक नया रास्ता तैयार किया जा रहा है। इसको लेकर भारत और यूएई एक ऐसे समझौते पर काम कर रहे हैं, जिससे फुजैरा बंदरगाह के रास्ते लाखों भारतीय कामगारों को निकालने में मदद मिलेगी। यह समझौता दोनों देशों के बीच पहले से ही मजबूत द्विपक्षीय संबंधों में एक और अहम कड़ी साबित होगा। जानकारी के अनुसार, पीएम मोदी 15 मई को यूरोप के लिए रवाना होंगे। इस यात्रा के दौरान वे फुजैरा में रुकेंगे और फिर नीदरलैंड्स जाएंगे। यात्रा के पहले चरण में वह फुजैरा पोर्ट पर यूएई के साथ इस समझौते पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। पश्चिम एशिया में जारी संकट के बीच यह दोनों देशों के लिए ऐसा पहला समझौता होगा। इसकी वजह यह है कि फुजैरा होर्मुज जलडमरूमध्य के पश्चिम में स्थित है, जो इस युद्ध के दौरान एक मुख्य चोक- प्वाइंट (अवरोधक बिंदु) के रूप में उभरा है। सरकारी अनुमानों के अनुसार, यदि हवाई यातायात में किसी तरह की बाधा आती है, तो, यूएई में काम करने वाले लाखों भारतीयों को जहाजों के जरिए सुरक्षित निकाला जा सकता है। पश्चिम एशिया में लगभग एक करोड़ भारतीय कामगार रहते हैं, जिनमें से लगभग 43 लाख कामगार अकेले यूएई में मौजूद हैं। मौजूदा संघर्ष के दौरान, फुजैरा जिसे आर्थिक गलियारे का संभावित शुरुआती बिंदु माना जा रहा था।

### एशियाई प्रीमियम शुल्क को लेकर मिलेगा भारत को लाभ

इसके साथ ही सामान की ढुलाई के लिए खोर फक्कन नामक एक अन्य बंदरगाह का भी इस्तेमाल किया जा रहा है। यहां से सामान को सड़क मार्ग के जरिए आगे भेजा जाता है। ईरान ने ठीक इसी वजह से फुजैरा को अपना निशाना बनाया है। पीएम की यह यात्रा यूएई के प्रति भारत के समर्थन का संकेत है, क्योंकि यूएई पर लगातार ईरान की ओर से हमले हो रहे हैं। इसके अलावा यह यात्रा ऐसे समय में हो रही है, जब यूएई ने ओपेक नामक शक्तिशाली तेल-कार्टेल से खुद को अलग कर लिया है। माना जा रहा है कि सऊदी अरब के साथ कुछ मतभेदों के चलते यूएई ने यह कदम उठाया है। पिछले कुछ सालों में भारत और यूएई के बीच प्रगाढ़ होते संबंधों को देखते हुए भारत को काफी फायदा पहुंच सकता है।

## राजस्थान में खुलेगा प्रदेश का पहला 'गोट' बैंक

● दुर्लभ बिल्ली ने बकरी मारी तो अब सरकार देगी बकरी

● शिकार के शक में लोगों ने जलाकर मार दी थी कैरेकल

**जैसलमेर (एजेंसी)।** राजस्थान के जैसलमेर में दुर्लभ वन्यजीव कैरेकल कैट (सियागोश) को बचाने के लिए वन विभाग प्रदेश का पहला गोट बैंक (बकरी बैंक) शुरू करने जा रहा है। यह कदम मार्च 2026 में हुई उस दिल दहला देने वाली घटना के बाद उठाया गया है, जिसमें ग्रामीणों ने अपनी 50 बकरियों के शिकार के शक में एक दुर्लभ कैरेकल को जिंदा जला दिया था। वाइल्डलाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया के साथ मिलकर तैयार इस प्रोजेक्ट का मकसद रिवेंज

किलिंग (बदले की हत्या) को रोकना है। अब अगर कैरेकल किसी की बकरी का शिकार करेगा, तो विभाग मुआवजे की कागजी कार्रवाई के बजाय सीधे बकरी बैंक से नई बकरी पशुपालक को सौंप देगा।

**50 बकरियों के बदले जला दी कैरेकल-** मार्च 2026 में जैसलमेर के सरहदी इलाके में एक जला हुआ कैरेकल मिला था। ग्रामीणों ने वीडियो भी वायरल किया था पूछताछ में सामने आया कि कैरेकल ने ग्रामीणों की करीब 50 बकरियां मार दी थीं। गुस्से में ग्रामीणों ने पैरों के निशान का पीछा किया और कैरेकल को घेरकर मार डाला। भारत में अब महज 50 कैरेकल बचे हैं, जिनमें से जैसलमेर में सिर्फ 4 के कुनबे की पुष्टि हुई है। जैसलमेर के डीएफओ शुभम कुमार कहते हैं- हमारा टारगेट इंसानों और कैरेकल के बीच के संघर्ष को कम से कम करना है। सरहदी इलाकों में इनकी मौजूदगी हमारे इकोसिस्टम के लिए गर्व की बात है। हम चाहते हैं कि ग्रामीण इन्हें दुश्मन न समझें। कैरेकल एक शर्मीला लेकिन बेहद फुर्तीला शिकारी है।

मध्यप्रदेश विधानसभा की सरकारी उपक्रमों संबंधी समिति की प्रथम परिचयात्मक बैठक समिति की सभापति अर्चना चिटनिस के सभापतित्व में आज विधानसभा भवन परिसर में आयोजित की गई। बैठक में समिति के सम्माननीय सदस्यों, श्री अशोक ईश्वरदास रोहाणी, श्रीमती गायत्रीराजे पवार, श्री सुशील कुमार तिवारी, श्री फूलसिंह बरैया, श्री नितेन्द्र बृजेन्द्र सिंह राठौर एवं श्री केशव देसाई ने सहभागिता की। माननीय सभापति द्वारा समिति की भूमिका, दायित्व एवं कार्यप्रणाली पर प्रकाश डाला गया। साथ ही विधानसभा सचिवालय द्वारा माननीय सदस्यों को समिति की कार्यप्रणाली एवं सरकारी उपक्रमों की समीक्षा संबंधी प्रक्रियाओं की जानकारी दी गई। इस अवसर पर प्रधान महालेखाकार श्री श्रीरामहित भी उपस्थित रहे

## स्वतंत्रता के बाद आरएसएस को मीडिया ने भ्रामक रूप में प्रस्तुत किया : प्रखर श्रीवास्तव

**भोपाल।** विश्व संवाद केंद्र, मध्यप्रदेश द्वारा देवर्षि नारद जयंती के अवसर पर देवी अहिल्या सभागृह में 'देवर्षि नारद सार्थक जीवन सम्मान एवं उत्कृष्ट पत्रकारिता पुरस्कार' समारोह एवं 'संघ के 100 वर्षों की यात्रा एवं मीडिया' विषय पर विशेष परिचर्चा का आयोजन किया गया।

मुख्य वक्ता प्रखर श्रीवास्तव ने 'संघ के 100 वर्षों की यात्रा एवं मीडिया' विषय पर अपने विस्तृत वक्तव्य में कहा कि स्वतंत्रता के बाद यदि किसी संगठन को मीडिया ने सबसे अधिक गलत तरीके से प्रस्तुत किया, तो वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है। उन्होंने कहा कि गांधी हत्या प्रकरण के दौरान संघ को लेकर जिस प्रकार का मीडिया ट्रायल हुआ, उसकी पृष्ठभूमि को समझने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के पत्रों और उस समय के सरकारी दृष्टिकोण को पढ़ना आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर पर कबायलियों के आक्रमण के समय संघ के स्वयंसेवकों ने जिस प्रकार मोर्चा संभाला, वह इतिहास का महत्वपूर्ण भाग है। इतिहास में यह तो बताया जाता है कि सरदार पटेल ने संघ पर प्रतिबंध लगाया था, लेकिन यह तथ्य बहुत कम सामने लाया जाता है कि उसी दौर में कम्युनिस्ट पार्टी पर भी प्रतिबंध लगाया गया था। उन्होंने कहा कि संघ के स्वयंसेवक बाद में न्यायालय में निर्दोष पाए गए, जबकि उस समय कम्युनिस्ट गतिविधियों को लेकर गंभीर राष्ट्रीय चिंताएँ थीं।

मुख्य अतिथि अशोक पांडेय ने कहा कि आज भी सत्य बोलने वालों को प्रताड़ना का सामना करना पड़ता है, जबकि देवर्षि नारद सत्य, संवाद और लोककल्याण के प्रतीक रहे हैं। उन्होंने प्रखर श्रीवास्तव की पुस्तक 'हे राम' का उल्लेख करते हुए कहा कि उसमें कई ऐसे प्रसंग हैं जो समाज को इतिहास और राष्ट्रचिंतन की नई दृष्टि प्रदान करते हैं। प्रथम चयन समिति में वरिष्ठ पत्रकार नितेंद्र शर्मा, सतीश एलिया, एवं प्रीति जैन रहे। मुख्य चयन समिति में शरद द्विवेदी, प्रमोद भारद्वाज, धनंजय प्रताप सिंह, अक्षत शर्मा, एवं प्रवीण दुबे रहे। नारद सम्मान समिति में गिरीश उपाध्याय, नुसरत मेंहदी, जयराम शुक्ल, रमेश शर्मा, शिवकुमार विवेक, प्रकाश भटनागर सहित अन्य वरिष्ठ पत्रकार एवं मीडिया क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञ शामिल थे।

**देवर्षि नारद सार्थक जीवन पत्रकारिता सम्मान-** कार्यक्रम में 'देवर्षि नारद सार्थक जीवन पत्रकारिता सम्मान' वर्ष 2025 महेश श्रीवास्तव तथा वर्ष 2026 कैलाश नारायण गौड़ को प्रदान किया गया।

इसी प्रकार 'देवर्षि नारद उत्कृष्ट पत्रकारिता सम्मान 2025' से प्रमोद शर्मा, योगीराज योगेश, भावना अपराजिता शुक्ला, स्मिता, अनुज मैना तथा गोविंद सक्सेना को सम्मानित किया गया। वहीं 'देवर्षि नारद उत्कृष्ट पत्रकारिता सम्मान 2026' से अम्बुज माहेश्वरी, प्रवीण सावरकर तथा बृजेश जैन को सम्मान प्रदान किया गया।

## प्रदेश में स्थापित होगा डीप टेक रिसर्च एवं डिस्कवरी सेन्टर: डॉ.विवेक कटारे

**'भोपाल।** प्रदेश में डीप टेक रिसर्च एवं डिस्कवरी सेन्टर'' की स्थापना की जायेगी, जो कि विभिन्न प्रकार की तकनीकियों को डेव्हल्प करने में सहायता प्रदान करेगा। यह सेन्टर विभिन्न क्षेत्रों के लिये आवश्यक प्रौद्योगिकी को चिन्हित करके उनके विकास में सहयोगी होगा।'' यह कहना है मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् (मेपकास्ट), भोपाल के कार्यकारी संचालक डॉ. विवेक कटारे का। डॉ. कटारे राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर मेपकास्ट में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि हर क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जा रहा है। ग्रासरूट इनोवेशन को बढ़ाने के लिए सरकार, वैज्ञानिक संस्थानों, उद्योगों और स्थानीय समुदायों को मिलकर कार्य करना आवश्यक है। विशेष रूप से खनन, पर्यावरण संरक्षण और कम लागत वाली तकनीकों के क्षेत्र में ग्रासरूट टेक्नोलॉजी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। अपने अध्यक्षीय उदबोधन में डॉ. विवेक कटारे, ने प्रौद्योगिकी दिवस की उपयोगिता के बारे में विस्तार से बताया तथा परिषद की विभिन्न गतिविधियों के बारे में संक्षेप में जानकारी प्रदान की। मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद्, भोपाल द्वारा यह कार्यक्रम राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के अवसर पर परिषद सभागार में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में भोपाल शहर के विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं इंजीनियरिंग विषयों से संबंधित 27 शिक्षण संस्थानों के लगभग 300 विद्यार्थी एवं शिक्षकगण उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुए। शुरूआत में डॉ. विकास शेन्डे, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी लोकव्यापीकरण ने कार्यक्रम परिचय एवं स्वागत उदबोधन प्रस्तुत किया एवं पूरे कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। डॉ. राजीव अग्रवाल, उद्योगपति, लाइफ कोच, मेंटर एवं मोटिवेशनल गुरु ने विद्यार्थियों को नवाचार, नेतृत्व एवं व्यक्तित्व विकास के विषय में मार्गदर्शन प्रदान किया। डॉ. अग्रवाल ने अपने व्याख्यान में भारत की वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए 'हंसा-3' एवं 'त्रिशूल' जैसी महत्वपूर्ण स्वदेशी तकनीकों के बारे में जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि 'हंसा-3' भारत में विकसित एक स्वदेशी प्रशिक्षण विमान है, जो देश की विमानन तकनीकी क्षमता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

## केरलम सीएम का ऐलान जल्द वेणुगोपाल राहुल की पसंद

● कांग्रेस नेता बोले-हमारे यहां मोदी-शाह सारे फैसले लें, ऐसा सिस्टम नहीं

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** कांग्रेस सांसद राहुल गांधी की केरलम सीएम के लिए पहली पसंद केसी वेणुगोपाल हैं। सूत्रों के मुताबिक, राहुल ने दिल्ली में वेणुगोपाल से अकले में मुलाकात की। ऐसे में पार्टी जल्द ही सीएम चेहरे का ऐलान कर सकती है। वेणुगोपाल फिलहाल

अलाप्पुझा लोकसभा सीट से सांसद हैं। केरलम के अगले सीएम के चुनाव को लेकर चल रही चर्चाओं के बीच कांग्रेस के सीनियर लीडर रमेश चेन्निथला ने भाजपा पर निशाना साधा। चेन्निथला ने कहा- कांग्रेस पार्टी में सीएम का चुनाव लोकतांत्रिक तरीके से होता है। हमारे यहां मोदी-शाह सारे फैसले लें, ऐसा सिस्टम नहीं है। केरलम में चुनावी नतीजे आए 6 दिन हो गए हैं।

## अब देश चलाना मोदी के बस की बात नहीं

● पीएम मोदी की 'सात अपीलों' पर राहुल गांधी ने किया पलटवार

### कहा-सोना न खरीदें, विदेश न जाएं जैसी अपीलें उपदेश नहीं, नाकामी हैं

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** राहुल गांधी ने सोमवार को पश्चिम एशिया में चल रहे संकट से निपटने के लिए पीएम नरेंद्र मोदी की हालिया सात अपीलों पर पलटवार किया। उन्होंने इसे नाकामी करार दिया। कहा कि अब देश चलाना प्रधानमंत्री के बस में नहीं रह गया है। एक्स पर एक पोस्ट में राहुल ने लिखा, कल मोदी जी ने जनता से त्याग मांगा। सोना मत खरीदो, विदेश मत जाओ, पेट्रोल कम इस्तेमाल करो, खाद और खाने के तेल का उपयोग घटाओ, मेट्रो से चलो, घर से काम करो। ये उपदेश नहीं हैं। ये विफलता हैं। उन्होंने कहा, 12 साल में देश को इस मुकाम पर ला दिया है कि जनता को बताना पड़ रहा है। क्या खरीदें, क्या नहीं। कहां जाए, कहां नहीं।' दरअसल, रविवार को सिकंदराबाद में एक जनसभा में पीएम मोदी ने आयात पर निर्भरता कम करने की जरूरत पर जोर दिया था, ताकि विदेशी मुद्रा की बचत और पर्यावरण की रक्षा हो सके। पीएम मोदी रविवार को कहा था, आज के समय में पेट्रोल, गैस और डीजल का इस्तेमाल कम करना होगा। पड़ोस में चल रहे युद्ध के असर से दुनिया परेशान है।

### विपक्ष ने कहा, देश में सिर्फ एक संकट 'भाजपा'

समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा, भाजपा सरकार अर्थव्यवस्था और विदेश नीति दोनों को संभालने में विफल रही है। जैसे ही चुनाव खत्म हुए, सरकार को अचानक 'संकट' याद आ गया। असल में देश के लिए केवल एक ही संकट है और उसका नाम भाजपा है। एएपी नेता संजय सिंह ने कहा, 'कल पीएम मोदी ने कहा कि पिछले दो महीनों से सरकार आपका बोझ उठा रही थी।

## जींस पहनने पर सास ने डांटा, बहू ने लगाई फांसी

### ससुराल में पहली बार पहनी थी, परिजन बोले- दहेज को लेकर ताने मारते थे

**इंदौर (नप्र)।** मध्य प्रदेश के इंदौर जिले में सोमवार दोपहर सास ने जींस पहनने पर डांटा तो बहू ने सुसाइड कर लिया। कमरे के अंदर फंदे से लटकी लाश मिली है। मायके पक्ष ने पति और सास पर प्रताड़ना, दहेज के ताने और मानसिक दबाव बनाने के आरोप लगाए हैं।

द्वारकापुरी पुलिस के मुताबिक, मृतक की पहचान गौरी (22) पत्नी राहुल के रूप में हुई है। सोमवार दोपहर घर में मौजूद उनकी छोटी बेटी रो रही थी। इस दौरान पति राहुल ने पत्नी गौरी को आवाज लगाई, लेकिन कमरे से कोई जवाब नहीं मिला। इसके बाद राहुल कमरे में पहुंचा तो गौरी फंदे पर लटकी मिली।

**पहली बार ससुराल में पहनी थी जींस, इसी बात पर हुआ विवाद-** परिवार के लोगों के अनुसार, गौरी ने पहली बार ससुराल में जींस पहनी थी। इसी बात को लेकर उसकी सास शारदा नाराज हो गईं। गौरी की बहन पूजा ने बताया कि उनकी चचेरी बहन किरण भी उस समय घर पर मौजूद थी, जो पिछले एक महीने से गौरी के साथ रह रही थी।

## गैस टंकी में लगी आग से एक झुलसा

**इंदौर।** लसूड़िया थाना क्षेत्र स्थित एमआर-3 रोड पर रविवार सुबह गैस टंकी में आग लगने से इलाके में हड़कंप मच गया। रहवासी क्षेत्र के बीच हुई इस घटना से लोगों में दहशत फैल गई। आसपास गैस लाइन मौजूद होने के कारण लोगों को बड़े विस्फोट और गंभीर हादसे की आशंका सताने लगी। सूचना मिलते ही प्रभात गश्त पर मौजूद पुलिस टीम तत्काल मौके पर पहुंची और सूझबूझ से आग पर काबू पाकर बड़ा हादसा टाल दिया। जानकारी के मुताबिक, सनसिटी के पास एक खाली प्लॉट में गुमटी के नजदीक रखी गैस टंकी में अचानक आग लग गई थी। घटना में वहां मौजूद भगवान सिंह (50) निवासी सरस्वती नगर मामूली रूप से झुलस गए। उन्हें तत्काल उपचार के लिए अस्पताल भेजा गया।

## एमडी ड्रग्स के साथ 2 तस्कर गिरफ्तार

**इंदौर।** शहर में अवैध मादक पदार्थों के कारोबार के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत क्राइम ब्रांच इंदौर को बड़ी सफलता मिली है। टीम ने कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से 20.78 ग्राम एमडी ड्रग्स जब्त की है। बरामद ड्रग्स की अंतरराष्ट्रीय कीमत करीब 2.10 लाख रुपए आंकी गई है। पुलिस को सूचना मिली थी कि गुटकेश्वर महादेव मंदिर स्थित वीआईपी रोड के पास एक संदिग्ध युवक हुंडई कार में बैठा हुआ है। सूचना के आधार पर क्राइम ब्रांच ने घेराबंदी कर युवक को पकड़ा। पूछताछ में उसने अपना नाम अकरम खान बताया। तलाशी लेने पर कार के हैंडब्रेक के पास छिपाकर रखी गई एमडी ड्रग्स बरामद हुई। आरोपी से पूछताछ के बाद पुलिस ने उसकी निशानदेही पर जावेद उर्फ जग्गू कुरैशी को भी गिरफ्तार कर लिया। कुल करीब 4.50 लाख रुपए का माल जब्त किया है।

**खंभे में आग से अफरा-तफरी-** इंदौर। सुदामा नगर में एक बिजली खंभे में अचानक आग लग गई, जिससे इलाके में अफरा-तफरी मच गई। खंभे से उठती ऊंची लपटों को देखकर आसपास के रहवासी दहशत में आ गए। हालांकि समय रहते आग पर काबू पा लिया गया, जिससे बड़ा हादसा टल गया।

## सोनम की जमानत के खिलाफ प्रदर्शन

**इंदौर।** चर्चित राजा रघुवंशी हत्याकांड में मुख्य आरोपी सोनम रघुवंशी को मिली जमानत के विरोध में अब जन आक्रोश बढ़ता जा रहा है। न्याय की मांग को लेकर रविवार शाम रीगल चौराहे पर बड़ी संख्या में लोगों ने कैंडल मार्च निकाला। प्रदर्शन में परिवार, रघुवंशी समाज और कई सामाजिक संगठनों ने हिस्सा लिया। मार्च में राजा की मां उमा रघुवंशी और भाई विपिन रघुवंशी सबसे आगे नजर आए। लोगों ने 'राजा को न्याय दो' और 'दोषियों को सजा दो' जैसे नारे लगाए। परिजनों का कहना है कि आरोपी को मिली जमानत से उन्हें गहरा आघात पहुंचा है। वहीं पौरुष संस्था ने भी प्रदर्शन में शामिल होकर इसे न्याय व्यवस्था में विश्वास बनाए रखने की लड़ाई बताया। मामले में मेघालय सरकार द्वारा हाई कोर्ट में चुनौती दी गई है। 12 मई को होने वाली सुनवाई पर अब सभी की निगाहें टिकी हैं।

## दो आइसक्रीम फैक्ट्रियों पर छापा

**इंदौर।** खाद्य सुरक्षा प्रशासन ने कलेक्टर शिवम वर्मा के निर्देश पर शहर की दो आइसक्रीम निर्माण इकाइयों पर औचक कार्रवाई की। संयुक्त दल ने कुल 10 खाद्य नमूने जांच के लिए लिए हैं। राजाराम नगर स्थित चैंपियंस आइसक्रीम एंड फ्रोजन फूड के निरीक्षण में वैध लाइसेंस नहीं मिला। साथ ही गंदगी, जंग लगे सांचे और अव्यवस्थित भंडारण जैसी कई अनियमितताएं सामने आईं। यहां से 4 नमूने लिए गए और लाइसेंस मिलने तक निर्माण कार्य बंद कर दिया गया। वहीं छोटा बांगड़दा स्थित रुद्राक्ष आइसक्रीम इकाई में बिना लेबल फ्लेवर और अस्वच्छ परिस्थितियों में निर्माण पाया गया। यहां से 6 नमूने लिए गए और मौके पर ही बिना लेबल सामग्री नष्ट कराई गई। प्रशासन ने साफ कहा है कि खाद्य गुणवत्ता और स्वच्छता से कोई समझौता नहीं होगा।

## नई ड्रेनेज लाइन का भूमिपूजन

**इंदौर।** विधानसभा क्षेत्र क्रमांक-4 के वार्ड-72 स्थित सच्चिदानंद नगर में नई ड्रेनेज लाइन बिछाने के कार्य का भूमिपूजन किया गया। कार्यक्रम में विधायक मालिनी गौड़, मंत्री तुलसी सिलावट और पार्षद योगेश गेंदर विशेष रूप से मौजूद रहे। क्षेत्र में लंबे समय से ड्रेनेज समस्या को देखते हुए यह कार्य स्वीकृत किया गया है। करीब रू. 51.63 लाख की लागत से बनने वाली नई ड्रेनेज लाइन से सच्चिदानंद नगर के रहवासियों को जलभराव और गंदे पानी की समस्या से राहत मिलेगी। जनप्रतिनिधियों ने कहा कि क्षेत्र के विकास और मूलभूत सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए लगातार कार्य किए जा रहे हैं। भूमिपूजन के दौरान स्थानीय रहवासी भी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

# तिलक नगर में गोलियों से दहला इलाका गैंगों की पुरानी दुश्मनी का हिंसक रूप

**जेल से छूटे बदमाश पर हमला करवाने का आरोप, घायल युवक गंभीर**

**इंदौर।** तिलक नगर क्षेत्र में शनिवार शाम हुई गोलीबारी और उसके बाद सड़क पर हुई मारपीट ने पूरे इलाके में दहशत फैला दी। भीड़भाड़ वाले इलाके में अचानक चली गोलियों से लोग घबरा गए और कुछ ही देर में बाजार की कई दुकानों के शटर गिर गए। घटना में घायल अमित जादौन को गंभीर अवस्था में अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जबकि मुख्य आरोपी अमित उर्फ बकरी राजावत और उसका साथी उत्तम वारदात के बाद से फरार बताए जा रहे हैं। पुलिस ने रातभर कई इलाकों में तलाश की, लेकिन दोनों हाथ नहीं आए। पुलिस जांच में सामने आया है कि आरोपी बकरी राजावत तपेश्वरी बाग क्षेत्र का रहने वाला है और हाल ही में जेल से बाहर आया था। उस पर पहले से मारपीट, धमकी, अवैध वसूली और चोरी जैसे कई मामले दर्ज बताए जा रहे हैं। उसका साथी उत्तम एरोड्रम क्षेत्र का निवासी है। पुलिस का मानना है कि दोनों ने पुरानी रंजिश और इलाके में दबदबा कायम रखने की मंशा से इस वारदात को अंजाम दिया।

### गैंग प्रतिद्वंद्विता की कहानी

घटना को लेकर शुरुआती चर्चा वाहन खड़ा करने को लेकर हुए विवाद की थी, लेकिन जांच आगे बढ़ने पर पुलिस को गैंग वर्चस्व की लड़ाई के संकेत मिले हैं। सूत्रों के अनुसार घायल अमित जादौन और उसके कुछ साथी भाऊ गैंग से जुड़े माने जाते हैं, जबकि बकरी राजावत का नाम आकाश बकरी गिरोह से जोड़ा जा रहा है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि दोनों पक्षों के बीच लंबे समय से तनाव बना हुआ था। बीते कुछ महीनों में कई छोटे विवाद हुए थे, लेकिन इस बार मामला सीधे गोलीबारी तक पहुंच गया। जांच एजेंसियां अब यह पता लगाने में जुटी हैं कि हमले की योजना पहले से बनाई गई थी या मौके पर विवाद बढ़ने से स्थिति बेकाबू हुई।

### एरोड्रम और खजराना तक दबिश

वारदात के बाद पुलिस ने आरोपी बकरी राजावत और उसके साथी उत्तम की तलाश में एरोड्रम, खजराना और आसपास के कई इलाकों में छापेमारी की। दोनों के घरों पर भी पुलिस पहुंची, लेकिन परिवार के लोगों ने बताया कि घटना के बाद से वे घर नहीं लौटे हैं। पुलिस को संदेह है कि आरोपी शहर छोड़ चुके हैं। जांच अधिकारियों को कुछ तकनीकी संकेत मिले हैं, जिनके आधार पर दोनों के शहर से बाहर छिपे होने की संभावना जताई जा रही है। अलग-अलग टीमें संभावित ठिकानों पर लगातार तलाश कर रही हैं।

### तैयारी से पहुंचे थे आरोपी

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार शनिवार शाम इलाके में अचानक दोनों पक्ष आमने-सामने आ गए। बताया जा रहा है कि अमित जादौन अपने कुछ परिचित युवकों के साथ वहां पहुंचा था, जबकि आरोपी पक्ष पहले से तैयारी करके आया था। दोनों के बीच पहले तीखी बहस हुई और कुछ ही क्षण बाद गोली चल गई। फायरिंग होते ही इलाके में भगदड़ जैसी स्थिति बन गई। आसपास मौजूद लोगों ने खुद को बचाने के लिए दुकानों और घरों के भीतर शरण ली। कई राहगीर डर के कारण सड़क छोड़कर गलियों की ओर भागते दिखाई दिए। गोली लगने के बाद अमित जादौन के साथ मौजूद युवकों ने आरोपी पक्ष को पकड़ने की कोशिश की। इसी दौरान सड़क पर दोनों गुटों के बीच मारपीट शुरू हो गई। कुछ लोगों ने बीच-बचाव करने का प्रयास भी किया, लेकिन स्थिति तेजी से बिगड़ती चली गई।

### आपराधिक रिकॉर्ड खंगालती पुलिस

पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार घायल अमित जादौन पर भी कई आपराधिक मामले दर्ज हैं। वहीं बकरी राजावत पर लगभग दो दर्जन प्रकरण दर्ज बताए जा रहे हैं। दोनों पक्षों के कई साथी पहले भी विवाद, मारपीट और अवैध गतिविधियों में शामिल रह चुके हैं। अधिकारियों का कहना है कि इस पूरे घटनाक्रम के पीछे केवल व्यक्तिगत दुश्मनी नहीं, बल्कि इलाके में प्रभाव बढ़ाने की लड़ाई भी हो सकती है। पुलिस अब दोनों पक्षों के पुराने विवादों और आपसी संबंधों की जानकारी जुटा रही है।

# इंदौर में फिर बढ़ी गर्मी की मार दिन का पारा 42 डिग्री पार हुआ

**दोपहर की तपिश से लोग प्रभावित, रात में भी राहत नहीं**

**इंदौर।** मई के पहले सप्ताह में मिली हल्की राहत के बाद अब गर्मी ने फिर से असर दिखाना शुरू कर दिया है। पिछले चार दिनों से तापमान लगातार बढ़ रहा है, जिससे शहरवासियों को दिन और रात दोनों समय उमस और तेज गर्मी का सामना करना पड़ रहा है। शनिवार को अधिकतम तापमान 42 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जबकि एक दिन पहले यह 41.2 डिग्री था। दोपहर के समय गर्मी का प्रभाव सबसे ज्यादा दिखाई दिया। खासतौर पर दोपहर 12 बजे से शाम 4 बजे तक सड़कों पर तेज धूप और गर्म हवाओं ने लोगों को परेशान किया। ट्रैफिक सिग्नलों पर रुकने वाले वाहन चालकों को भी तपिश का सामना करना पड़ा। कुछ प्रमुख चौराहों पर लोगों को राहत देने के लिए हरी जालियां लगाई गईं।

### रात में थोड़ी गर्मी कम

रात के तापमान में मामूली गिरावट दर्ज हुई, लेकिन गर्मी का असर कम नहीं हुआ।

शुक्रवार रात तापमान 25.1 डिग्री था, जो शनिवार रात 24.4 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। इसके बावजूद रात में वातावरण गर्म बना रहा। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार प्रदेश में द्रोणिका और चक्रवाती परिसंचरण सक्रिय हैं। इसी कारण मौसम में बदलाव देखा जा रहा है और तापमान में लगातार बढ़ोतरी हो रही है।

**लू चलने की संभावना-** वरिष्ठ मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया कि 10 मई के बाद मौसम पूरी तरह साफ रहने की संभावना है, जिससे गर्मी और बढ़ सकती है। 12 और 13 मई को पश्चिमी मध्य प्रदेश के कई जिलों में लू चलने के संकेत हैं। ऐसे में लोगों को दोपहर के समय सावधानी बरतने और जरूरी होने पर ही घर से बाहर निकलने की सलाह दी गई है।

## तस्कर को होटल में रुकाने के केस में पुलिसकर्मियों पर घिरा शिकंजा

**रोजनामचे में दिल्ली जाना दर्ज, लेकिन लोकेशन कहीं और की**

**इंदौर।** मादक पदार्थ तस्कर को एक आलीशान होटल में बंधक बनाकर रखने के मामले में सहायक पुलिस आयुक्त की जांच रिपोर्ट के बाद पुलिस विभाग में हलचल तेज हो गई है। जांच में सामने आया है कि एक पुलिसकर्मी ने रोजनामचे में दिल्ली जाने की जानकारी दर्ज कराई, जबकि उसके मोबाइल की लोकेशन धार जिले के गुणावद क्षेत्र में मिली।

जांच के दौरान सहायक उप निरीक्षक भूपेंद्र सिंह गुर्जर, मुकेश सिंह जादौन और आरक्षक कपिल व लोकेंद्र ने बयान में कहा कि वे एक ही आरोपी को पकड़ने धार के बड़ौद गए थे। जबकि, रोजनामचे में आरक्षक कपिल ने दिल्ली जाने की जानकारी दर्ज कराई थी। इतना ही नहीं, अलग-अलग तारीखें भी दर्ज पाई गईं। सहायक पुलिस आयुक्त आदित्य पटले की जांच में यह भी सामने आया कि तस्कर वसीम को बड़ौद से इंदौर लाकर थाने में पेश करने के बजाय होटल में रखा गया। बाद में उसे बिना किसी वैधानिक कार्रवाई के छोड़ा गया। जांच रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया कि तस्कर को छोड़ने के बदले आंशिक लाभ लिया जाना प्रमाणित हुआ है।

रिपोर्ट में सहायक उप निरीक्षक अर्जुन सिंह परिहार, प्रधान आरक्षक प्रमोद, आरक्षक लोकेंद्र खींची और पंकज पाटिल के नाम दर्ज किए गए हैं। वहीं थाना प्रभारी पर अपने अधीनस्थ कर्मचारियों पर नियंत्रण नहीं रख पाने की टिप्पणी भी की गई है। पुलिस सूत्रों के अनुसार अब रिपोर्ट की केवल जांच-पड़ताल हो सकती है, उसमें बदलाव संभव नहीं है। ऐसे में विभागीय अधिकारियों पर कार्रवाई को लेकर सवाल उठने लगे हैं। वहीं यह भी चर्चा है कि जांच रिपोर्ट लंबे समय से दफ्तरों में घूम रही है, लेकिन अब तक दोषियों पर कोई सख्त कदम नहीं उठाया गया।

## महिला पुलिसकर्मी से छेड़छाड़

**इंदौर।** महिला सुरक्षा को लेकर विजयनगर पुलिस ने अनोखी कार्रवाई करते हुए स्टिंग ऑपरेशन चलाया। मेघदूत गार्डन के बाहर सिविल ड्रेस में तैनात महिला पुलिसकर्मियों से छेड़छाड़ करने पहुंचे एक युवक को पुलिस ने मौके से गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के मुताबिक क्षेत्र में लगातार ईव टीजिंग, स्टॉकिंग और महिलाओं से अभद्र व्यवहार की शिकायतें मिल रही थीं। इसके बाद विजयनगर पुलिस ने विशेष अभियान के तहत महिला पुलिसकर्मियों को सामान्य युवतियों की तरह इलाके में तैनात किया, जबकि आसपास सादी वर्दी में पुलिस टीम निगरानी करती रही। इसी दौरान सागर निवासी सर्वेश साहू वहां पहुंचा और महिला पुलिसकर्मियों से बातचीत करने लगा। आरोपी ने उनसे निजी सवाल पूछे और खुद को करीब लाने की कोशिश की। युवक की संदिग्ध हरकत देखते ही निगरानी कर रही पुलिस टीम ने तुरंत उसे पकड़ लिया और विजयनगर थाने ले गई। एडिशनल डीसीपी अमरेंद्र सिंह ने बताया कि महिलाओं की सुरक्षा को लेकर शहर के भीड़भाड़ वाले इलाकों में आगे भी इस तरह के अभियान लगातार चलाए जाएंगे, ताकि छेड़छाड़ करने वालों पर सख्त कार्रवाई हो सके।

# नवलखा बस पार्किंग में भीषण आग, पांच बसें जलकर खाक

**रिहायशी इलाके में अफरा-तफरी, दहशत में आए लोग**

**इंदौर।** नवलखा इलाके में सोमवार सुबह उस वक्त हड़कंप मच गया, जब पार्किंग में खड़ी निजी बसों में अचानक भीषण आग लग गई। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप ले लिया और पांच बसें इसकी चपेट में आकर जलकर खाक हो गईं। आग की ऊंची लपटें और धुएं का गुबार कई किलोमीटर दूर तक दिखाई दिया, जिससे इलाके में अफरा-तफरी का माहौल बन गया।

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक पार्किंग में 20 से ज्यादा बसें खड़ी थीं। आग फैलते ही आसपास मौजूद लोगों और कर्मचारियों ने तत्काल अन्य बसों को वहां से हटाना शुरू किया, ताकि बड़ा हादसा टाला जा सके। घटना के दौरान लगातार धमाकों जैसी आवाजें सुनाई देती रहीं, जिससे आसपास की रिहायशी बस्ती में रहने वाले लोग घबरा गए और बड़ी संख्या में मौके पर पहुंच गए। सूचना मिलते ही दमकल की कई गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। फिलहाल आग लगने के

कारणों का पता नहीं चल सका है, हालांकि शॉर्ट सर्किट की आशंका जताई जा रही है।

घटना को लेकर स्थानीय पार्षद ने नाराजगी जताई है। उनका कहना है कि रिहायशी इलाके में निजी बसों की पार्किंग लंबे समय से खतरा बनी हुई है। इस संबंध में कई बार शिकायत भी की जा चुकी है, लेकिन जिम्मेदार विभागों ने कोई कार्रवाई नहीं की।

# निगम कार्यालय में नशेड़ी युवक का हंगामा, डंडे व घूंसों से पीटा

**जोन अध्यक्ष की गाड़ी के सामने लेटा, पुलिस हिरासत में**

**इंदौर।** द्वारकापुरी थाना क्षेत्र में नगर निगम के जोन क्रमांक 14 कार्यालय में शनिवार शाम जमकर हंगामा हुआ। शराब के नशे में धुत एक युवक कार्यालय में घुस गया और वहां उत्पात मचाने लगा। इस दौरान निगम कर्मचारियों ने युवक के साथ मारपीट कर दी। एक कर्मचारी ने उसके सिर पर डंडा मार दिया, जबकि अन्य लोगों ने उसे लात-घूंसों से पीटा। घटना का वीडियो रविवार को सामने आया। पुलिस ने ऋषि पैलेस कॉलोनी निवासी मनोज उर्फ गोलू भोंडवे को हिरासत में लिया है। बताया गया कि वह नशे की हालत में कार्यालय पहुंचा था और काफी देर तक हंगामा करता रहा। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार युवक जोन अध्यक्ष और पार्षद शानू शर्मा की गाड़ी के आगे जाकर लेट गया। उसने निगम की गाड़ी में तोड़फोड़ करने की कोशिश भी की। इस दौरान निगम के मस्टरकर्मी भरत पर भी युवक ने हमला कर दिया। इसके बाद कर्मचारियों ने उसकी पिटाई कर दी। काफी देर बाद पास स्थित थाने से पुलिस मौके पर पहुंची और युवक को पकड़कर अपने साथ ले गई। पुलिस का कहना है कि युवक की मानसिक स्थिति भी ठीक नहीं बताई जा रही है। घटना के समय कई पुलिस और निगम अधिकारी दशहरा मैदान में विशेष ड्यूटी में मौजूद थे।

## दुष्कर्मी रिश्तेदार पुलिस की गिरफ्त में, पीड़िता ने बच्चे को जन्म दिया

**इंदौर।** चंदन नगर क्षेत्र में पुलिस ने एक घिनौने कृत्य के आरोपी को पकड़ने में सफलता प्राप्त की है। पकड़ा गया व्यक्ति युवती का करीबी रिश्तेदार है, जिसने उसकी विवशता का फायदा उठाकर बार-बार अपनी हवस का शिकार बनाया। इस अपराधी को पकड़ने के लिए पूर्व में 5 हजार रुपए का पुरस्कार तय किया गया था। मामले की जड़ें वर्ष 2025 से जुड़ी हैं, जब खरगोन जिले की रहने वाली युवती पारिवारिक अनबन के चलते इंदौर में अपने इसी रिश्तेदार के घर रहने आई थी। जब आरोपी की पत्नी उसे छोड़कर मायके चली गई, तब उसने घर में अकेला पाकर नाबालिग युवती के साथ डरा-धमकाकर गलत काम किया। जान से मारने की धमकी के कारण युवती चुप रही, किंतु निरंतर शोषण के कारण वह गर्भवती हो गई और उसने एक बालक को जन्म दिया। जब यह पूरा मामला परिजनों के सामने आया, तो उन्होंने तुरंत थाने पहुँचकर शिकायत दर्ज करवाई। पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए आरोपी को पकड़ लिया है और उस पर यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण करने वाले अधिनियम सहित विभिन्न कड़ी धाराओं के तहत मामला दर्ज किया है। साक्ष्यों की पुष्टि के लिए पुलिस अब आरोपी का जैविक मिलान (डीएनए) भी करवाएगी।

संपादकीय

# ग्रीन एनर्जी को बढ़ावा जरूरी

देश में आर्थिक विकास की बढ़ती रफ्तार के साथ ऊर्जा की मांग भी लगातार बढ़ती जा रही है, लेकिन पारंपरिक ऊर्जा की अपनी समस्याएं हैं, जिसका हल ग्रीन एनर्जी में खोजा जा रहा है। लेकिन ग्रीन एनर्जी के क्षेत्र में भी अपेक्षित सफलता नहीं मिल पाई है। जानकारों का मानना है कि 2047, जोकि प्रधानमंत्री ने विकसित भारत का लक्ष्य रखा है, में अकेले बिजली की ही मांग बढ़ कर 708 गीगावाट तक पहुंच जाएगी। इसे पूरा करने के लिए देश को अपनी कुल बिजली उत्पादन क्षमता को मौजूदा क्षमता से चार गुना बढ़ाकर 2100 गीगावाट से अधिक करने की आवश्यकता होगी। हालांकि भारत सरकार ने ऊर्जा उत्पादन क्षमता लक्ष्य 2100 गीगा वाट से अधिक का रखा है, जिसमें सौर, पवन और परमाणु ऊर्जा पर जोर रहेगा। इसके अलावा नवकरणीय ऊर्जा का लक्ष्य 1200 मेगा वाट का है। भारत में ऊर्जा की मांग में यह वृद्धि तेजी से बढ़ते शहरीकरण और औद्योगीकरण के कारण है। दरअसल भारत में ऊर्जा की मांग तो पहले से ही बढ़ रही थी। लेकिन पश्चिम एशिया में जारी अमेरिका इजराइल ईरान के बीच छिड़े विनाशकारी युद्ध ने पूरी दुनिया में ऊर्जा आपूर्ति को लेकर उथल-पुथल मचा दी है। अमीर और गरीब दोनों तरह के मुल्क अपने नागरिकों को चेतावनी दे रहे हैं कि मुश्किल समय आने वाला है। ऐसा संकट जो शायद इस पीढ़ी ने तो नहीं झेला यानी ऊर्जा (ईंधन) की भारी कमी और राशनिंग। यहां तक कि कारों और विमानों के भी ईंधन खत्म हो जाने का खतरा मंडरा रहा है। इसे हल्के में नहीं लिया जा सकता। हमे ऊर्जा के वैकल्पिक साधन तलाशने होंगे और ऊर्जा की खपत भी किफायतशारी से करनी होगी। भारत में अभी भी जीवाश्म ईंधन सबसे मुख्य है। हम अपनी जरूरत का 90 फीसदी कच्चा तेल आयात करते हैं। देश में ऊर्जा परिवर्तन के प्रयास हो रहे हैं, लेकिन यह उस पैमाने पर नहीं हो रहा है, जितनी कि आवश्यकता है। हालांकि हमारे यहां सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा के क्षेत्र में अच्छा काम हुआ है, लेकिन अभी काफी कुछ करना बाकी है। हाल ही में थिंक टैंक एम्बर द्वारा 74 सबसे जलवायु-संवेदनशील देशों के गठबंधन के साथ मिलकर जारी की गई एक रिपोर्ट में पाया गया कि ये देश इलेक्ट्रो-टेक को तेजी से अपना रहे हैं, क्योंकि यह तेज, सस्ता और अधिक विश्वसनीय है। पश्चिम एशिया के संकट ने पारंपरिक ऊर्जा आयात की लागत बढ़ा दी है और देशों को ऊर्जा सुरक्षा की आवश्यकता का एहसास कराया है। पहले से ही तेल और गैस के बाजारों पर कब्जा करने की नई होड़ शुरू हो गई है। यह सब ऊर्जा के भविष्य को नया रूप देगा। हमारे सामने बड़ी चुनौती ऊर्जा उत्पादन को बढ़ाने के साथ पर्यावरण को बचाने की भी है। इसलिए ऊर्जा के ऐसे साधनों पर जोर दिया जाए, जिससे पर्यावरण को न्यूनतम नुकसान पहुंचे। एक विकल्प परमाणु ऊर्जा का भी है, लेकिन उसमें गड़बड़ी हुई तो बड़े पैमाने पर विकिरण फैलने का खतरा है। वैसे तो सौर ऊर्जा के कुछ विपरीत प्रभाव भी राजस्थान में देखने में आए हैं। वैकल्पिक ऊर्जा पर विचार करते समय इन सब पहलुओं को भी ध्यान में रखना जरूरी है। यह भी सच है कि केवल पर्यावरण के नाम पर हम विकास की रफ्तार को नहीं रोक सकते। क्योंकि देश की आबादी बढ़ रही है और उसी के साथ लोगों की आकांक्षाएं भी बढ़ रही है। इसके अलावा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रतिस्पर्धा तेज होती जा रही है। आज दुनिया में मुख्य लड़ाई संसाधनों पर कब्जे की ही है और इसमें भी ऊर्जा स्रोत सबसे महत्वपूर्ण है। ऐसे ग्रीन एनर्जी को ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

नजरिया

अरुण कुमार त्रिपाठी

(लेखक गांधीवादी चिंतक हैं)

# कौन-सा विपक्ष, किसका विपक्ष और कैसा विपक्ष?

स्वतंत्र भारत के इतिहास में कई बार विपक्ष की स्थिति कमजोर रही है। वह निष्प्रभावी रहा है और वैचारिक और सांगठनिक विखराव का शिकार रहा है। लेकिन जब भी मौका आया तो उसने अपनी प्रभावी भूमिकाओं का निर्वहन किया। बल्कि स्वयं पंडित जवाहर लाल नेहरू का यह कथन भी आज के संदर्भ में मौजूं है कि अगर विपक्ष नहीं है तो हमें विपक्ष पैदा करना पड़ेगा। इसीलिए वे स्वयं छद्म नामों से भी लेख और संपादकीय लिखा करते थे। ताकि प्रतिपक्ष का शरीर भले अनुपस्थित हो लेकिन उसकी आत्मा तो जिंदा रहे। एक दौर तो ऐसा आया जब कुछ अखबार मालिकों और संपादकों ने तय किया कि अगर संसद में विपक्ष नहीं है तो पत्रकारिता को प्रतिपक्ष की भूमिका निभानी होगी और उन्होंने वह भूमिकाएं निभाईं। आज चिंता की बात यह है कि आपातकाल को छोड़कर सत्तापक्ष और भारतीय राज्य का ऐसा चरित्र कभी नहीं रहा। सत्तापक्ष न तो कभी इतना क्रूर और निर्लज्ज था और न ही राज्य नामक संस्था इतनी प्रतिबद्ध और पक्षपाती। यहां तक कि आपातकाल के बाद भी राज्य का चरित्र ऐसा था कि उस इंदिरा गांधी की चुनावी हार हो गई जिन्होंने सोचा था कि आपातकाल लगाए जाने के बाद जनता उनकी मुट्ठी में आ चुकी है। लोकतंत्र के समक्ष इतनी प्रतिकूल स्थितियां कभी नहीं थीं जितनी आज हैं। क्योंकि तब एक गणित था कि अगर विपक्ष अपने मतों को एकजुट कर ले जाए तो सत्तापक्ष यानी कांग्रेस पार्टी को हटाकर विपक्ष अपनी सरकार बना सकता है। आज वह गणित फेल हो चुका है। अब लोकतंत्र या तो बीजगणित से चल रहा है या कैलकुलस से या फिर कुछ अदृश्य शक्तियां हैं जो बाजार के अदृश्य हाथ की तरह भारत को चला रही हैं।

तुलसीदास ने एक जगह कहा है कि ''उमा दारु जोसित की नाईं। सबहिं नचावत राम गुसाईं।।' यानी जिस प्रकार मदारी बंदर को नचाता है वैसे ही प्रभु सभी को नचाते रहते हैं। वह प्रभु कौन हैं यह कई बार शोध और अनुसंधान का विषय लगता है और कई बार कुछ महाशक्तियों के बयानों और अपने महाप्रभुओं के प्रकट और अप्रकट भावों से पता चल जाता है। इसलिए राजनीति के कई जानकार कहते हैं कि इस देश के सत्तापक्ष और प्रतिपक्ष दोनों को कोई और चला रहा है तो अतिश्योक्ति नहीं लगती। वह संचालन पूंजी के माध्यम से हो रहा है, राजनीतिक एजेंडा के माध्यम से हो रहा है या फिर खुफिया एजेंसियों के माध्यम से हो रहा है यह विवेचन का विषय है। एक बार इस स्तंभकार ने नर्मदा आंदोलन पर मोनोग्राफ लिखते समय लिख दिया था कि विडंबना है कि सरदार सरोवर बांध बनवाने के लिए वही विश्व बैंक आर्थिक सहायता दे रहा है और वही विश्व बैंक आंदोलनकारी एनजीओ को अनुदान भी देता है। यानी बांध समर्थन और विरोध दोनों में एक ही शक्ति का हाथ है।

पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस की हार और तमिलनाडु में एक के स्तालिन की पार्टी द्रमुक की हार और केरल में यूडीएफ की विजय के बाद अगर कहीं सर्वाधिक ऊहापोह और खींचतान की स्थिति है तो वह है इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इनक्लूसिव अलायंस यानी इंडिया में। हालांकि यह कहने और लिखने वाले भी हैं कि देखो किस तरह राहुल गांधी ने ममता की हार से प्रसन्न हो रहे कांग्रेसियों को समझाने की कोशिश की और ममता का समर्थन किया, सोनिया गांधी और राहुल गांधी दोनों ने उन्हें फोन किया और अखिलेश यादव तो मिलने तक गए। और ममता बनर्जी ने भी कहा कि अब तो वे आजाद पंछी हैं और उन्हें कोई पद नहीं चाहिए, वे तो इंडिया समूह को मजबूत करेंगी। उससे विपक्षी एकता मजबूत होती दिख रही है। लेकिन दूसरी ओर कांग्रेस पार्टी की ओर से टीवीके पार्टी के अभिनेता से राजनेता बने टी.विजय को सरकार बनाने के लिए समर्थन दिए जाने के बाद द्रमुक और समाजवादी नेता अखिलेश यादव की जो प्रतिक्रिया आई है उससे तो यही लगता है कि अब विपक्ष में दरार और गहरी हो गई है। कम से कम दक्षिण की एक पार्टी उससे छिटक गई लगती है। द्रमुक के प्रवक्ता ने तो कांग्रेस पर पीठ में छुरा घोंपने का आरोप लगाया है तो पार्टी की नेता कनिमोझी ने लोकसभा अध्यक्ष को लिखकर दे दिया है कि वे द्रमुक के लिए सदन में इंडिया समूह से अलग बैठने की व्यवस्था कर दें। अखिलेश ने तो एक्स पर कांग्रेस पर तंज कसते हुए लिख दिया है कि वे संकट में किसी मित्र का साथ नहीं छोड़ते। यह तात्कालिक टिप्पणियां हैं, जिनकी अपने अपने ढंग से व्याख्याएं हो रही हैं। लेकिन समझदारी वाली व्याख्याओं के अलावा नामसझी भरी टिप्पणियां और अतीत के गड़े मुर्दे उखाड़ने वाले भाव भी कम नहीं प्रकट हो रहे हैं। यह व्याख्याएं और टिप्पणियां महज हालिया चुनाव और उसके गुणा गणित तक सीमित नहीं हैं बल्कि गैर भाजपावाद के निर्माण के लिए पूरे गैर-कांग्रेसवाद के इतिहास के औचित्य पर ही सवाल उठाए जाने तक फैल गई हैं।

समस्या शासक दल और राज्य नामक संस्था के अहंकार की ही नहीं है, समस्या विपक्षी दलों के अपने अपने अहंकार और भ्रम की भी है। अगर राहुल गांधी यह कहते हुए घूम रहे हैं कि नोट करके जेब में रख लीजिए कि भाजपा से सिर्फ कांग्रेस ही लड़ सकती है तो कम्युनिस्ट साथियों का यह बयान भी कम गलतफहमी वाला नहीं है कि संघ की विचारधारा से असली लड़ाई तो वामपंथ ही लड़ रहा है। जबकि क्षेत्रीय दलों और समाजवादी विरासत का दावा करने वाले दलों का अब भी दावा है कि भाजपा और संघ की विचारधारा के विस्तार को तो उन्होंने ही रोक रखा है। यानी कृष्ण की तरह गोवर्धन पर्वत तो उन्हीं की उंगली पर सधता है। इस बीच में यह ग्रंथि पाले कांग्रेसी बौद्धिक भी बैठे हैं कि संघ और भाजपा को आगे बढ़ाने का काम तो समाजवादियों ने किया और कम से कम दो बार यानी 1967 और 1977 में जनसंघियों को सत्ता दिलाने में उन्हीं का योगदान रहा। इसीलिए डॉ राम मनोहर लोहिया और जयप्रकाश नारायण को कोसने और सीआईए और इजराइल का एजेंट बताने वालों की तादाद भी कम नहीं है। निश्चित तौर पर उन लोगों की कमियां हो सकती हैं या फिर इतिहास के तात्कालिक प्रवाह में उनकी कांग्रेस विरोधी भूमिकाएं हो सकती हैं लेकिन एक बात दावे के साथ कही जा सकती है कि आज उस वजन का कोई नहीं है जो प्रतिपक्ष को जोड़ सके और गैर भाजपावाद के विचार को विपक्ष को जोड़ने वाले सीमेंट के गारे की तरह तैयार कर सके। भारतीय विपक्ष के पुनर्जीवन और भारतीय लोकतंत्र के पुनर्जीवन का एक ही उपाय है कि हम सब अतीत की ग्रंथियों से बाहर निकलें और नए युग के अनुरूप उपस्थित चुनौतियों को पहचानें।

अतीत का गैर-कांग्रेसवाद और आज का गैर-भाजपावाद महज रणनीतियां हैं, वे सकारात्मक विचार नहीं हैं। असली चुनौतियां आज के दौर के लोकतांत्रिक ताने बाने और राष्ट्रीय अखंडता के बिखराव को रोकने की है। विपक्षी दल इस बात को समझ नहीं रहे हैं या अगर समझ रहे हैं तो वैसा व्यवहार नहीं कर रहे हैं कि अगर मतदान से सत्ता परिवर्तन की स्थितियां रहेंगी तभी उन्हें सत्ता मिलेगी। अगर खेल का वह नियम ही समाप्त हो जाएगा और हर चुनाव में विपक्षी दलों का मुकाबला, पहले मीडिया, फिर ईडी-सीबीआई, फिर चुनाव आयोग फिर भारतीय सुरक्षा बल और आखिर में अथाह पूंजी और प्रचार से सज्ज भाजपा से होगा तो वे कभी चुनाव नहीं जीत सकते। एसआईआर और परिसीमन ने नई जनता और नए मतदाता चुनने का नियम बना दिया है। लोकतंत्र उस व्यवस्था का नाम है जहां पर मतदाता अपनी सरकार चुनते हैं। यहां उल्टा हुआ है। यहां सरकार ने अपने मतदाता चुने हैं और फिर उनसे मुहर लगवा कर अपनी विजय घोषित कर दी गई है।

भारतीय समाज और राष्ट्र के समक्ष इस समय दो प्रमुख चुनौतियां हैं। पहली चुनौती है राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बचाने की। दूसरी चुनौती है लोकतंत्र की व्यवस्था को कायम रखने और उसे समाज के भीतर तक ले जाने की। 1946 में जब मुस्लिम लीग ने 16 अगस्त को सीधी कार्रवाई का आह्वान किया था तो उनका साफ कहना था कि हम हिंदुओं के साथ नहीं रह सकते। हमें अलग राष्ट्र चाहिए। आज अगर पश्चिम बंगाल का मुख्यमंत्री बनने और संविधान की शपथ लेने से पहले ही भाजपा नेता यह आह्वान कर रहा है कि हमें वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा कि इजराइल ने गज़ा में किया और अब सबका साथ सबका विकास का नारा नहीं चलेगा, जो हमारे साथ है उसी का विकास होगा तो आप सोच सकते हैं कि इस देश की एकता कितने दिनों तक बचेगी। दूसरी चुनौती लोकतंत्र को बचाने की है। अगर लोकतंत्र है तो इस देश में राजनीति, विचार और सामाजिक सौहार्द का कोई मतलब है। अगर वही नहीं है तो फिर स्वाधीनता संग्राम और भारत की आर्थिक तरक्की का क्या मतलब है वह तो महज चंद लोगों और शक्तियों का शगल हो जाएगा। इसलिए विपक्ष पहले अपना लक्ष्य तय करे, अहंकार से मुक्त हो और फिर सांगठनिक एकता कायम करे। अगर विपक्ष उस भूमिका का निर्वहन नहीं कर सकता तो आखिरी उम्मीद जनता से बचती है लेकिन असंगठित जनता असंगठित विपक्ष से अधिक अराजक और खतरनाक होती है।

# विपक्ष के लिए कैसे कब्रगाह बन गया बंगाल

सामयिक

डॉ. ब्रह्मदीप अलूने

लेखक स्तंभकार हैं।

भारत की विभाजन से जुड़ी हिंसक त्रासदियों के केंद्र में बंगाल था। आज़ादी के बाद भारत के लगभग सभी राज्यों की राजनीतिक संस्कृति समय के साथ बदली,लेकिन बंगाल में ऐसा नहीं हुआ,सत्ता चाहे मुस्लिम लीग,कांग्रेस,कम्युनिस्ट पार्टी या तृणमूल कांग्रेस की रही हो, राजनीतिक संघर्ष अक्सर अत्यधिक टकरावपूर्ण और हिंसक बना रहा। यही कारण है कि बंगाल की राजनीति केवल चुनावी परिणाम तक सीमित न होकर,उसकी राजनीतिक संस्कृति भी एक बड़ा प्रश्न बन जाती है।

1946 में मुस्लिम लीग की सरकार के नुमाइंदें हुसैन शहीद सुहरावर्दी के दौर में डायरेक्ट एक्शन डे से लेकर नक्सलवाद,वामपंथी कैडर राजनीति और बाद के वर्षों में तृणमूल बनाम भाजपा संघर्ष तक,बंगाल में राजनीति हिंसक और आक्रामक होते हुए सामाजिक प्रभुत्व, संगठनात्मक नियंत्रण और सड़क की ताकत का प्रदर्शन भी बन गई। इसके पीछे कई ऐतिहासिक और सामाजिक कारण रहे हैं। पहला कारण है विभाजन और सांप्रदायिक हिंसा की गहरी स्मृति। बंगाल ने 1946-47 में जिस भयावह हिंसा को देखा,उसने समाज और राजनीति दोनों को कठोर बना दिया। दूसरा कारण है वैचारिक राजनीति की तीव्रता। बंगाल लंबे समय तक राष्ट्रवाद, समाजवाद, वामपंथ और सांस्कृतिक आंदोलनों का केंद्र रहा। यहां राजनीतिक दल चुनावी संगठन के साथ समाज के भीतर वैचारिक और सामाजिक शक्ति केंद्र भी बन गए।

कैडर आधारित राजनीति का बंगाल में बड़ा प्रभाव रहा। वाम मोर्चे के लंबे शासन में पार्टी संगठन गांव-गांव तक फैल गया। पंचायत,यूनियन,छात्र राजनीति और स्थानीय प्रशासन तक राजनीतिक प्रभाव गहरा हुआ। बाद में यही मॉडल तृणमूल कांग्रेस ने भी अपनाया। परिणाम यह हुआ कि सत्ता परिवर्तन के बावजूद राजनीतिक संस्कृति में बड़ा बदलाव नहीं आया। विरोधी दलों के लिए राजनीतिक जगह अक्सर सीमित होती गई।

राजनीतिक नेतृत्व ने संरक्षणवाद को बढ़ावा दिया जिससे आम जनता में आर्थिक और सामाजिक निराशा से न निकल पाने को लेकर हताशा का भाव गहरा हुआ। उद्योगों के पलायन,बेरोजगारी और स्थानीय सत्ता संरचनाओं ने राजनीतिक संरक्षणवाद को बढ़ावा दिया। बंगाल में चुनाव कई बार लोकतांत्रिक उत्सव से अधिक शक्ति प्रदर्शन जैसे दिखाई दिए। यहां सत्ता पक्ष ने हमेशा अपने संगठन को राज्य व्यवस्था से जोड़ने की कोशिश की,जिससे विपक्ष को भय और दबाव का सामना करना पड़ा। प्रशासनिक ढांचे को बंधक बनाकर उसे राजनीतिक हथियार और संसाधन की तरह उपयोग करने की प्रवृत्ति बंगाल में शासन करने वाले प्रत्येक दल की रही है। सुहरावर्दी से लेकर ममता बनर्जी और शुवेंधू अधिकारी तक बंगाल की राजनीति का एक लंबा इतिहास रहा है,जिसमें सत्ता परिवर्तन तो हुए,लेकिन राजनीतिक संस्कृति में हिंसा,संगठनात्मक वर्चस्व और विपक्ष का दमन लगातार देखने में आया और यह क्रम पिछले कई दशकों से जारी है। यही कारण है कि बंगाल हमेशा विपक्ष के लिए कब्रगाह रहा है।

बंगाल की राजनीति चुनावी प्रतिस्पर्धा से कहीं ज्यादा वैचारिक संघर्ष,सड़क की शक्ति,कैडर नेटवर्क और राजनीतिक प्रभुत्व का युद्धक्षेत्र भी रही है। यहां जो भी दल सत्ता में आया,उसने शासन के साथ समाज,प्रशासन और स्थानीय ढांचे पर गहरी पकड़ बनाने का प्रयास किया। वहीं विपक्ष को भयभीत करने और हाशिए पर धकेलने के प्रयास लगातार होते रहे।

1946 के प्रांतीय चुनाव इस राजनीतिक संस्कृति की शुरुआती झलक माने जा सकते हैं। उस समय अविभाजित बंगाल में मुस्लिम लीग ने निर्णायक जीत हासिल की और सुहरावर्दी के नेतृत्व में सरकार बनी। पाकिस्तान की मांग को मजबूत करने के लिए मुस्लिम लीग ने जिस प्रकार सांप्रदायिक ध्रुवीकरण को हवा दी,उसका सबसे भयावह परिणाम 16 अगस्त 1946 के डायरेक्ट एक्शन डे के रूप में सामने आया। डायरेक्ट एक्शन डे के दौरान कलकत्ता में भीषण दंगे हुए,हजारों लोग मारे गए और प्रशासन लगभग निष्क्रिय दिखाई दिया।

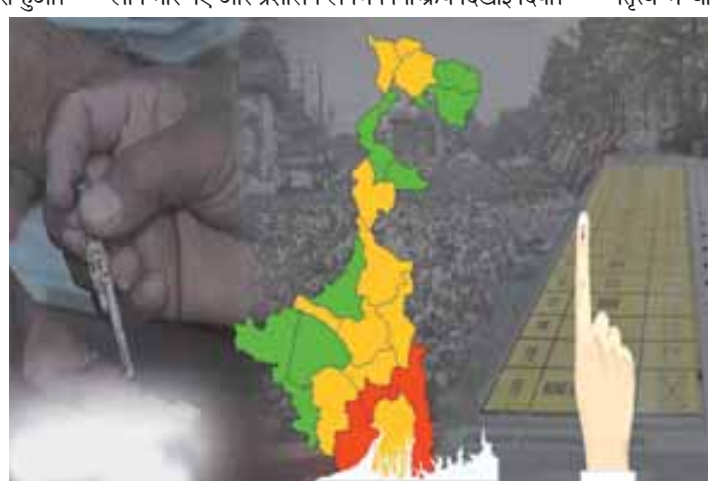

उस दौर में राजनीतिक शक्ति प्रदर्शन ने लोकतांत्रिक असहमति को हिंसक टकराव में बदल दिया। 1947 में विभाजन के बाद पश्चिम बंगाल भारत का हिस्सा बना और कांग्रेस के नेतृत्व में नई राजनीतिक व्यवस्था स्थापित हुई। डॉ. बिधान चंद्र राय के नेतृत्व में राज्य में पुनर्निर्माण और औद्योगिक विकास की कोशिश हुई, लेकिन 1960 के दशक तक बेरोजगारी,खाद्य संकट और राजनीतिक अस्थिरता बढ़ने लगी। इसी पृष्ठभूमि में नक्सलवादी आंदोलन उभरा। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी,माकपा और अन्य वामपंथी समूहों ने युवाओं के बीच प्रभाव बढ़ाया, जबकि कट्टर नक्सली धड़े हिंसक रास्ते पर चले गए। इसके जवाब में कांग्रेस सरकार ने कठोर दमनकारी नीतियां अपनाईं। पुलिस मुठभेड़ों,गिरफ्तारियों और राजनीतिक हिंसा का कुचक्र चला। लोकतंत्र की रक्षा के नाम पर राज्य शक्ति का उपयोग कई बार अलोकतांत्रिक तरीकों से किया गया। इस दौर ने बंगाल में राजनीतिक हिंसा को लगभग संस्थागत रूप दे दिया। 1977 में वाम मोर्चा सत्ता में आया। ज्योति बसु और बाद में बुद्धदेव भट्टाचार्य के नेतृत्व में वामपंथ ने 34 वर्षों तक शासन किया। भूमि सुधार और पंचायत व्यवस्था जैसे कदमों ने उन्हें ग्रामीण बंगाल में मजबूत आधार दिया। लेकिन समय के साथ वाम शासन ने भी एक विशाल कैडर नेटवर्क खड़ा कर प्रशासन, यूनियनों और स्थानीय संस्थाओं पर कब्जा जमा लिया। राजनीतिक विरोधियों को सामाजिक और आर्थिक रूप से अलग-थलग करने की संस्कृति मजबूत हुई। पंचायत चुनावों में हिंसा,बूथ कब्जाने और विपक्षी कार्यकर्ताओं पर हमलों के आरोप लगातार सामने आते रहे। यहां कैडर राज में पार्टी और प्रशासन के बीच की रेखा धुंधली हो गई थी। 2007 का नंदीग्राम हिंसा और सिंगूर विवाद वाम शासन की छवि को सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाने वाली घटनाएं बनीं। भूमि अधिग्रहण के खिलाफ आंदोलनों पर पुलिस कार्रवाई ने यह धारणा मजबूत की कि सत्ता में लंबे समय तक बने रहने के बाद वाम दल भी विपक्ष को दबाने वाली शक्ति बन चुके थे।

इसी असंतोष के बीच ममता बनर्जी ने मां,माटी,मानुष के नारे के साथ वाम शासन को चुनौती दी और 2011 में ऐतिहासिक जीत हासिल की। शुरुआत में यह परिवर्तन लोकतांत्रिक पुनर्जागरण जैसा लगा,लेकिन समय के साथ तृणमूल कांग्रेस भी वाम दल की राह पर चल पड़ी। तृणमूल शासन के दौरान सिंडिकेट राज,स्थानीय दबंगों की राजनीति,पंचायत चुनावों में हिंसा और विपक्षी कार्यकर्ताओं पर हमलों ने लोकतंत्र को रक्तरंजित और कलंकित किया।

अब भाजपा की जीत और शुभेंदु अधिकारी के नेतृत्व में नई सरकार का गठन बंगाल की राजनीति में ऐतिहासिक मोड़ माना जा रहा है। अब सबसे बड़ी चुनौती इस राज्य में राजनीतिक संस्कृति को बदलने की होगी। नई सत्ता को लोकतांत्रिक होकर पूरे राजनीतिक ढांचे पर प्रभुत्व की स्थापित कोशिशों को खत्म करने की ओर कदम बढ़ाने होंगे।

बंगाल की सबसे बड़ी त्रासदी यह रही है कि यहां विचारधारा बदलती रही, लेकिन राजनीतिक व्यवहार में समानताएं बनी रहीं। मुस्लिम लीग,कांग्रेस,वाम मोर्चा से तृणमूल कांग्रेस तक,हर दौर में सत्ता ने अपने संगठनात्मक ढांचे को इतना मजबूत किया कि विपक्ष के लिए राजनीतिक जमीन सिकुड़ती गई। यही कारण है कि बंगाल में लोकतंत्र अक्सर केवल चुनावों तक सीमित दिखाई देता है,जबकि जमीनी स्तर पर राजनीतिक स्वतंत्रता कई बार दबाव और भय से प्रभावित होती रही है। हालांकि बंगाल की पहचान को केवल हिंसा और दमन तक सीमित करना भी ठीक नहीं होगा। यह भूमि रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सुभाष चंद्र बोस और बौद्धिक बहसों की परंपरा की भी रही है। इसलिए बंगाल के भविष्य की सबसे बड़ी चुनौती यही होगी कि वह अपनी राजनीतिक ऊर्जा को हिंसक प्रभुत्व से निकालकर स्वस्थ लोकतांत्रिक प्रतिस्पर्धा में बदल सके। इसके लिए प्रशासनिक निष्पक्षता,राजनीतिक सहिष्णुता और समाज के भीतर लोकतांत्रिक संवाद की नई संस्कृति विकसित करनी होगी। बंगाल की ऐतिहासिक बौद्धिक परंपरा तभी सार्थक होगी,जब इस राज्य में असहमति को दुश्मनी नहीं,लोकतंत्र की स्वाभाविक शक्ति माना जाए। बहरहाल शुभेंदु अधिकारी से सबसे बड़ी उम्मीद यही हो सकती है कि बंगाल अपनी पुरानी हिंसक राजनीतिक विरासत से बाहर निकले और ऐसा राज्य बने जहां सत्ता परिवर्तन के साथ प्रतिशोध नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक संतुलन दिखाई दे।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.-453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

**प्रधान संपादक**
उमेश त्रिवेदी
**कार्यकारी प्रधान संपादक**
अजय बोकिल
**संपादक (मध्यप्रदेश)**
विनोद तिवारी
**स्थानीय संपादक**
हेमंत पाल
**प्रबंध संपादक**
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

सूर्यदीप कुशवाहा

लेखक व्यंग्यकार हैं।

# आम हुए तो अचार बना दिए जाओगे

आम केवल फल नहीं, बल्कि उस आम आदमी की श्रेणी में आना है जिसकी पीठ पर लटक लोग खास बनते हैं। लोकतंत्र से लेकर दफ्तरों तक, आम होना किसी गाली से कम नहीं है। जैसे ही गर्मी आती है, बाजार में आमों की बाढ़ आ जाती है। जब संख्या बढ़ती है, तो कीमत गिरती है। यही नियम जनता पर भी लागू होता है। जब आप भीड़ का हिस्सा होते हैं, जब आपकी अपनी कोई अलग सोच या पहचान नहीं होती, तो समाज आपको दो कौड़ी का माल समझता है। चालाक बंदे को हमेशा ऐसे ही आमों की तलाश रहती है, जिन्हें काटकर, छीलकर और गुठली निकालकर मर्तबान में ठूँसा जा सके। अचार बनाना दरअसल एक व्यवस्थित वध है। पहले आपको आम आदमी के नाम पर चुना जाता है, फिर आप पर टैक्स का नमक छिड़का जाता है, महंगाई की मिर्च डाली जाती है और नियमों की हल्दी में लपेटकर सालों-साल के लिए ठंडे बस्ते में बंद कर दिया जाता है। अचार की खूबी यह है कि वह जितना पुराना होता है, उतना ही गल जाता है। खास लोग भी यही चाहते

है कि आप इतने गल जाएँ कि कभी अपना सिर न उठा सकें। मर्तबान के भीतर की उस घुटन को ही हम मिडिल क्लास स्टेबिलिटी कहते हैं। यहाँ स्पेशल बनने की नसीहत कोई मोटिवेशनल स्पीकर का जुमला नहीं है, बल्कि आत्मरक्षा का आखिरी हथियार है। जो फल दुर्लभ होता है, वह चाँदी की तश्तरी में सजकर किसी वातानुकूलित कमरे की मेज पर रखा जाता है। उसे काटने से पहले सौ बार सोचा जाता है। लेकिन आम के साथ कोई सहानुभूति नहीं होती। उसे तो डंडे मार-मारकर पेड़ से गिराया जाता है और बोरे में भरकर मंडी भेज दिया जाता है। राजनीति के बाजार में तो आम होने का स्वाद ही निराला है। नेता चुनाव के समय इसी आम आदमी के गुण गाते हैं, लेकिन सत्ता की मेज पर बैठते ही वे उसी आम का अचार निकालकर परांठे के साथ मजे से खाते हैं। आम आदमी की नियति ही यही है कि वह दूसरों का जायका बढ़ाए, खुद चाहे सिर से पैर तक तेल और मसालों में क्यों न डूबा हो। इसलिए, यदि आप अपनी मौलिकता को बचाकर नहीं रखेंगे, यदि आप अपनी रीढ़ की हड्डी को बचाए रखने के बजाय हाँ में हाँ मिलाने वाले आम बनेंगे, तो यकीन मानिए, समाज की कैंची तैयार खड़ी है। आपको काटकर आपकी पहचान का ऐसा अचार डाला जाएगा कि आने वाली नस्लें भी उसी स्वाद में खुद को भुला देंगी।आज के दौर में खास होना कोई विकल्प नहीं, बल्कि जरूरत है। जो आम नहीं होता, उसका अचार नहीं बनता। लोग उसे चखने से डरते हैं, उसे सहेज कर रखते हैं। वरना याद रखिए, मर्तबान का ढक्कन खुला है और समाज नमक हाथ में लिए आपकी बारी का इंतजार कर रहा है। सच में...आम हुए तो अचार बना दिए जाओगे!

व्यक्तित्व

गिरीश जोशी

लेखक स्तंभकार हैं।

# संत मुक्ताबाई: सामाजिक -आध्यात्मिक योगदान देने वाली विदुषी

**संत मुक्ताबाई का जन्म 13वीं शताब्दी में महाराष्ट्र के आपेगांव आलंदी क्षेत्र में माना जाता है। वे अपने तीन संत भाई निवृत्तिनाथ, ज्ञानेश्वर, सोपानदेव की छोटी बहन थीं। उनका परिवार सामाजिक बहिष्कार, धार्मिक रूढ़ियों की प्रताड़ना का शिकार हुआ था। उनके पिता विट्ठलपंत ने पहले संन्यास लिया था लेकिन किसी कारण से बाद में फिर से गृहस्थ जीवन में लौटने के कारण समाज ने इनके परिवार का सामाजिक बहिष्कार कर दिया था। इस सामाजिक पीड़ा ने मुक्ताबाई के मन में विद्वेष की जगह करुणा, समता और आध्यात्मिकता को मजबूती से विकसित किया। मुक्ताबाई को आध्यात्मिक संस्कार उनके बड़े भाई निवृत्तिनाथ से मिले थे, जो नाथ संप्रदाय के संत थे। निवृत्तिनाथ ने ज्ञानेश्वर, सोपानदेव और मुक्ताबाई को आत्मज्ञान का मार्ग दिखाया। मुक्ताबाई की साधना में नाथपंथ की परंपरा और वारकरी संप्रदाय की भक्तिधारा का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। वे ईश्वर को बाहरी कर्मकांड में नहीं, बल्कि अंतःकरण की शुद्धता और आत्मबोध में खोजती हैं। दूसरी ओर वारकरी संप्रदाय की विट्ठल भक्ति और नामस्मरण की परंपरा ने उनकी साधना और अभिव्यक्ति को लोकाभिमुख बनाया। इस प्रकार मुक्ताबाई के व्यक्तित्व में नाथ संप्रदाय और वारकरी भक्ति परंपरा का अद्भुत समन्वय मिलता है।**

महाराष्ट्र की संत परंपरा में संत मुक्ताबाई का नाम अत्यंत श्रद्धा एवं सम्मान के साथ लिया जाता है। वे केवल संत ज्ञानेश्वर की छोटी बहन ही नहीं थीं, बल्कि स्वयं एक उच्चकोटि की संत, दार्शनिक चिंतक और कवयित्री थीं। वारकरी संप्रदाय में मुक्ताबाई को स्त्री-संत परंपरा की अग्रिम पंक्ति में स्थान प्राप्त है। उनकी वाणी में ज्ञान,भक्ति,वैराग्य, समता और आत्मबोध का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। मध्यकाल में जब दुनिया भर के अन्यान्य देशों में महिलाओं को उचित स्थान नहीं था तब भारतीय समाज में मुक्ताबाई ने अपने चिंतन और आध्यात्मिक योगदान से विशेष स्थान अर्जित किया।

संत मुक्ताबाई का जन्म 13वीं शताब्दी में महाराष्ट्र के आपेगांव आलंदी क्षेत्र में माना जाता है। वे अपने तीन संत भाई निवृत्तिनाथ, ज्ञानेश्वर, सोपानदेव की छोटी बहन थीं। उनका परिवार सामाजिक बहिष्कार, धार्मिक रूढ़ियों की प्रताड़ना का शिकार हुआ था। उनके पिता विठ्ठलपंत ने पहले संन्यास लिया था लेकिन किसी कारण से बाद में फिर से गृहस्थ जीवन में लौटने के कारण समाज ने इनके परिवार का सामाजिक बहिष्कार कर दिया था। इस सामाजिक पीड़ा ने मुक्ताबाई के मन में विद्वेष की जगह करुणा, समता और आध्यात्मिकता को मजबूती से विकसित किया।

## आध्यात्मिक संस्कार

मुक्ताबाई को आध्यात्मिक संस्कार उनके बड़े भाई निवृत्तिनाथ से मिले थे, जो नाथ संप्रदाय के संत थे। निवृत्तिनाथ ने ज्ञानेश्वर, सोपानदेव और मुक्ताबाई को आत्मज्ञान का मार्ग दिखाया। मुक्ताबाई की साधना में नाथपंथ की परंपरा और वारकरी संप्रदाय की भक्तिधारा का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। वे ईश्वर को बाहरी कर्मकांड में नहीं, बल्कि अंतःकरण की शुद्धता और आत्मबोध में खोजती हैं। दूसरी ओर वारकरी संप्रदाय की विठ्ठल भक्ति और नामस्मरण की परंपरा ने उनकी साधना और अभिव्यक्ति को लोकाभिमुख बनाया। इस प्रकार मुक्ताबाई के व्यक्तित्व में नाथ संप्रदाय और वारकरी भक्ति परंपरा का अद्भुत समन्वय मिलता है।

## संत ज्ञानेश्वर के जीवन में भूमिका

मुक्ताबाई केवल संत ज्ञानेश्वर की बहन ही नहीं थीं, बल्कि उनकी आध्यात्मिक यात्रा की सहयात्री भी थीं। अनेक कथाओं में ये उल्लेख भी मिलता है कि जब ज्ञानेश्वर सामाजिक विरोध और मानसिक वेदना से व्यथित होते, तब मुक्ताबाई उन्हें धैर्य, समता और क्षमा का भाव धारण करने का संदेश देती थीं। उनकी प्रसिद्ध उक्ति 'विश्व रागे झाले वन्ही, संत सुखे व्हावे पाणी' अर्थात् जब संसार क्रोध और द्वेष की अग्नि बन जाए, तब संतों को शीतल जल के समान बन जाना चाहिए।

एक बार की बात है। समाज के अपमान और तिरस्कार से दुःखी और निराश होकर ज्ञानेश्वर ने स्वयं को एक कुटिया में बंद कर लिया था। तब मुक्ताबाई ने 'ताटी (कुटिया का दरवाजा) खोलो' ये विनती करते हुए अभंग लिखें हैंद्य इन अभंगों में करुणा, समता, क्षमा और संत स्वभाव का गहन तत्त्वज्ञान व्यक्त हुआ है।

ताटी के अभंगों में सबसे प्रसिद्ध है- 'ताटी उघडा ज्ञानेश्वरा। योगी पावन मनाचा॥' मुक्ताबाई ज्ञानेश्वर से कहती हैं कि सच्चा योगी लोगों के व्यवहार से विचलित नहीं होता।

'संत जेणे व्हावे। जग बोलणे सहावे॥' संत वही कहलाए। जो जग की बातें सह जाए ॥ इस पंक्ति में संत स्वभाव का सार व्यक्त किया गया है कि संत वही हो सकता है जो दुनिया की निंदा, अपमान, उपेक्षा आदि को सहन करना सीख जाता है।

'थोरपण जेथे वसे। तेथे भूतदया असे॥' जहाँ महानता बसती है। वहाँ प्राणिमात्र पर दया होती है॥ मुक्ताबाई के अनुसार सच्ची महानता प्रत्येक प्राणियों के

प्रति दया और करुणा में होती है।

संत मुक्ताबाई के 'ताटी के अभंग' वारकरी संत साहित्य में अत्यंत प्रसिद्ध और आध्यात्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं।

## साहित्यिक योगदान

मुक्ताबाई की रचनाएँ मुख्यतः अभंग शैली में उपलब्ध हैं। उनकी वाणी सरल, मार्मिक और अनुभवप्रधान है। उनके अभंगों के प्रमुख विषय आत्मज्ञान, समता, और सामाजिक भेदभाव का विरोध, वैराग्य-माया, अहंकार और लोभ से मुक्ति का संदेश तथा भक्ति, ईश्वर के प्रति निष्कपट प्रेम और समर्पण रहे हैं।

## सामाजिक दृष्टि एवं नारी विमर्श का स्वर

मुक्ताबाई का व्यक्तित्व मध्यकालीन समाज में नारी सशक्तिकरण का उदाहरण है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि स्त्री केवल गृहस्थी तक सीमित नहीं, बल्कि वह ज्ञान, साधना और समाज सुधार की वाहक भी हो सकती है। उनकी वाणी में स्त्री की स्वतंत्र चेतना, आत्मसम्मान और आध्यात्मिक अधिकार स्पष्ट दिखाई देते हैं। इसलिए आधुनिक महिला विमर्श की दृष्टि से मुक्ताबाई का अध्ययन जरूरी है।

मुक्ताबाई की विशेषता उनके ज्ञानप्रधान भक्ति दर्शन में दिखाई देती है। जैसे मीराबाई का केंद्र कृष्णप्रेम है, वैसे ही मुक्ताबाई का केंद्र आत्मज्ञान और समरसता है। आधुनिक स्त्री विमर्श के संदर्भ में मुक्ताबाई का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि उन्होंने 13वीं शताब्दी में ही स्त्री की बौद्धिक क्षमता, आध्यात्मिक समानता, सामाजिक अस्मिता और मानवीय गरिमा को स्थापित किया।

## आध्यात्मिक समानता

मुक्ताबाई का जीवन यह प्रतिपादित करता है कि ईश्वर-प्राप्ति, ज्ञान और मोक्ष में स्त्री-पुरुष का कोई भेद नहीं है। उनकी भूमिका से स्पष्ट हुआ कि स्त्री भी गुरु हो सकती है। स्त्री भी दार्शनिक संवाद कर सकती है। उनका प्रभाव वारकरी संप्रदाय और मराठी संत साहित्य पर गहरा पड़ा है। उनकी रचनाओं में स्त्री अनुभव, सामाजिक पीड़ा और आध्यात्मिक उत्कर्ष का अद्भुत समन्वय मिलता है।

## भाषा और अभिव्यक्ति

मुक्ताबाई ने लोकभाषा मराठी में अभंग रचे। उनकी वाणी में सहजता,अनुभव की प्रामाणिकता, करुणा, प्रतिरोध की सौम्य शैली और आत्मविश्वास स्पष्ट दिखाई देता है। वे स्वतंत्र स्त्री वैचारिकी की प्रतिनिधि हैं।

## जीवन का अंतिम चरण

किंवदंतियों के अनुसार अल्पायु में ही उन्होंने देहत्याग किया। किंतु उनका आध्यात्मिक प्रभाव वारकरी परंपरा में आज भी जीवित है। वे महाराष्ट्र की प्रारंभिक स्त्री संत कवियत्री हैं। उन्होंने भक्ति को सामाजिक समता से जोड़ा। उनकी वाणी में ज्ञानेश्वर की परंपरा का दार्शनिक विस्तार मिलता है। वे स्त्री-आध्यात्मिक नेतृत्व का सशक्त उदाहरण हैं। संत मुक्ताबाई का जीवन यह सिद्ध करता है कि आध्यात्मिक महानता आयु, लिंग या सामाजिक स्थिति पर निर्भर नहीं करती, बल्कि अंतःकरण की निर्मलता पर आधारित होती है। मुक्ताबाई की वाणी आज भी समाज को यह संदेश देती है कि जब संसार द्वेष से जल रहा हो, तब मनुष्य को प्रेम, शांति और करुणा का जल बनना चाहिए।

विचार

सुदर्शन व्यास

लेखक स्तंभकार हैं।

# मन के मते न चलिये, मन के मते अनेक

**हमारा मन मानव शरीर का सबसे चंचल हिस्सा कहा जाता है, ये भले ही शरीर का भौतिक हिस्सा नहीं है, लेकिन मस्तिष्क और हृदय की कार्यप्रणाली को यही चलायमान भी करता है और रोकता भी है। हम महसूस करेंगे कि दिनभर में हज़ारों विचार घुमड़कर आते हैं। कुछ प्रेरित करते हैं तो कुछ डराते हैं। कुछ विचार हमें गुस्सा दिलाते हैं तो कुछ लालच भी जगाते हैं। कुछ ईर्ष्या पैदा करते हैं तो कुछ प्रेम की अभिव्यक्ति जगाते हैं, लेकिन सच्चाई तो ये है कि ज़रूरी नहीं कि हमारे मन में आया हर एक विचार सच ही हो! इसलिए ये समझना भी जरूरी है कि मन में आये हर एक विचार का अनुसरण किया जाये ये जरूरी भी नहीं।**

'माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर, कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।'

कबीरदास जी ने मन के मति को भाँपते हुए ये दोहा लिखा था, जिसका भावार्थ है कि माला फेरते हुए युग बीत गए, लेकिन मन का चंचलपन (मन का भाव) नहीं बदला। कबीर कहते हैं कि हाथ की माला को छोड़ो और मन के मोतियों को बदलो, अर्थात् मन को शांत करो।

हमारा मन मानव शरीर का सबसे चंचल हिस्सा कहा जाता है, ये भले ही शरीर का भौतिक हिस्सा नहीं है, लेकिन मस्तिष्क और हृदय की कार्यप्रणाली को यही चलायमान भी करता है और रोकता भी है। हम महसूस करेंगे कि दिनभर में हज़ारों विचार घुमड़कर आते हैं। कुछ प्रेरित करते हैं तो कुछ डराते हैं। कुछ विचार हमें गुस्सा दिलाते हैं तो कुछ लालच भी जगाते हैं। कुछ ईर्ष्या पैदा करते हैं तो कुछ प्रेम की अभिव्यक्ति जगाते हैं, लेकिन सच्चाई तो ये है कि ज़रूरी नहीं कि हमारे मन में आया हरएक विचार सच ही हो! इसलिए ये समझना भी जरूरी है कि मन में आये हरएक विचार का अनुसरण किया जाये ये जरूरी भी नहीं।

## विचार हमारे वश में नहीं लेकिन अनुसरण वश में है

यकीनन, विचारों का आना हमारे वश में नहीं होता, लेकिन उनका अनुसरण करना या उन्हें छोड़ देना तो हमारे वश में होता है। विचारों का चयन कर उन्हें अपनी जिंदगी पर लागू कर हम अपने जीवन और व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं, जो कि हमारी मूल पहचान होती है। हमारे भाव, भाषा, शैली, अभिव्यक्ति, पसंद, नापसंद- ये सब मन के उन विचारों का ही प्रतिफल होता है, जो कि हमारी दुनिया को हमारी पहचान बताता है। इसे ऐसे समझ सकते हैं कि हमारा मन एक फैक्ट्री है जो कि विचारों का निर्माण कर सकता है, लेकिन वो हमारा मालिक नहीं है कि जो

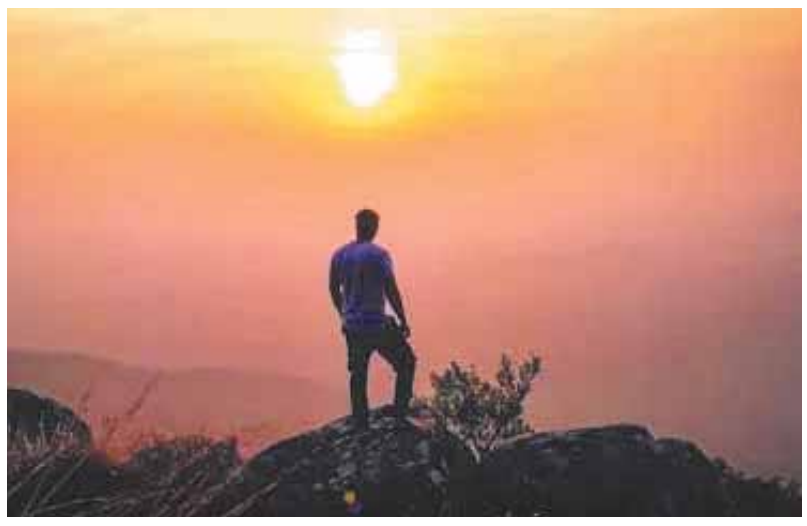

विचार मन में आया है हम उसपर अक्षरशः अमल करें।

## हर विचार पर अमल सही नहीं होता

हमारा मन परिस्थितियों के वश में होता है। वो गुस्से में कहेगा कि - सब छोड़ दो। डर में कहेगा कि- तुमसे नहीं होगा। अहंकार में कहेगा कि बदला लो और जब प्रेममय होगा तो समर्पण इतना होगा कि प्राण तक सहज रूप से न्यौछावर हो जाएंगे। ऐसे में सवाल यही है कि क्या हर बार उसकी सुनोगे? हमें विचारों को देखना - सीखना होगा, लेकिन ये ध्यान रखना होगा कि उन विचारों में हम डूबें नहीं। हम आसमान हैं और हमारे विचार बादल की तरह हैं। ये सहसा आते हैं, शोर करते है और चले जाते हैं। हर विचार पर अमल करने से पहले हमें सवाल करना होगा कि क्या इस पर अमल करना सही होगा? या इस पर अमल करने के बाद परिणाम क्या होंगे? असल में हमारा मन सिर्फ एक टूल है लेकिन हम इससे पूरी तरह अलग हैं। मन में आया हरएक विचार आदेश नहीं होता। कुछ विचार सिर्फ़ परीक्षा की तरह होते हैं, उन्हें न मानना ही दयालुता है। जो विचारों को चुनना जानता है– वही असल में जिंदगी को भी चुनना जानता है। हमें मन में आये विचारों को अच्छी तरह से सुनकर, फिर बुनकर, फिर सोचकर और समझकर अमल करने की जरूरत है...अंततः आप पाएंगे कि आपका जीवन स्वर्ग से सुंदर है। तनावरहित और खूबसूरत भी। इसीलिए तो कबीरदास जी कह गये हैं कि 'मन के मते न चलिये, मन के मते अनेक'।

राजनीति

सिद्धार्थ शर्मा

# चुनाव बाद हिंसा के कारण

पांच राज्यों में चुनाव हुए। भारत के करीब दस प्रतिशत लोगों ने वोट डाले। तीन राज्यों में सरकार बदली। जिन 14 करोड़ लोगों ने वोट डाला उसमें 8 करोड़ वोट क्षेत्रीय दलों को पड़े। सर्वाधिक 8 करोड़ वोट के बावजूद क्षेत्रीय दल एक ही राज्य में सरकार बनाएंगे। सबसे कम 2 करोड़ वोट वाली कांग्रेस भी एक राज्य में सरकार बना लेगी और दूसरे नंबर पर 4 करोड़ वोट वाली भाजपा 3 राज्यों में सरकार बना लेगी।

5 में से 2 राज्यों में जीतने वाले नए दल ने लोगों का शुक्रिया अदा किया, नई सरकार बनाने की कवायद शुरू की। एक राज्य में जीत के जश्न ने हिंसक रूप लिया। लोगों से लेकर विपक्ष तक के साथ अभद्रता और गुंडई का बोलबाला दिखा। संस्कृति की विकृति सामने आई।

ईरान युद्ध और ट्रम्प के सभ्यता को विनाश करनेवाली घोषणा के बाद से सभ्यता शब्द चर्चा में आ गया है। दुनिया भार में अलग अलग सभ्यताएं हैं। फारस प्रकृतिवादी सभ्यता है इसीलिए होर्मुज की प्रकृति को पकड़े हुए है। पश्चिम की सभ्यता भौतिक है तो भौतिक हथियारों से प्राकृतिक तेल को हिंसा से जीतने की जिद्द में है। रेगिस्तानी सभ्यता जहां हरियाली वहां कारवाँ लेकर चल देती है -इसीलिए खाड़ी के देश में कुछ अमेरिका के साथ तो कुछ ईरान के झूलते दिखते हैं।

भारत की भी अपनी सभ्यता है। सभ्यताएं धर्म और राजनीति से पुरानी और व्यक्ति से बड़ी होती हैं। पहले सभ्यता बनती है, उसमें से धर्म, सत्ता, व्यक्ति निकलते भी है और उसीमें विलीन भी हो जाते है। भारत की भी सभ्यता बहुत पुरानी है। इस सभ्यता से कई धर्म, बहुत सारी सत्ताएं और सैकड़ों पीढ़ियां पैदा भी हुई और विलीन भी। पिछले 800 साल में भारत पर इस्लाम, ईसाई और हिन्दू सत्ताएं रहीं - फिर भी भारतीय सभ्यता अपने स्थान पर स्थित है।

मतलब सभ्यता, संस्कृति जैसी चीजें इतनी बड़ी होती हैं कोई उसे बचाने की औकात नहीं रखता। बस सभ्यता के अनुसार व्यवहार या तो किया जाता है, या तो विपरीत। ईरान ने अपनी सभ्यता के अनुसार आचरण किया, होर्मुज नाम की प्रकृति के इर्द गिर्द अपना आचरण रखा तो बाहरी भौतिक सभ्यता के हमले तक को आराम से निपट दिया। ईरान ने अपनी सभ्यता को बचाने का काम नहीं किया। बस अपनी सभ्यता के अनुसार आचरण किया। सभ्यता या संस्कृति क्योंकि धर्म और राज्य सत्ता से प्राचीन होती हैं, इसीलिए किसी भूभाग में लंबे समय तक टिके रहने हेतु हर

सभ्यता एक जीवनशैली अपनाती है और इसी कारण हजारों सालों तक अलग अलग सत्ताओं के बावजूद मूल चरित्र बनाए रखने के चलते अस्तित्व बनाये रखती हैं।

भारतीय उपमहाद्वीप को यदि हिंदू सभ्यता मानें तो हिंदू अर्थात् क्या? मूलतः आरण्यक सभ्यता होने के चलते भारत की सभ्यता अहिंसक है, जियो और जीने दो वाली है। आचार्य विनोबा भावे ने बृहस्पति आगम के अनुसार बताया की 'हिंसया दूयते चित्तं तेन हिन्दु रितीरितः'-इसका अर्थ है- जिसका मन हिंसा को देखकर दुखी होता है, वही 'हिन्दू' कहलाता है। ऐसी संस्कृति जो पेड़-पौधे जानवर आदि तक को देव माने -वो सारी चीजें जिन्हें दुनिया की दूसरी सभ्यताएं भोजन मानकर खा लेती हैं, उन सब वस्तुओं को भारत पूज्य मानता है।

दुनिया जिसे खाती है, भारत यदि उसे पूजता है, मतलब भारत किसी विषय का निष्कर्ष दुनिया भर के प्रचार से प्रभावित होकर नहीं, बल्कि मौलिक विचार करके पहुँचता है ये सिद्ध हुआ। इसीलिए विश्व को प्राचीन भारत ने शून्य दिया, पाई दिया, ग्राम गणराज्य दिया, अहिंसा दी। सब मौलिक। दुनिया में पहली बार, पूरी तरह से नायाब। भारतीय होना यानी अपना विशिष्ट स्वतंत्र परिचय होना, सूर्य के तरह स्वयंप्रकाशी, चांद की तरह अन्य के प्रकाश पर निर्भर नहीं।

इस भारतीय सभ्यता में पिछले तीन दशकों की एक पीढ़ी ने एक नया आयाम जोड़ा है। वैश्विक आवागमन सुलभ होने के चलते भारत के करीब 30 करोड़ परिवारों में से 3 करोड़ परिवारों से एक व्यक्ति भारत से बाहर भौतिकवादी सभ्यता के पाश्चात्य देशों में रहने लगा है। वो 3 करोड़ लोग सालाना करीब 12 करोड़ रुपये भारत भेजते हैं -जो की भारत सरकार के 36 करोड़ बजट का 1/3 है। मतलब पिछली एक पीढ़ी में औसत भारत की भौतिकवाद पर निर्भरता बढ़ी है। अपने खुद की प्राचीन अहिंसक सहयोगी सभ्यता से गए हुए लोग अब वहां के नवीन पाश्चात्य भौतिक हिंसक सभ्यता से रूबरू भी हुए हैं और उस सभ्यता के अंशों को भारत भेज भी रहे हैं -विकास, उपभोक्तावाद, हिंसा पर विश्वास आदि के रूप में।

वर्तमान भारतीय सभ्यता एक रोचक मोड़ पर खड़ी है जहां 10 में से 7 भारतीय अपनी प्राचीन विकेन्द्रीकृत, मौलिक विचार और अहिंसक संस्कृति के अनुसार आचरण कर रहे हैं जबकि 10 में से 3 हिन्दुस्तानी आधुनिक दूसरी सभ्यताओं से प्रभावित होकर केंद्रीकृत, प्रचार आधारित, जिसकी लाठी उसकी भैंस के आधार पर आचरण कर रहे हैं।

और वर्तमान भारत ने क्योंकि संख्यासुर नाम के संसदीय बहुमत का शासन मॉडल अपनाया है, तो उसमें 51=100 और 49=00 के आधार पर सरकारें सत्ता में आ-जा रही हैं। ये ऊँट अंततोगत्वा किस करवट बैठेगा, प्राचीन भारतीय दार्शनिक सभ्यता के अनुरूप, या आधुनिक पाश्चात्य भौतिक सभ्यता के करवट, ये कहना अभी मुश्किल है।

महंगाई

एकता शर्मा
(लेखिका, सामाजिक विश्लेषक)

# सिकुड़ने लगी गरीब की थाली

**आम आदमी की थाली अब सिर्फ रोटी-सब्जी का पुलाव नहीं, बल्कि महंगाई का तड़का बन गई है। कमर्शियल गैस सिलेंडर के दामों में हुई बढ़ोतरी ने न सिर्फ होटल-रेस्तरां की कीमतों को आकाश छुआ दिया, बल्कि स्ट्रीट फूड से लेकर चाय-समोसे तक हर चीज पर महंगाई का प्रहार किया। इससे गरीब और मध्यमवर्गीय की जेब खाली होने लगी। देखने में लगता है कि कमर्शियल गैस सिलेंडर की कीमत बढ़ने से आम आदमी कहां प्रभावित हुआ! पर, सोचिए उस रोज कमाने वाले के लिए जिसका लंच एक समोसा और चाय हुआ करता था, वो प्रभावित हुआ है।**

आम आदमी की जिंदगी पहले ही महंगाई, ठहरती आय और बढ़ते खर्चों के बीच संतुलन बनाने की जद्दोजहद में उलझी हुई थी, लेकिन अब रसोई की आग और तेज हो गई है। कमर्शियल गैस सिलेंडर के दाम बढ़ने का सीधा असर सिर्फ होटल और ढाबों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि धीरे-धीरे यह असर हर उस थाली तक पहुंचता है, जो आम आदमी की जेब से जुड़ी होती है। शहरों में जहां छोटे-छोटे भोजनालय, चाय-नाश्ते की दुकानें और मिड-रेंज होटल रोजमर्रा के खानपान का हिस्सा हैं, वहां दाम बढ़ते ही सबसे पहले ग्राहक की थाली छोटी और महंगी हो जाती है।

कमर्शियल सिलेंडर के भाव बढ़ने का मतलब केवल रसोई का बजट बिगड़ना नहीं है। यह पूरी खाद्य आपूर्ति श्रृंखला पर दबाव बनाता है। होटल मालिक, ढाबे वाले, समोसे-कचौरी बनाने वाले, पोहा बेचने वाले, चाय की दुकान चलाने वाले सभी को अपने बढ़े हुए खर्च का बोझ किसी न किसी तरह ग्राहक पर डालना पड़ता है। यही वजह है कि जहां पहले 70 रु में मिलने वाली थाली अब 90 रु तक पहुंच गई है, वहीं बड़े होटलों में हर डिश के दाम में 50 तक की बढ़ोतरी देखी जा रही है। समोसे, कचौरी और पोहे जैसे लोकप्रिय नाश्ते भी अब 5 रु महंगे हो गए हैं। जो चीजें कभी मामूली खर्च में पेट भरने का सहारा थीं, वे अब धीरे-धीरे बजट से बाहर होती जा रही हैं।

यह बढ़ोतरी सिर्फ आंकड़ों की बात नहीं है, यह उस आम आदमी की पीड़ा है जो दिनभर मेहनत करके शाम को थोड़ी राहत के लिए बाहर खाना खाता था। कई लोगों के लिए बाहर का नाश्ता या खाना विलासिता नहीं, बल्कि सुविधा है। नौकरीपेशा लोग, मजदूर, छोटे व्यापारी, छात्र और अकेले रहने वाले लोग अक्सर बाहर के भोजन पर निर्भर रहते हैं। जब नाश्ते की प्लेट, चाय का कप और रात की थाली सब महंगी होने लगती हैं, तो सबसे पहले कटौती स्वाद से नहीं, जरूरतों से शुरू होती है। लोग बाहर खाना कम कर देते हैं, फिर धीरे-धीरे गुणवत्ता और मात्रा से समझौता करने लगते हैं। 'नेल्सन आईक्यू' के एक अध्ययन के मुताबिक, 30 प्रतिशत परिवारों ने सप्ताह में एक बार बाहर खाने पर 25 प्रतिशत कटौती कर दी। बच्चे अब मम्मी के हाथ बना खाना ही खा रहे।

इस महंगाई का एक और पक्ष भी है। होटल और ठेला व्यवसायियों के लिए भी यह आसान स्थिति नहीं है। वे भी उपभोक्ता हैं और गैस, तेल, किराया, मजदूरी, सब्जी, दाल, आटा और मसालों के बढ़ते दामों से जूझ रहे हैं। लेकिन उनकी मजबूरी यह है कि लागत बढ़ने पर उन्हें कीमत बढ़ानी पड़ती है, वरना कारोबार चलाना मुश्किल हो जाता है। इस स्थिति में ग्राहक और दुकानदार, दोनों ही एक ही चक्र में फंस जाते हैं। दुकानदार कहता है कि दाम न बढ़ाए तो नुकसान होगा, ग्राहक कहता है कि अब खाए भी तो कैसे खाए। यह आर्थिक दबाव का ऐसा दायरा है जिसमें कोई भी पूरी तरह सुरक्षित नहीं बचता।

सबसे चिंताजनक बात यह है कि कमाई की गति और महंगाई की रफ्तार में भारी अंतर है। आम आदमी की आय जस की तस है या बहुत धीमी गति से बढ़ रही है, जबकि आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं के दाम लगातार ऊपर जा रहे हैं। ऐसे में 5 रु, 10 रु या 20 रु की बढ़ोतरी भी परिवार के मासिक बजट को हिला देती है। जो थाली पहले कुछ राहत देती थी, वह अब चिंता का कारण बन रही है। कई परिवारों में बाहर का खाना 'कभी-कभार का आनंद' था, लेकिन अब वह भी धीरे-धीरे कम होने लगा है। यह सिर्फ खाने की कीमत नहीं, जीवन की सहजता पर चोट है।

अंतरराष्ट्रीय घटनाएं भी अब सीधे घरेलू जीवन को प्रभावित करने लगी हैं। अमेरिका और ईरान जैसे देशों के बीच तनाव या युद्ध जैसी स्थितियां वैश्विक ऊर्जा बाजार को अस्थिर करती हैं। पेट्रोलियम उत्पादों की कीमतों में उतार-चढ़ाव का असर भारत जैसे आयात-निर्भर देश में तुरंत दिखाई देता है। कमर्शियल गैस सिलेंडर की कीमतें बढ़ती हैं तो उसका असर केवल होटल व्यवसाय तक सीमित नहीं रहता, बल्कि थोक और खुदरा दोनों स्तरों पर खाद्य महंगाई को बढ़ावा मिलता है। वैश्विक राजनीति का असर जब समोसे और पोहे तक पहुंचे, तो समझना चाहिए कि अर्थव्यवस्था कितनी गहराई से जुड़ी हुई है।

एक साधारण उदाहरण से बात और स्पष्ट हो जाती है। एक छोटा भोजनालय हर दिन 4 सिलेंडर खर्च करता है। यदि हर सिलेंडर पर कुछ सौ रुपये की बढ़ोतरी हो जाए, तो उसका मासिक खर्च हजारों रुपये बढ़ जाता है। वह इस बोझ को अपने लाभांश से नहीं झेल सकता, इसलिए उसे प्लेट के दाम बढ़ाने पड़ते हैं। फिर ग्राहक सोचता है कि वही थाली, जो कल तक सस्ती थी, आज क्यों महंगी हो गई। यह महंगाई का वह चक्र है जिसमें कोई भी कड़ी अलग नहीं, सब एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं। आम आदमी की सबसे बड़ी पीड़ा यही है कि उसकी जरूरतें स्थिर हैं, लेकिन खर्च लगातार बढ़ रहे हैं। उसे खाना भी चाहिए, बचत भी करनी है, बच्चों की पढ़ाई भी चलानी है और घर का किराया भी भरना है।

ऐसे में जब थाली पर ही महंगाई का तड़का लग जाए, तो जीवन का स्वाद फीका पड़ जाता है। वह थरथराने लगती है। यह स्थिति केवल आर्थिक ही नहीं, सामाजिक भी है। क्योंकि, इससे जीवन की छोटी-छोटी खुशियां महंगी होती जा रही हैं। सीमित आय वाला व्यक्ति अब शाम को घर लौटते समय अपने बच्चों के लिए कोई चीज लेने से पहले सोचने लगा। इसलिए आज जरूरत है कि सरकार, प्रशासन और बाजार तीनों मिलकर ऐसे उपाय करें, जिससे लागत का बोझ कम हो और उपभोक्ता पर अनावश्यक दबाव न पड़े। राहत केवल भाषणों से नहीं, ठोस नीति से मिलेगी। वरना यही हाल रहा तो आने वाले समय में लोग बाहर का खाना सिर्फ स्वाद के लिए नहीं, हिसाब लगाकर खाएंगे।

# नवागत कलेक्टर राजीव रंजन मीना के सख्त तेवर, विभाग प्रमुखों को चेताया, रहे अपडेट

## लापरवाह तहसीलदार दीपाली जाधव को थमाया नोटिस

**धार।** कलेक्टर कार्यालय में आयोजित समय-सीमा (टीएल) पत्रों की समीक्षा बैठक में नवागत कलेक्टर राजीव रंजन मीना का सख्त तेवर देखने को मिला। बैठक से गायब रहने वालीं तहसीलदार दीपाली जाधव को कलेक्टर ने तत्काल 'कारण बताओ' नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। वहीं, विभागीय गतिविधियों की जानकारी न होने पर पीजी कॉलेज धार के जिम्मेदार अधिकारी को भी कड़ी फटकार लगाई। कलेक्टर ने स्पष्ट कहा कि विभाग प्रमुख को अपनी हर गतिविधि की जानकारी होनी चाहिए।

**'कांटे बढ़ाएं, किसान को इंतजार न करना पड़े'-** कलेक्टर ने गेहूं खरीदी केंद्रों की स्थिति पर चिंता जताते हुए कहा कि केंद्रों पर किसानों की भीड़ जमा नहीं होनी चाहिए।

**फोकस-** डेहरी, बिड़वाल और कानवन केंद्रों पर मिली शिकायतों के बाद यहां प्रतिदिन मॉनिटरिंग के निर्देश दिए गए हैं।

**टारगेट-** जिन केंद्रों पर 80 प्रतिशत से कम खरीदी हुई है, वहां नोडल अधिकारी प्राथमिकता से काम करेंगे।

**'शाला त्यागी' बच्चों को दोबारा स्कूल लाएं**

शिक्षा विभाग की समीक्षा के दौरान कलेक्टर ने निर्देश दिए कि जो बच्चे स्कूल छोड़ चुके हैं, उन्हें चिन्हित कर दोबारा शिक्षा से जोड़ें।

**निरीक्षण-** सभी एसडीएम को जिले के छात्रावासों का औचक निरीक्षण करने को कहा गया है।

**सुविधा-** बालिका छात्रावासों के शौचालयों में पानी और साफ-सफाई से कोई समझौता नहीं होगा।

### 30 जून तक चलेगा विशेष अभियान

**जिले में 16 विभाग मिलकर जल स्त्रोतों के संरक्षण का काम कर रहे हैं।**

**सख्ती-** पीएचई को पानी की क्वालिटी टेस्टिंग और स्कूल शिक्षा विभाग को टंकियों की सफाई की डेट मार्किंग (टंकी पर सफाई की तारीख लिखना) अनिवार्य करने के निर्देश दिए।

**अमृत सरोवर-** कलेक्टर ने अमृत सरोवर प्रोजेक्ट की प्रोग्रेस रिपोर्ट भी तलब की है।

### कुपोषण के लिए होगा 'डोर टू डोर' सर्वे

स्वास्थ्य विभाग को निर्देश दिए गए कि एनीमिया और कुपोषण को जड़ से खत्म करने के लिए घर-घर जाकर सर्वे करें। मातृ मृत्यु दर की हर सप्ताह समीक्षा होगी। साथ ही, आयुष्मान कार्ड और जेएसवाई जैसी योजनाओं के पेंडिंग केस जल्द निपटाने को कहा।

### खास-खास

कलेक्टर ने कहा कि सीएसआर फंड की राशि का उपयोग बिना प्लानिंग और बिना एनओसी के नहीं होगा।

खेतों में आग लगाने (नरवाई) की घटनाओं पर अंकुश लगाने और कार्रवाई करने के निर्देश।

सीएम हेल्पलाइन विभागवार रैंकिंग सुधारने और शिकायतों को कैटेगरी के हिसाब से बांटकर हल करने के निर्देश।

लोक सेवा गारंटी और राजस्व के मामलों में समय-सीमा का उल्लंघन बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। जनता के काम पहली प्राथमिकता हैं।

बैठक में जिला पंचायत सीईओ अभिषेक चौधरी, अपर कलेक्टर संजीव केशव पाण्डेय सहित सभी जिला स्तर के अधिकारी मौजूद थे।

# कृषक कल्याण वर्ष 2026 अंतर्गत बी-पैक्स में नवीन सदस्यता अभियान एवं कालातीत ऋण वसूली हेतु शाखा प्रबंधकों को दिए निर्देश

## जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक धार में बैंक के समस्त शाखा प्रबंधकों की मासिक समीक्षा बैठक आयोजित की गई

**धार।** जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक धार में बैंक के समस्त शाखा प्रबंधकों की मासिक समीक्षा बैठक मुख्यालय सभाकक्ष में 9 मई को आयोजित की गई।

समीक्षा बैठक में बैंक मुख्य कार्यपालन अधिकारी के. के. रायकवार द्वारा सर्वप्रथम म.प्र. शासन द्वारा घोषित कृषि कल्याण वर्ष 2026 अंतर्गत बी-पैक्स संस्थाओं में अधिक से अधिक नवीन सदस्यता अभियान अंतर्गत लक्ष्य निर्धारित किये गये थे।

इस अभियान के अंतर्गत जिला बैंक धार द्वारा 5000 से अधिक नवीन सदस्यों को संस्था में सदस्यता ग्रहण कर पैक्स में जोड़ा गया तथा 15 मई 2026 तक निर्धारित लक्ष्य की पूर्ति हेतु सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ कार्य करने के निर्देश बैठक में उपस्थित समस्त शाखा प्रबंधकों को दिये गये है। संस्था के कालातीत सदस्यों की ऋण वसूली हेतु व्यक्तिगत संपर्क कर ऋण जमा करने हेतु समझाईश देने का अभियान चलाये जाने एवं शाखा प्रबंधक के साथ-साथ समस्त क्षेत्राधिकारी भ्रमण पर जाकर कालातीत सदस्यों से संपर्क स्थापित किये जाने तथा उन्हें ऋण जमा कर शासन की 0(शुन्य) प्रतिशत ब्याज दर पर योजना का लाभ लेने हेतु प्रेरित करने हेतु निर्देशित किया गया है। इसी के साथ अग्रिम खाद उठाने हेतु किसानों को अवगत कराने, खरीफ ऋण वितरण, कृषि ऋणों की मांग/वसूली, गेहूँ उपार्जन अंतर्गत समर्थन मुल्य लिकिंग से वसूली के कार्य, धारा 84-85 में कार्यवाही, क्रिश योजना के संबंध में विस्तार पूर्वक जानकारी दी जाकर नियत समयावधि में कार्य करने हेतु निर्देशित किया साथ ही समस्त शाखा प्रबंधकों को संस्थाओं की साप्ताहिक बैठक करने के निर्देश दिये गये। बैठक में सोनिया लाड प्रबंधक लेखा, सौरवसिंह समकारिया, विपणन अधिकारी, उज्जवल वर्मा, स्थापना प्रभारी, विकास लाड प्रभारी शाखा प्रबंधक, अंकित परमार, योजना एवं विकास प्रभारी एवं बैंक के समस्त शाखा प्रबंधक एवं मुख्यालय कर्मचारी उपस्थित रहे है।

# मूलनायक श्री शांतिनाथ भगवान का जन्म तप मोक्ष कल्याणक महामहोत्सव 15 मई को मनाया जाएगा

**धार ।** दिगंबर जैन समाज धार 15 मई शुक्रवार को दिगंबर जैन मंदिर धार के मूलनायक श्री शांतिनाथ भगवान का जन्म, तप और मोक्ष कल्याणक महा महोत्सव भव्य स्तर पर पूज्य माताजी 105 श्री चंद्रमति माताजी के पावन सानिध्य में मनाया जाएगा।

जानकारी देते हुए समाज अध्यक्ष श्रेणिक गंगवाल ने बताया कि इस पावन अवसर पर विशेष अभिषेक,शांतिधारा,शांतिनाथ महा मंडल विधान पूजन के पश्चात संध्या कालीन महाआरती लघु नाटिका मंचन का आयोजन किया जाएगा । इस महोत्सव के सभी कार्यक्रमों में निर्देशन इंदौर के प्रतिष्ठित विधानाचार्य पंडित भरत जी शास्त्री व पंडित विमल जी जैन शास्त्री का रहेगा। विधान पूजन में संगीत अनुभव जी जैन इंदौर के प्रसिद्ध संगीतकार द्वारा दिया जाएगा। जानकारी मीडिया प्रभारी संजय गंगवाल ने दी।

# बाइकें भिड़ीं, दो की मौत, परिजनों ने शव रखकर किया चक्काजाम

## आरोप - समय पर इलाज नहीं मिलने के कारण घायल ने तोड़ा दम

**बैतूल।** भैंसदेही क्षेत्र में रविवार रात दो बाइक में आमने-सामने जोरदार टक्कर हो गई। हादसे में दो युवकों की मौत हो गई, जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना के बाद सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भैंसदेही में इलाज में लापरवाही के आरोप लगाते हुए ग्रामीणों ने जमकर हंगामा किया और सडक़ पर शव रखकर चक्काजाम कर दिया। परिजन और ग्रामीण डॉक्टरों पर कार्रवाही की मांग कर रहे थे। आरोप है कि डॉक्टरों के समय पर उपचार नहीं किये जाने के कारण घायल की मौत हो गई। यदि सही समय पर उपचार मिल जाता तो घायल को बचाया जा सकता था। इधर सूचना मिलते ही एसडीएम, एसडीओपी, स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी सहित पुलिस मौके पर पहुंचे। अधिकारियों के आश्वासन के बाद हंगामा शांत हुआ। जानकारी के अनुसार, भैंसदेही-बरहापुर-झल्लार रोड पर दो बाइक आमने-सामने टकरा गईं। टक्कर इतनी जोरदार थी कि पोहर निवासी जगदीश पिता गणपति अडलक (40) की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं मालेगांव निवासी अंकुश पिता धनराज वाघमारे (22) को गंभीर हालत में अस्पताल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी भी मौत हो गई। हादसे में घायल मालेगांव निवासी भूपेंद्र पिता धर्मराज वाघमारे (22) और पोहर निवासी सुनीता जगदीश अड़लक (38) को प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल बैतूल रेफर किया गया है। जहां दोनों का इलाज जारी है।

**परिजन बोले- डॉक्टरों ने समय पर नहीं किया उपचार** - घटना के बाद मृतकों के परिजन और बड़ी संख्या में ग्रामीण सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचे। यहां डॉक्टरों और ग्रामीणों के बीच तीखी बहस हो गई। लोगों ने आरोप लगाया कि ड्यूटी पर मौजूद डॉक्टर ने गंभीर घायलों का समय पर उपचार नहीं किया। जिसके कारण उसकी मौत हो गई। मृतक अंकुश वाघमारे के पिता दिनेश वाघमारे ने आरोप लगाया कि डॉक्टर अपने केबिन में बैठे रहे और उनके बेटे को देखने तक नहीं आए। उनका आरोप है कि जब परिजनों ने डॉक्टर से विनती की, तो उन्होंने कहा खुद जाकर देख लो, कहकर नाराजगी जाहिर करने लगे। जिससे आक्रोशित लोगों ने सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के सामने बैठकर विरोध शुरू कर दिया। काफी देर रात तक हंगामा होते रहा।

### शव रखकर किया चक्काजाम

इलाज में लापरवाही से नाराज ग्रामीणों ने अस्पताल परिसर में विरोध प्रदर्शन किया और दोनों शवों को सडक़ पर रखकर चक्काजाम कर दिया। स्थिति बिगडऩे पर मौके पर एसडीएम अजीत मरावी, एसडीओपी और भारी पुलिस बल पहुंचा। भैंसदेही और आठनेर से भी अतिरिक्त पुलिस बल बुलाया गया। स्थानीय लोगों ने यह मुद्दा भी उठाया कि भैंसदेही जैसे बड़े स्वास्थ्य केंद्र में पूर्णकालिक बीएमओ (ब्लॉक मेडिकल ऑफिसर) की नियुक्ति नहीं है। वर्तमान में भीमपुर के बीएमओ डॉ. दीपक निगवाल को भैंसदेही का अतिरिक्त प्रभार दिया गया है, जिससे स्वास्थ्य व्यवस्था प्रभावित होने के आरोप लगाए जा रहे हैं।

### जानकारी मिलते ही भैंसदेही पहुंचे सीएमएचओ

मृतक के परिजनों और ग्रामीणों द्वारा विरोध प्रदर्शन किये जाने की सूचना मिलते ही सीएमएचओ मनोज हुरमाड़े रात्रि में ही भैंसदेही पहुंचे। सीएमएचओ ने मृतक के परिजनों और ग्रामीणों से चर्चा की। पूरे मामले की जानकारी हासिल करने के बाद मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (सीएमएचओ) डॉ. मनोज हुरमाड़े ने मामले की जांच कराने और उचित कार्रवाई का आश्वासन दिया। जिसके बाद ग्रामीण और परिजनों ने प्रदर्शन बंद किया। ग्रामीणों का आरोप है कि भैंसदेही सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में सुविधाएं उपलब्ध नहीं है। यहां डॉक्टरों की कमी के कारण ग्रामीणों को समय पर उपचार नहीं मिल पाता है। जिससे ग्रामीणों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

# मंगोनाकलां में बनेगा ओपन जिम, युवाओं को मिलेगा फिटनेस और स्वस्थ जीवन का नया मंच

**बैतूल / मुलताई।** प्रभात पट्टन विकासखंड के ग्राम मंगोनाकलां में अब ग्रामीण युवाओं को फिटनेस के लिए बेहतर सुविधा मिलने जा रही है। गांव में ओपन जिम निर्माण कार्य का भूमिपूजन किया गया। इस अवसर पर पूर्व मंत्री एवं मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष सुखदेव पांसे ने कहा कि ओपन जिम की सुविधा शुरू होने से गांव के युवक-युवतियां नियमित रूप से व्यायाम कर सकेंगे, जिससे स्वास्थ्य और खेल गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि यह पहल युवाओं को नशे से दूर रखकर स्वस्थ और सकारात्मक जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करेगी। उन्होंने बताया कि ग्राम मंगोनाकलां के युवा और ग्रामीण लंबे समय से ओपन जिम निर्माण की मांग कर रहे थे। ग्रामीणों की मांग को ध्यान में रखते हुए उन्होंने राज्यसभा सांसद विवेक तन्खा को इस संबंध में अवगत कराया। इसके बाद सांसद निधि से ग्राम मंगोनाकलां में ओपन जिम निर्माण के लिए 10 लाख रुपये की राशि स्वीकृत की गई। भूमिपूजन कार्यक्रम में सरपंच रीता महादेव बारस्कर, ब्लॉक कांग्रेस कमेटी मुलताई अध्यक्ष अरुण यादव, मिश्रीलाल धाकड़, नामदेव हरसुले, गौरव बारस्कर, हितेश झरबड़े, नरेंद्र बोडखे, सुभाष, योगेश सराटकर, गणेश वागद्रे, मनीष सहित बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

# जनगणना सोहागपुर ग्रामीण का 92 प्रतिशत कार्य पूर्ण, उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 6 सुपरवाइजर का सम्मान

**सोहागपुर।** जनगणना 2027 में ग्रामीण चार्ज सोहागपुर का 92 प्रतिशत कार्य पूर्ण करके निरंतर लक्ष्य की तरफ अग्रसर हो रहे हैं।इसी तारतम्य में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 06 सुपरवाइजर सम्मानित किए गए हैं। चार्ज अधिकारी एवं तहसीलदार आर के झरबड़े ने बताया कि भारत सरकार की जनगणना 2027 के प्रथम चरण अंतर्गत संचालित हाउस लिस्टिंग एवं हाउसिंग गणना कार्य में ग्रामीण चार्ज सोहागपुर के द्वारा उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त की है। जिसमें अब तक कुल 92 प्रतिशत कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया गया है। यह उपलब्धि सभी सुपरवाइजरों एवं प्रगणकों की मेहनत, समन्वय, कर्तव्यनिष्ठा एवं समयबद्ध कार्यप्रणाली का परिणाम है।ग्रामीण चार्ज सोहागपुर अंतर्गत सुपरवाइजर सर्किल क्रमांक 06, 15, 18, 22, 25 एवं 30 का कार्य निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण किया गया है। जिसमें उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए संबंधित सुपरवाइजर प्रवीण दुबे, मोनिश अवस्थी, राजन रघुवंशी, निखिलेश रघुवंशी, के. एस. धुर्वे एवं चंद्रकांत पालीवाल को तहसीलदार एवं चार्ज अधिकारी आरके झरबड़े ने प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गय तहसीलदार एवं चार्ज अधिकारी रामकिशोर झरवडे ने आगे कहा कि जनगणना जैसे राष्ट्रीय महत्व के कार्य में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों को सम्मानित एवं प्रोत्साहित करने से अन्य कार्मिकों को भी प्रेरणा मिलती है। उन्होंने सभी प्रगणकों एवं सुपरवाइजरों से अपेक्षा की कि वे इसी उत्साह, समर्पण एवं प्रतिबद्धता के साथ शेष कार्य भी शीघ्र पूर्ण करें। जिससे सोहागपुर ग्रामीण जनगणना 2027 जिले में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सके।

इस अवसर पर एसडीएम श्रीमती प्रियंका भल्लावी, फील्ड ट्रेनर विजेंद्र वर्मा, विपिन गिल्ला, जनगणना लिपिक,कानूनगो राहुल साहू, निर्वाचन प्रोग्रामर अमित मिश्रा सहित अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने समस्त सम्मानित सुपरवाइजरों को शुभकामनाएं एवं बधाई दी।

## संक्षिप्त समाचार

### शिविर लगाकर की गई हेपेटाइटिस बी एवं सी, एचआईवी तथा सिफलिस की जांच

**सीहोर (निप्र)।** राष्ट्रीय वायरल हेपेटाइटिस नियंत्रण कार्यक्रम अंतर्गत स्वास्थ्य विभाग द्वारा सीहोर में उच्च जोखिम समूह की जांच के लिए शिविर आयोजित किया गया। शिविर में 92 व्यक्तियों की हेपेटाइटिस बी एवं सी, एचआईवी तथा सिफलिस की जांच की गई। शिविर में डॉ रुचिरा उइके, पीयर सपोर्टर, आईसीटीसी काउंसलर, लैब तकनीशियन, परियोजना प्रबंधक उपस्थित थे।

### कलेक्टर श्री विश्वकर्मा की अध्यक्षता में ब्लैकआउट मॉकड्रिल की तैयारियों के संबंध में बैठक आयोजित

**रायसेन (निप्र)।** कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा की अध्यक्षता में नागरिक सुरक्षा के अंतर्गत रात्रि ब्लैकआउट मॉकड्रिल संबंधी कार्ययोजना के संबंध में कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में बैठक आयोजित की गई। बैठक का मुख्य उद्देश्य युद्ध, हवाई हमले या किसी अन्य राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान रोशनी को छिपाने के अभ्यास और विभिन्न विभागों के बीच समन्वय की जांच करना है। बैठक में बताया गया कि इस मॉकड्रिल को सुचारू और सुरक्षित रूप से संपन्न कराने के लिए विभागवार विस्तृत रूपरेखा तैयार की गई है। बैठक में अपर कलेक्टर श्री मनोज उपाध्याय, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री कमलेश कुमार, सहायक कलेक्टर श्री अंकित जैन सहित संबंधित विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में बताया गया कि मॉकड्रिल के दौरान जनता में दहशत न फैले, इसके लिए मॉकड्रिल से 2-3 दिन पहले समाचार पत्रों, रेडियो, टीवी और सोशल मीडिया के माध्यम से आमजन को मॉकड्रिल के बारे में पर्याप्त प्रचार प्रसार किया जाए। नागरिकों को बताया जाए कि सायरन बजते ही घर की सभी लाइटें बंद कर दें, खिड़कियों पर पर्दे डाल दें और सड़क पर वाहन रोककर उनकी हेडलाइट बंद कर दें। साथ ही किसी भी प्रकार की भ्रामक खबर या अफवाह को फैलने से रोकना भी जरूरी है।

### जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जल संरक्षण जागरूकता कार्यशाला आयोजित

**सीहोर (निप्र)।** जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत उद्यानिकी विभाग द्वारा बुधनी तहसील के ग्राम होलीपुरा में जागरूकता कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला का उद्देश्य कृषकों एवं आमजन को जल संरक्षण के महत्व, वर्षा जल संचयन तथा सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों के प्रति जागरूक करना था। कार्यशाला में किसानों को जल संरक्षण के व्यावहारिक उपायों, फसल जल प्रबंधन तथा उद्यानिकी फसलों में जल उपयोग दक्षता के संबंध में विस्तार से जानकारी दी गई। कृषकों को खेत स्तर पर जल संरक्षण हेतु ड्रिप सिंचाई, स्प्रिंकलर सिंचाई, मल्चिंग, फार्म पॉन्ड, एवं वर्षा जल संचयन जैसी तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर सरपंच श्री कमल सिंह ओझा सहित उद्यानिकी विभाग के अधिकारी और किसान उपस्थित थे।

### ग्रीष्म ऋतु को देखते हुए खाद्य सुरक्षा विभाग की कार्रवाई, 9 खाद्य नमूने जांच के लिए भेजे

**बैतूल (निप्र)।** जिला कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे के निर्देशानुसार एवं अभिहित अधिकारी श्री शैलेंद्र बडोनिया के मार्गदर्शन में खाद्य एवं औषधि प्रशासन विभाग द्वारा बगडोना तहसील घोड़ाडोंगरी के शहरी क्षेत्र में खाद्य प्रतिष्ठानों की जांच कार्रवाई की गई। खाद्य सुरक्षा अधिकारी श्री संदीप पाटिल एवं श्री पुरुषोत्तम भंडुरिया द्वारा ग्रीष्म ऋतु को दृष्टिगत रखते हुए बजरंग जूस सेंटर से विभिन्न प्रकार के जूस के कुल 6 नमूने संग्रहित किए गए। वहीं उत्सव किराना स्टोर से हल्दी, मिर्ची एवं धनिया के 3 नमूने लिए गए। इस प्रकार कुल 9 खाद्य नमूने जांच हेतु राज्य खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला भेजे जा रहे हैं। जांच के दौरान खाद्य प्रतिष्ठानों को साफ-सफाई बनाए रखने तथा खाद्य सुरक्षा मानकों का पालन करने के निर्देश दिए गए। अधिकारियों ने बताया कि खाद्य पदार्थों की जांच रिपोर्ट प्राप्त होने के बाद नियमानुसार आगामी वैधानिक कार्रवाई की जाएगी। विभाग द्वारा जांच अभियान निरंतर जारी रहेगा।

### जिला अस्पताल में रक्तदान शिविर आयोजित

**सीहोर (निप्र)।** विश्व थैलेसीमिया दिवस के अवसर पर सीहोर जिला अस्पताल में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। शिविर में डॉक्टर्स, स्टाफ व समाजसेवी संस्थाओं के सदस्यों ने रक्तदान किया। शिविर में लगभग 40 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया। सिविल सर्जन डॉ यूके श्रीवास्तव ने बताया कि थैलेसीमिया से जूझ रहे मरीजों को नियमित रूप से रक्त की आवश्यकता होती है। इसी संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से यह रक्तदान शिविर आयोजित किया गया, ताकि नागरिकों को रक्तदान के लिए प्रेरित किया जा सके। शिविर में श्रीमती अरूणा राय, सिविल सर्जन डॉ यूके श्रीवास्तव, उंगली रक्तदान ग्रुप के सदस्यों और अस्पताल के डॉक्टर्स एवं स्टॉफ ने रक्तदान कर जीवन बचाने का संदेश दिया। इस अवसर पर डॉ यश सक्सैना, श्रीमती भारती पठारीया, श्री अंबर मालवीय, श्री अंशू, श्रीमती प्रियंका रघुवंशी, श्री धर्मेन्द्र, श्री निर्मल कचनेरीया सहित स्टॉफ उपस्थित था।

### एसडीएम श्री विजय राय की अध्यक्षता में किसान हित के संबंध में समीक्षा बैठक आयोजित

**नर्मदापुरम (निप्र)।** अनुविभागीय अधिकारी राजस्व कार्यालय में अधीक्षण यंत्री नहर विभाग सहित विभिन्न विभागों के अधिकारियों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में एसडीएम विजय राय द्वारा विभागीय कार्यों की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। बैठक के दौरान एसडीएम श्री राय ने निर्देशित किया कि किसानों को वर्तमान कृषि कार्यों के दौरान किसी भी प्रकार की असुविधा न हो तथा उनकी समस्याओं का समय-सीमा में प्रभावी निराकरण सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने विशेष रूप से नहरों में सुचारू जल प्रवाह बनाए रखने, खाद की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने एवं उपार्जन केंद्रों की व्यवस्थाओं को व्यवस्थित एवं सुचारू बनाए रखने पर जोर दिया। एसडीएम श्री राय ने कहा कि किसानों को शासन की योजनाओं का लाभ निर्बाध रूप से प्राप्त हो तथा उन्हें किसी भी स्तर पर परेशानी का सामना न करना पड़े, इसके लिए सभी विभाग समन्वय के साथ कार्य करें।

# प्रभारी मंत्री श्री पंवार की अध्यक्षता में जिला विकास सलाहकार समिति की बैठक संपन्न

**रायसेन (निप्र)।** जिला विकास सलाहकार समिति की बैठक मछुआ कल्याण एवं मत्स्य विकास विभाग मंत्री तथा जिले के प्रभारी मंत्री श्री नारायण सिंह पंवार की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में संपन्न हुई। बैठक में सांची विधायक डॉ प्रभुराम चौधरी, भोजपुर विधायक श्री सुरेंद्र पटवा, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री यशवंत मीणा, पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री रामपाल सिंह, जनपद अध्यक्ष सांची श्रीमती अर्चना पोर्ते, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती सविता सेन, कलेक्टर श्री अरुण कुमार विश्वकर्मा, एसपी श्री आशुतोष गुप्ता, जिला पंचायत सीईओ श्री कमल सोलंकी तथा श्री राकेश शर्मा सहित जिला विकास सलाहकार समिति के सदस्यगण तथा संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक के प्रारंभ में प्रभारी मंत्री श्री पंवार ने कहा कि रायसेन जिला भोपाल के समीप है और इसे भोपाल का हिस्सा ही माना जाता है। रायसेन जिले का विकास भी इसी तर्ज पर हो रहा है। विगत कुछ माह में रायसेन में राष्ट्रीय स्तर के सांसद खेल महोत्सव, उन्नत कृषि महोत्सव सहित विभिन्न कार्यक्रम हुए हैं, जिनका लाभ जिले को मिला है। इसके अलावा रायसेन किले पर रोप-वे के निर्माण को भारत सरकार की अनुमति मिल गई है, मेडिकल कॉलेज का भी निर्माण होना है। रायसेन जिला पर्यटन की दृष्टि से भी बहुत प्रसिद्ध है। जिले में हर क्षेत्र में विकास की अपार संभावनाएं है और इसके दृष्टिगत कार्य भी किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि शासन की नीति है प्रत्येक विकासखंड में एक बेहतर खेल मैदान हो, इसके लिए भी कार्य किया जाए। राजस्व विभाग की समीक्षा करते हुए उन्होंने सीमांकन, नामांतरण, बंटवारा आदि प्रकरणों के निराकरण में लापरवाही नहीं बरतने की हिदायत देते हुए कहा कि नागरिकों को बार-बार कार्यालयों के चक्कर ना लगाना पड़े। इसी प्रकार खाद्य आपूर्ति, ऋण वसूली आदि पर भी ध्यान देने के निर्देश दिए। उन्होंने नगरीय क्षेत्रों में अभियान चलाकर अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिए। पीएचई विभाग की समीक्षा के दौरान उन्होंने पेयजल संसाधन जीवित करने के निर्देश देते हुए कहा है नागरिकों को पेयजल की समस्या ना हो इसके लिए योजना बनाकर कार्य करें। उन्होंने गन्ने की फसल हेतु खाद की उपलब्धता सुनिश्चित करने, ग्राम पंचायतों में विद्युत कनेक्शन आदि के संबंध में भी दिशा निर्देश दिए। उन्होंने जनपद सीईओ को पांचवे वित्त की राशि से मुक्तिधाम में शेड लगवाने के निर्देश दिए। बैठक में प्रभारी मंत्री ने जिले में उपार्जन कार्य और किसानों को राशि भुगतान की जानकारी लेते हुए निर्देश दिए कि उपार्जन केंद्रों पर तौल कांटों की संख्या बढ़ाई जाएं तथा किसानों को राशि भुगतान की कार्यवाही शीघ्रता से की जाए। साथ ही किसानों को अपनी उपज विक्रय में कठिनाई ना हो, इसके लिए उपार्जन केंद्रों पर बेहतर इंतजाम हों। उन्होंने जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में किए जा रहे कार्यों की भी समीक्षा कर दिशा-निर्देश दिए।

### निराकरण हेतु प्रभारी मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए

बैठक में विधायकगणों तथा जनप्रतिनिधियों द्वारा विभिन्न समस्याओं की ओर ध्यान भी आकृष्ट कराया, जिनके निराकरण हेतु प्रभारी मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए। बैठक में सांची विधायक डॉ प्रभुराम चौधरी ने सांची पेयजल परियोजना, गैरतगंज सिविल अस्पताल, गौशालाओं को संचालन हेतु स्व सहायता समूहों को देने सहित अन्य विषयों की ओर ध्यान आकृष्ट कराया। भोजपुर विधायक श्री सुरेंद्र पटवा ने औबेदुल्लागंज, बाड़ी और सुल्तानपुर में प्रधानमंत्री आवास योजना के क्रियान्वयन, सुल्तानपुर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के रेनोवेशन सहित अन्य विषयों की ओर ध्यान आकृष्ट कराया। बैठक में अपर कलेक्टर श्री मनोज उपाध्याय, डिप्टी कलेक्टर, अनेक विभागों के जिला अधिकारी उपस्थित रहे। प्रभारी मंत्री द्वारा प्रदाय किए प्रमाण पत्र प्रभारी मंत्री द्वारा रायसेन जिले के सभी एसडीएम कार्यालय, तहसीलदार कार्यालय और नायब तहसीलदार कार्यालय आईएसओ सर्टीफाइड होने पर संबंधित अधिकारियों को आईएसओ सर्टीफाइड प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। इसके साथ ही जनगणना-2027 में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों-कर्मचारियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। बच्चो को फूड बॉस्केट किट वितरित प्रदेश के मछुआ कल्याण एवं मत्स्य विकास विभाग राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा जिले के प्रभारी मंत्री श्री नारायण सिंह पंवार सांची विधायक डॉ प्रभुराम चौधरी तथा भोजपुर विधायक श्री सुरेंद्र पटवा सहित अन्य जनप्रतिनिधियों द्वारा आज कलेक्ट्रेट कार्यालय में बच्चों को पोषण आहार युक्त फूड बॉस्केट वितरित किए गए। इस दौरान कलेक्टर श्री अरुण कुमार विश्वकर्मा ने रायसेन जिले को कुपोषण मुक्त बनाने शुरू किए गए जनसहयोग से जरूरतमंद बच्चों को फूड बॉस्केट वितरित करने के अभियान की प्रगति से अवगत कराया।

**माचना नदी को जलकुम्भी से मुक्त करने उठे सैंकडों हाथ**

## स्वस्थ जीवन के लिए नदियों का स्वच्छ होना आवश्यक : मोहन नागर

**बैतूल (निप्र)।** जल गंगा संवर्धन अभियान के अन्तर्गत बैतूल की जीवनदायिनी नदी माचना को जलकुम्भी से मुक्त करने के लिए अब बड़ी संख्या में नागरिक श्रमदान के लिए आगे रहें हैं। शनिवार को सदर क्षेत्र के माचना घाट पर सैंकड़ों नागरिकों ने माचना स्वच्छता अभियान में सहभागिता की।

नागरिकों के नियमित श्रमदान व नगरपालिका द्वारा पोकलेन और जेसीबी मशीनों के सहयोग से सदर क्षेत्र में माचना जलकुम्भी मुक्त होकर नदी में पानी दिखने लगा है। नदी स्वच्छता के इस नियमित अभियान में प्रातः 7 बजे से ही लोग श्रमदान के लिए आने लगे हैं। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद की जिले भर की प्रस्फुटन, परामर्श दाता व नवांकुर समितियों के सदस्य, पारदी ढाना बस्ती के युवाजन, ग्रीन टाइगर्स के सदस्य, माचना जन्मोत्सव समिति ,स्वस्ति सेवा समिति ,बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ, शारदा समिति,ओम विजन,आईइसी, प्रदीपन, अंश सेवा समिति, भूपेंद्र बाल एवं महिला समिति, ग्रीन सिटी सहित अनेक संगठनों के श्रमदानियों ने नदी से जलकुम्भी निकालने में अपना योगदान दिया।

**जिला विकास सलाहकार समिति की बैठक सम्पन्न**

**बैतूल (निप्र)।** लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री तथा जिले के प्रभारी मंत्री श्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने कहा कि जिला विकास सलाहकार समिति के सदस्यों द्वारा जनहित में दिए गए महत्वपूर्ण सुझावों पर प्रभावी क्रियान्वयन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि पेयजल समस्या से प्रभावित ग्रामों में बोरिंग, मरम्मत एवं अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं कर जल आपूर्ति सुचारू बनाई जाए तथा जल संरक्षण एवं संवर्धन के कार्यों को बढ़ावा देकर जिले में पेयजल समस्या का स्थायी समाधान सुनिश्चित किया जाए।

शनिवार को प्रभारी मंत्री श्री पटेल की अध्यक्षता में जिला विकास सलाहकार समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में केंद्रीय राज्यमंत्री जनजातीय कार्य श्री दुर्गादास उईके, प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक बैतूल श्री हेमन्त खंडेलवाल,विधायक भैंसदेही श्री महेंद्र सिंह चौहान, विधायक मुलताई श्री चंद्रशेखर देशमुख, विधायक आमला डॉ योगेश पंडाग्रे, विधायक घोड़ाडोंगरी गंगाबाई उईके, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री राजा पवार, जिला विकास सलाहकार समिति सदस्य श्री सुधाकर पवार, कलेक्टर डॉ सौरभ संजय सोनवणे, पुलिस अधीक्षक वीरेंद्र जैन सहित समिति सदस्य एवं विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे। प्रभारी मंत्री श्री पटेल ने मुख्यमंत्री वृंदावन ग्राम योजना की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि जिले की सभी विधानसभा क्षेत्रों में चिन्हित ग्रामों में योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन कर सभी योजनाओं में सेचुरेशन लाया जाए। उन्होंने जल संरक्षण, सड़क निर्माण, उपार्जन, बिजली व्यवस्था एवं खाद वितरण से जुड़े समिति सदस्यों के सुझावों को शीघ्र अमल में लाने के निर्देश दिए। उपार्जन एवं खाद वितरण की समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि केंद्रों पर किसानों के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित रहें। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री द्वारा किसानों की स्लॉट बुकिंग एवं खाद वितरण संबंधी समस्याओं का समाधान किया गया है और अधिकारियों को निर्देशित किया कि किसानों को किसी प्रकार की परेशानी न हो। केंद्रीय मंत्री श्री दुर्गादास उईके ने जिले में स्वीकृत निर्माण कार्यों को शीघ्र प्रारंभ कर गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूर्ण करने के निर्देश दिए।

## जनहित के महत्वपूर्ण सुझावों पर होगा प्रभावी अमल : प्रभारी मंत्री श्री पटेल

## शासकीय आईटीआई द्वारा सामूहिक प्रचार प्रसार किया गया

**विदिशा (निप्र)।** विदिशा जिले की समस्त शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थाओं (आईटीआई) ने सत्र 2026-27 हेतु आज शनिवार को एमपी बोर्ड द्वारा आयोजित पूरक परीक्षा केंद्रों पर परीक्षा उपरांत छात्र-छात्राओं को शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था आईटीआई में प्रवेश हेतु पम्पलेट बांटकर आईटीआई में संचालित व्यवसायों की जानकारी देकर सामूहिक रूप से प्रचार प्रसार किया गया। छात्र छात्राओं को बताया गया कि शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था में प्रशिक्षण प्रशिक्षणार्थियों को व्यावहारिक तकनीकी ज्ञान प्रदान करता है, जिससे उन्हें रोजगार एवं स्वरोजगार के बेहतर अवसर प्राप्त होते हैं। साथ ही प्रशिक्षण उपरांत अप्रेंटिसशिप एवं प्लेसमेंट की सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाती हैं।

### कलेक्टर ने विभिन्न विभागीय कार्यों की समीक्षा कर दिए आवश्यक निर्देश

**विदिशा (निप्र)।** कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने आज आयोजित राजस्व अधिकारियों की समीक्षा बैठक में विभिन्न विभागों से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए हैं। बैठक में शासन की प्राथमिकता वाली योजनाओं एवं जनहित से जुड़े मुद्दों की प्रगति की समीक्षा की गई। कलेक्टर श्री गुप्ता ने बैठक में सबसे पहले नरवाई प्रबंधन के संबंध में गत वर्ष की गई कार्यवाही की जानकारी ली गई। अधिकारियों द्वारा बताया गया कि किसानों को जागरूक करने, फसल अवशेष प्रबंधन के लिए मशीनों की उपलब्धता तथा नरवाई जलाने की घटनाओं पर नियंत्रण हेतु व्यापक अभियान चलाया गया था। कलेक्टर ने आगामी सीजन को ध्यान में रखते हुए अभी से कार्ययोजना तैयार करने एवं किसानों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करने के निर्देश दिए। इसके पश्चात जनगणना कार्यों की तैयारियों एवं प्रगति पर चर्चा की गई। कलेक्टर ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि जनगणना कार्य में किसी प्रकार की लापरवाही न हो तथा निर्धारित समय-सीमा में सभी तैयारियां पूर्ण की जाएं। उन्होंने मैदानी अमले के प्रशिक्षण एवं आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने पर भी बल दिया। बैठक में जल आपूर्ति व्यवस्था की भी समीक्षा की गई। गर्मी के मौसम को देखते हुए ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति सुचारू बनाए रखने के निर्देश दिए गए। कलेक्टर ने कहा कि जहां भी पेयजल संकट की संभावना हो वहां तत्काल वैकल्पिक व्यवस्था सुनिश्चित की जाए तथा खराब हैंडपंप एवं पाइपलाइन सुधार कार्य प्राथमिकता से कराए जाएं।

## नेशनल लोक अदालत में 1716 प्रकरणों का निराकरण, 21 यूनिट रक्त संग्रहित

**विदिशा (निप्र)।** जिला विधिक सेवा प्राधिकरण एवं जिला न्यायालय विदिशा के तत्वावधान में आज जिला एवं तहसील स्तर पर नेशनल लोक अदालत का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिला न्यायालय परिसर विदिशा में रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया, जिसमें उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए 21 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री शेख सलीम के मार्गदर्शन तथा श्री जी.सी. शर्मा, विशेष न्यायाधीश एवं जिला समन्वयक नेशनल लोक अदालत के कुशल निर्देशन में आयोजित इस लोक अदालत में विभिन्न प्रकार के लंबित एवं प्रीलिटिगेशन प्रकरणों का आपसी सहमति से निराकरण किया गया। जिला मुख्यालय विदिशा में नेशनल लोक अदालत का शुभारंभ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। कार्यक्रम में प्रधान न्यायाधीश कुटुंब न्यायालय श्री आयुषोष मिश्र, विशेष न्यायाधीश श्री जी.सी. शर्मा, जिला अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष श्री संतोष शर्मा, सचिव श्री राजेन्द्र सिंह दांगी सहित न्यायिक अधिकारी, अधिवक्तागण, स्टॉफ एवं पत्रकारगण उपस्थित रहे।

## पानी प्रकृति का वरदान है, आने वाली पीढ़ी के लिए इसे सहेजना होगा: प्रभारी मंत्री श्री पंवार

**जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत प्रभारी मंत्री ने श्रमदान कर की तालाब की सफाई**

**रायसेन (निप्र)।** प्रदेश के मछुआ कल्याण एवं मत्स्य विकास विभाग राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा जिले के प्रभारी मंत्री श्री नारायण सिंह पंवार द्वारा रायसेन स्थित पूरन तालाब पर जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रम में सहभागिता की गई।

कार्यक्रम में प्रभारी मंत्री श्री पंवार, सांची विधायक डॉ प्रभुराम चौधरी, भोजपुर विधायक श्री सुरेंद्र पटवा, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री यशवंत मीणा, पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री रामपाल सिंह सहित अन्य जनप्रतिनिधियों तथा कलेक्टर श्री अरुण कुमार विश्वकर्मा द्वारा श्रमदान कर तालाब की साफ सफाई की गई। इस अवसर पर प्रभारी मंत्री श्री पंवार ने कहा कि पानी प्रकृति का वरदान है, आगे आने वाली पीढ़ी के लिए हमे पानी को बचाकर रखना होगा। इसके लिए हमें हमारे संसाधनों, जल स्त्रोतों को सहेजना जरूरी है। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव द्वारा शुरू किया गया जल गंगा संवर्धन अभियान जल स्त्रोतों के संरक्षण के साथ ही बारिश की बूंद-बूंद को सहेजने का अभियान है। गुड़ी पड़वा से शुरू हुआ यह अभियान 30 जून तक चलेगा। प्रभारी मंत्री श्री पंवार ने कहा कि आज पानी को सहेजना अति आवश्यक है। 21वीं सदी में पानी के महत्व को ध्यान में रखते हुए सभी को पानी बचाने का प्रयास करना होगा। इसके लिए पानी के स्त्रोतों को रीचार्ज करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि प्राचीन काल से तालाब निर्माण होता आ रहा है। जिनमें 12 महीने के लिए पानी सहेजा जाता था। वर्तमान में पानी का संकट गहराता जा रहा है।

आज विज्ञान उन्नत है। जिसका उपयोग करते हुए जल संरचनाओं को मजबूत करना है। प्रभारी मंत्री श्री पंवार ने कहा है प्रकृति को बचाने के लिए अधिक से अधिक पेड़ लगाएं, पार्क स्थापित किए जाएं और पर्यटन स्थल की तरह इनका विकास हो। साफ सफाई हो, स्वच्छता रहे। बारिश के पानी को सहेजना के लिए शासकीय भवनों के साथ ही निजी भवनों में भी वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम होना जरूरी है। इस अवसर पर सांची विधायक डॉ प्रभुराम चौधरी ने कहा कि जल गंगा संवर्धन अभियान पुराने जल स्त्रोतों की साफ सफाई और संरक्षण का अभियान है। जिससे की प्राचीन जल स्त्रोतों को पुनर्जीवित किया जा सके। उन्होंने कहा कि पूरन तालाब प्राचीन तालाब है, अभियान के तहत यहां तालाब की पिचिंग की गई है तथा बाउंड्रीवॉल बनाई गई है।

उन्होंने कहा कि अभियान के तहत प्राचीन जल स्त्रोतों की साफ सफाई के साथ ही सोख पिट आदि का निर्माण भी किया जा रहा है। सामूहिक रूप से श्रमदान कर जल स्त्रोतों की साफ-सफाई की जा रही है। कार्यक्रम में नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती सविता सेन ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर सांची जनपद अध्यक्ष श्रीमती अर्चना पोर्ते, पुलिस अधीक्षक श्री आशुतोष गुप्ता, जिला पंचायत सीईओ श्री कमल सोलंकी, श्री राकेश शर्मा सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि और अधिकारी भी उपस्थित रहे।

### 101 पुलिस अधिकारियों-कर्मचारियों को मिले रुस्तमजी अवॉर्ड

# सीएम ने पुलिस अधिकारियों को के.एफ. रुस्तमजी पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया

## जिले में पुलिसकर्मी ले सकेंगे आवास, सीएम बोले- हाउसिंग बोर्ड, प्राधिकरणों से मैं बात करूंगा

**भोपाल (नप्र)।** भोपाल के रविंद्र भवन में सोमवार को आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने केएफ रूस्तमजी पुरस्कार से पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों को अलंकृत किया गया। यह सम्मान साल 2019-20 और 2021-22 की अवधि में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए प्रदान किया गया है।

पुलिस के 101 अधिकारियों और कर्मचारियों को सीएम डॉ मोहन यादव ने डीजीपी कैलाश मकवाना के साथ सम्मानित किया। इस दौरान मंच पर एडीजी चंचल शेखर, आदर्श कटियार मौजूद थे।

इस दौरान सीएम ने कहा- पुलिस के जवानों को जिले के अंदर जहां उनकी पात्रता है, अगर वो आवास लेना चाहे तो वहां हाउसिंग बोर्ड, प्राधिकरण से मैं बात करने वाला हूं कि हमारे जवानों को भी आवास दीजिए। उनकी चिंता करना हमारी सरकार की आवश्यकता है।

**2013 से शुरू हुआ रुस्तमजी पुलिस अवॉर्ड-** समारोह को संबोधित करते हुए डीजीपी कैलाश मकवाना ने कहा-2013 से स्थापित रुस्तम जी पुरुस्कार जो हमारे 101 पुलिस अधिकारी-कर्मचारियों को दिया जाएगा। यह पुरुस्कार 2019-20 और 2021-22 के दिए जा रहे हैं।

शासन की स्वीकृतियों के बाद बजट और लायसेंस बनाने की प्रक्रिया भी पालन कराई गई। जब से यह पुरुस्कार शुरू हुआ है। उसके बाद 418 पुलिस अधिकारियों को आज तक पुरुस्कृत किया जा चुका है।

इनमें दस्यु उन्मूलन, नक्सल विरोधी अभियान, दंगे या तनाव रोकने, कानून व्यवस्था की गंभीर परिस्थितियों को नियंत्रण करने में वीरता के प्रदर्शन और व्यवसायिक दक्षता के प्रदर्शन में यह पुरुस्कार दिए जाते हैं।

### तीन श्रेणियों में यह पुरुस्कार दिए गए

- परम विशिष्ट श्रेणी में पांच लाख रुपए या हथियार दिया जाएगा। इस श्रेणी में 7 अधिकारी सम्मानित किए जा रहे हैं।
- अति विशिष्ट जिसमें दो लाख रुपए या हथियार दिया जाएगा। इसमें आठ पुरुस्कार दिए जा रहे हैं।
- विशिष्ट श्रेणी में 50 हजार रुपए अधिकारी को बतौर सम्मान दिए गए। इस श्रेणी के 86 अधिकारी सम्मानित किए जा रहे हैं।

### सीएम बोले- सम्मान कर गर्व महसूस हो रहा

समारोह में मौजूद पुलिस के अधिकारियों और कर्मचारियों को संबोधित करते हुए सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा कि चूंकि गृह विभाग उनके पास है, इसलिए उनका मन भी ऊंचाइयों तक पहुंच रहा है। उन्होंने कहा कि सभी ने जो साहस दिखाया है और जिस दिन उन्होंने पुलिस में भर्ती होकर मेहनत की थी, उसका आज सम्मान करते हुए गर्व महसूस हो रहा है। उन्होंने कहा कि पहले दो साल के पुरस्कार दिए जाते थे, अब कोशिश की जाएगी कि हर साल पुरस्कार दिए जाएं ताकि पेंडिंग न रहें। क्योंकि कुछ लोगों को रिटायरमेंट के बाद पुरस्कार मिला है, जिससे उनके मन में यह कसक रह सकती है कि यह सम्मान सेवा के दौरान मिलना चाहिए था।

### हमारी पुलिस हर चुनौती से निपटने में सक्षम

सीएम ने कहा कि रुस्तमजी अद्भुत व्यक्तित्व के धनी रहे हैं। उस दौर में जब मध्यप्रदेश कई राज्यों में बंटा हुआ था, तब हर जिले में पुलिस लाइन सहित तमाम व्यवस्थाओं को मजबूत करने में उनका योगदान रहा।उन्होंने कहा कि पुलिस ने डकैतों को समाप्त कर देश को संदेश दिया है कि हमारी पुलिस हर चुनौती से निपटने में सक्षम है, जैसे इस साल नक्सलवाद से निपटकर गौरव की अनुभूति हुई है।सीएम ने कहा कि इतने बड़े भौगोलिक क्षेत्र और चुनौतियों के बावजूद कानून व्यवस्था बनाए रखने में पुलिस की बड़ी भूमिका है। उन्होंने बताया कि अब डीजी से नीचे तक के अधिकारियों को पुरस्कार देने की सीमा बढ़ा दी गई है, जिससे डीजी अब 25 हजार की जगह 50 हजार तक का पुरस्कार दे सकेंगे। उन्होंने कहा कि पुलिस विभाग में नवाचार और परंपरा में बदलाव के लिए सरकार पूरी तरह सहयोग के लिए तैयार है।

सीएम ने 1992 का जिक्र करते हुए कहा कि उस समय पुलिस पर खतरा अधिक था, लेकिन अब परिस्थितियां बदल चुकी हैं। उन्होंने कहा कि हथियार और आतंक से संविधान और कानून को डराना संभव नहीं है।उन्होंने बताया कि 2026 में पुलिस में 10 हजार भर्ती की जाएगी, जिसमें सब इंस्पेक्टर से लेकर अन्य पद शामिल होंगे। इसके बाद करीब 5-6 हजार पद ही शेष रहेंगे।उन्होंने यह भी कहा कि जिला पुलिस बल में पुलिस बैंड की भर्ती निकाली गई है और जवानों के आवास की व्यवस्था के लिए हाउसिंग बोर्ड और प्राधिकरण से बातचीत कर उन्हें आवास उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाएगा।

### 'मैं पुलिस में सिलेक्ट हुआ तो पिता बोले- बेटा खाकी की सेवा करेगा'

डीजीपी ने कहा- जब 1988 में मेरा पुलिस में चयन हुआ तो उन्हें इस बात पर बहुत गर्व हुआ कि जिस खाकी की सेवा वो नहीं कर पाए वो खाकी में सेवा का काम उनका पुत्र करेगा। 1958 से 1965 तक रुस्तमजी प्रदेश के पुलिस मुखिया रहे। दस्यु उन्मूलन में उन दिनों उत्कृष्ट काम हुआ।1965 में जब वे प्रदेश से गए तो इंडो पाक वॉर के परिप्रेक्ष्य में बीएसएफ का गठन हुआ और वे बीएसएफ के फाउंडर डीजी रहे। एलीट फोर्स जो लगातार इंटरनल सिक्योरिटी फोर्स में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। उसमें उनका बड़ा रोल है।

### सीएम यादव के नेतृत्व में प्रदेश को कई उपलब्धियां हासिल हुईं

डीजीपी ने कहा- हमारे मुख्यमंत्री जो प्रदेश के गृह मंत्री भी हैं उनके नेतृत्व में प्रदेश ने कई अभूतपूर्व सफलताएं अर्जित कीं। 11 दिसंबर 2025 को प्रदेश को नक्सल मुक्त कराया। डायल 112 सेवा की शुरुआत की। पुलिस बल की कमी को दूर करने पिछले साल 7500 कॉन्स्टेबल को मिलाकर 8500 पदों पर भर्ती को मंजूरी दी। इस महीने तक सभी पदों पर जॉइनिंग हो जाएगी।10 हजार से ज्यादा पदों पर भर्ती की मंजूरी हमें जल्दी मिलने की संभावना है क्योंकि सिंहस्थ 2028 एक बहुत बड़ी चुनौती है। हमें फोर्स को भर्ती करके ट्रेनिंग देकर ग्राउंड पर पहुंचाना बहुत जरुरी है। सिंहस्थ की तैयारियां जारी हैं।

डीजीपी ने कहा- कम्युनिटी पुलिसिंग में पिछले साल नशे से दूरी है जरूरी में लाखों स्टूडेंट्स ने हिस्सा लिया। अगले तीन सालों में प्रदेश को नारकोटिक्स ड्रग्स से मुक्त कराना एक टारगेट है। उसमें सुनियोजित ढंग से आगे बढ़ने की आवश्यकता है।

# मोहन कैबिनेट के मंत्रियों का बढ़ेगा स्वेच्छानुदान

## राज्यमंत्री अभी दो करोड़ का स्वेच्छानुदान करते हैं खर्च, तीन करोड़ तक बढ़ सकती है राशि

**भोपाल (नप्र)।** मोहन यादव सरकार सोमवार को प्रदेश के राज्य मंत्रियों के स्वेच्छानुदान की राशि बढ़ाए जाने के मामले में फैसला करेगी। अभी राज्य मंत्रियों के लिए दो करोड़ रुपए का स्वेच्छानुदान तय है, जिसे बढ़ाकर तीन करोड़ रुपए किया जा सकता है।

मोहन कैबिनेट में आज एजेंडे में राज्य मंत्रियों के स्वेच्छानुदान बढ़ाने को लेकर प्रस्ताव है लेकिन माना जा रहा है कि इसमें कैबिनेट मंत्रियों के स्वेच्छानुदान बढ़ाने को भी मंजूरी मिल सकती है।

कैबिनेट बैठक शुरू हो गई है। इसमें वित्त, जल संसाधन, लोक निर्माण, विधि, स्वास्थ्य एवं सामाजिक न्याय सहित कई विभागों के महत्वपूर्ण प्रस्तावों पर चर्चा कर निर्णय लिया जाएगा। इस बैठक के जो प्रमुख एजेंडे हैं, उसमें लोक वित्त पोषित योजनाओं और परियोजनाओं के लिए 16वें केंद्रीय वित्त आयोग की अवधि (1 अप्रैल 2026 से 31 मार्च 2031) तक निरंतरता की स्वीकृति देने संबंधी प्रस्ताव प्रमुख हैं। इसके तहत 500 करोड़ रुपये से अधिक और कम लागत वाली विभिन्न योजनाओं को जारी रखने पर विचार होगा।

### कैबिनेट में इन मुद्दों को भी मिलेगी मंजूरी

जल संसाधन विभाग की ओर से खुमानसिंह शिवाजी जलाशय (ठिकरिया तालाब) सूक्ष्म सिंचाई परियोजना की प्रशासनिक स्वीकृति का प्रस्ताव रखा जाएगा। इसके अलावा विभागीय अधिकारियों के खिलाफ पेंशन नियमों के अंतर्गत विभागीय जांच से जुड़े मामलों पर भी चर्चा होगी।

सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा राज्य मंत्रियों को दिए जाने वाले स्वेच्छानुदान की राशि से संबंधित प्रस्ताव और सेवानिवृत्त अधिकारी को संविदा नियुक्ति देने का विषय भी एजेंडे में शामिल है।

लोक निर्माण विभाग की ओर से शहरी एवं नगरीय मार्गों के नव निर्माण, उन्नयन और सड़कों के सुदृढ़ीकरण संबंधी योजनाओं को 16वें वित्त आयोग की अवधि तक जारी रखने का प्रस्ताव रखा जाएगा।

विधि एवं विधायी कार्य विभाग ने जबलपुर स्थित उच्च न्यायालय परिसर में मल्टीलेवल वाहन पार्किंग और बार ऑफिस निर्माण परियोजना को सूचकांक गणना से मुक्त रखने का प्रस्ताव एजेंडे में शामिल किया है।

सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम के अंतर्गत इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना को निरंतर जारी रखने का प्रस्ताव रखा जाएगा।

लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग की ओर से बुधनी में नवीन चिकित्सा महाविद्यालय, संबद्ध अस्पताल, नर्सिंग कॉलेज एवं पैरामेडिकल कॉलेज की स्थापना की पुनरीक्षित प्रशासनिक स्वीकृति का मामला भी बैठक में चर्चा के लिए रखा गया है।

# भोपाल के डेम में मिली मूकबधिर युवक की लाश

## पिता बोले- हत्या कर शव फेंका गया, बॉडी पर चोटों के निशान हैं

**भोपाल (नप्र)।** भोपाल के हथाईखेड़ा डेम में सोमवार सुबह एक युवक की लाश मिली। मृतक की पहचान 28 वर्षीय अमित विश्वकर्मा के रूप में हुई है। वह इंदौर में होटल में नौकरी करता था और मूकबधिर था। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया।

**इंदौर में करता था नौकरी-** अमित विश्वकर्मा पिता शिवरत्न विश्वकर्मा, इंदौर के संजीव नगर का रहने वाला था। वह बचपन से बोल नहीं पाता था और इंदौर के एक होटल में काम करता था।

परिजनों के अनुसार अमित करीब 15 दिन पहले पिता से मिलने आया था। इसके बाद वह वापस इंदौर लौट गया था।

# भोपाल में कब्रिस्तान के नीचे मेट्रो...अब हिंदू संगठन की आपत्ति

## कहा-मेट्रो की जरूरत सरकार तय करती है; विकास कार्य में बाधक नहीं बनना चाहिए

**भोपाल (नप्र)।** भोपाल में कब्रिस्तान के नीचे से मेट्रो के गुजरने को लेकर वक्फ बोर्ड में सुनवाई चल रही है। स्टे पर बहस के लिए 14 मई की तारीख तय की गई है। इसमें मेट्रो प्रबंधन अपना पक्ष रखेगा। इससे पहले हिंदू संगठनों ने आपत्ति जताई है। संगठन पदाधिकारियों का कहना है कि मेट्रो की जरूरत सरकार तय करती है। किसी को भी विकास में बाधक नहीं बनना चाहिए। बता दें कि मेट्रो प्रोजेक्ट को लेकर वक्फ संपत्तियों पर विवाद अब कानूनी हो गया है। भोपाल टॉकीज स्थित प्राचीन कब्रिस्तान के नीचे प्रस्तावित अंडरग्राउंड मेट्रो लाइन और नारियलखेड़ा की वक्फ जमीन पर निर्माण के खिलाफ कमेटी इंतेजामियां औकाफ-ए-आम्मा ने मध्यप्रदेश राज्य वक्फ अधिकरण में दो अलग-अलग प्रकरण दायर किए हैं। दोनों मामलों में मेट्रो निर्माण पर तत्काल रोक लगाने की मांग की गई है।

### समुदाय के हिसाब से नहीं गिने जाएं धर्मस्थल

इसे लेकर सोमवार को हिंदू उत्सव समिति और संस्कृति बचाओ मंच आगे आए। अध्यक्ष चंद्रशेखर तिवारी ने कहा कि अगर कब्रिस्तान और अन्य धर्म स्थल विकास कार्य में बाधक हैं और उन्हें नहीं हटाया जा रहा तो हिंदू धर्म स्थलों को भी हटाने नहीं दिया जाएगा। यदि विकास कार्य में बाधक बन रहे धर्मस्थलों को समुदाय के अनुसार गिना जाएगा तो इसे हिंदू उत्सव समिति बर्दाश्त नहीं करेगी।

भोपाल में मेट्रो की जरूरत है या नहीं? यह विधायक तय नहीं करेंगे। सरकार जरूरत के हिसाब से तय करती है। हिंदू समाज हमेशा से सहयोगी भूमिका निभाकर विकास कार्य में अपना सहयोग प्रदान करता है किंतु अगर सिर्फ हिंदू समाज के धार्मिक स्थलों को हटाया जाएगा तो यह उचित नहीं होगा और इन्हें हिंदू उत्सव समिति हटाने नहीं देगी।

### अंडरग्राउंड मेट्रो लाइन पर यह है विवाद

याचिका में हमीदिया रोड स्थित मासूमा तकिया अम्मनशाह, मस्जिद नूरानी, मुल्लाशाह और अन्य पंजीकृत वक्फ कब्रिस्तान क्षेत्रों के नीचे से अंडरग्राउंड मेट्रो लाइन निकालने की योजना पर आपत्ति दर्ज कराई गई है।

याचिका में कहा गया है कि यह कब्रिस्तान न केवल ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि शहर के सबसे पुराने और बड़े कब्रिस्तानों में शुमार है, जहां हजारों की संख्या में कब्रें मौजूद हैं।

## डीजीपी कैलाश मकवाना ने पिता के डीएसपी बनने और नौकरी छोड़ने का किस्सा सुनाया

डीजीपी कैलाश मकवाना ने कहा बचपन ने मैंने सुना है, खुसरो फरामोज रुस्तमजी जिन्हें केएफ रुस्तमजी के नाम से जाना जाता है। डीजीपी ने एक वाकिया सुनाया और कहा 1968 बैच में मेरे पिता डीएसपी में चयनित हुए थे। उसके 7 साल पहले रुस्तम जी 1958 से 1965 तक प्रदेश के दूसरे पुलिस मुखिया रहे हैं। उन्होंने मप्र पुलिस में कई परंपराएं स्थापित करने में योगदान दिया। मेरे पिता के बैचमेट रघुवंशी, आरके त्रिपाठी जो एडीजी से रिटायर हुए। चार डीएसपी चयनित हुए थे और ट्रेनिंग के दौरान पिताजी जब रतलाम से आ रहे थे तो बाजना की घाटी में बस ड्राइवर ने शराब के नशे में था उसने एक्सीडेंट कर दिया। उस घटना में कुछ लोगों की मृत्यु भी हुई कुछ घायल हुए उनमें मेरे पिता भी थे। बस का शीशा तोड़कर बाहर निकले फिर रतलाम के सरकारी अस्पताल में कुछ दिन भर्ती रहे। रीढ़ की हड्डी में चोट के बावजूद उन्होंने फिर से ट्रेनिंग जॉइन की। डीजीपी मकवाना ने कहा- आप सब जानते हैं कि पुलिस ट्रेनिंग में पीटी, परेड, रस्सा, बैक रोल, फ्रंट रोल ये सब होता है इसमें उन्हें दर्द रहने लगा। डॉक्टरों ने उन्हें सलाह दी कि आप पुलिस की नौकरी आगे कंटीन्यू मत करिए। वरना आगे आपको पैरालिसिस हो सकता है। इन परिस्थितियों में उन्हें डीएसपी की नौकरी छोड़नी पड़ी। सौभाग्य से वे पहले नायब तहसीलदार पद पर थे। वो नौकरी उन्होंने वापस जॉइन की और वे डिप्टी कलेक्टर पद से रिटायर हुए।

# आदिवासियों के खिलाफ अपराध में मप्र फिर नंबर-1

## देश के 32 प्रतिशत मामले अकेले मध्य प्रदेश में

**भोपाल (नप्र)।** मध्य प्रदेश एक बार फिर आदिवासियों के लिए देश का सबसे असुरक्षित राज्य बनकर उभरा है। एनसीआरबी 2024 के आंकड़ों के अनुसार, देश भर में आदिवासियों के खिलाफ दर्ज कुल मामलों में से अकेले 31.75 प्रतिशत मामले मध्य प्रदेश में दर्ज किए गए हैं। यह लगातार दूसरा साल है जब राज्य इस शर्मनाक सूची में पहले स्थान पर है।

### मणिपुर जैसे हालात, आंकड़ों में खौफ

हैरानी की बात यह है कि जातीय हिंसा से जूझ रहे मणिपुर में जहां 2023 में 3,399 मामले दर्ज हुए थे, वहीं मध्य प्रदेश में बिना किसी बड़े दंगे के 2024 में 3,165 मामलों के साथ लगभग उसी स्तर पर पहुंच गया है। हत्या के मामलों में भी राज्य ने राष्ट्रीय औसत (13 प्रतिशत) को पीछे छोड़ते हुए 24 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है।

### बेटियां सबसे अधिक निशाने पर

आंकड़ों का सबसे भयावह पहलू आदिवासी महिलाओं की सुरक्षा है। 2024 में राज्य में आदिवासी महिलाओं से रेप के 358 मामले दर्ज हुए, जो पूरे भारत का 28 प्रतिशत है। इसके अलावा, पास्को के तहत आदिवासी बच्चों के खिलाफ अपराध के मामले भी 132 से बढ़कर 137 हो गए हैं। अपहरण और जबरन शादी के लिए मजबूर करने के मामलों में भी एमपी और गुजरात संयुक्त रूप से शीर्ष पर हैं।

### इंसानियत को शर्मसार करती घटनाएं

रिपोर्ट में इंदौर की उस घटना का जिक्र है जहां एक आदिवासी युवक से सरेराह जूते के फीते बंधवाए गए। वहीं, सिंगरौली में अवैध रेत उत्खनन रोकने पर आदिवासी किसान इंद्रपाल अगरिया को ट्रैक्टर से कुचल दिया गया। इन घटनाओं ने साबित किया है कि आंकड़े केवल नंबर नहीं, बल्कि जमीन पर आदिवासियों के साथ हो रही बर्बरता की गवाही दे रहे हैं।

# मप्र के 8 जिलों में बारिश का अलर्ट

## 30-40किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से आंधी चलेगी; भोपाल-इंदौर संभाग में तेज गर्मी रहेगी

**भोपाल (नप्र)।** मध्य प्रदेश में दो टर्फ और एक साइक्लोनिक सर्कुलेशन एक्टिव होने से सोमवार को भी आंधी-बारिश का दौर रहेगा। मंडला, सिवनी समेत 8 जिलों में अलर्ट है। दूसरी ओर, भोपाल, इंदौर और उज्जैन संभाग में तेज गर्मी पड़ेगी। रविवार को रतलाम में पारा रिकॉर्ड 45.5 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया था।

आईएमडी भोपाल के अनुसार, सोमवार को बैतूल, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, बालाघाट, मंडला, डिंडौरी और अनूपपुर में 30 से 40एमडी प्रतिघंटा की रफ्तार से आंधी और बारिश का अनुमान है। इसकी वजह टर्फ और चक्रवात का एक्टिव होना है।

रविवार को तीन सिस्टम एक्टिव रहे। इससे इंदौर, भोपाल, नर्मदापुरम, सागर, जबलपुर और शहडोल संभाग के 18 जिलों में मौसम बदला रहा। कहीं बादल छाए तो कहीं बूंदाबांदी हुई।

**आज इन जिलों में तेज गर्मी का असर-** मौसम विभाग के अनुसार, सोमवार को भोपाल, इंदौर, उज्जैन, रतलाम, राजगढ़, नीमच, मंदसौर, छतरपुर, भिंड, मुरैना, श्योपुर, दतिया, शिवपुरी, अशोकनगर और शाजापुर में तेज गर्मी पड़ेगी।

**आज से हीट वेव का अलर्ट-** मौसम विभाग ने 12 मई से प्रदेश में हीट वेव यानी लू का अलर्ट जारी किया है। इंदौर और उज्जैन संभाग के जिलों में लू चल सकती है।

**मई में पहली बार तेज गर्मी का दौर-** प्रदेश में 30 अप्रैल से आंधी-बारिश का दौर शुरू हो गया था। लगातार 11 दिन यानी 10 मई तक बारिश हुई। कभी वेस्टर्न डिस्टरबेंस का असर रहा तो कभी चक्रवात और टर्फ का। इसी वजह से मई के पहले सप्ताह में बारिश हुई।

### रतलाम में रिकॉर्ड 45.5 डिग्री पारा

रविवार को प्रदेश के कई शहरों में तेज गर्मी पड़ी। रतलाम में इस सीजन मई में पहली बार पारा 45.5 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया। यहां लगातार दूसरे दिन प्रदेश में सबसे ज्यादा तापमान दर्ज किया गया।

शाजापुर में 44 डिग्री, धार में 42.4 डिग्री, खंडवा में 42.1 डिग्री और नर्मदापुरम में 42 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज हुआ। रायसेन, नरसिंहपुर, सागर और गुना में पारा 40 डिग्री से अधिक रहा। प्रदेश के 5 बड़े शहरों में उज्जैन में सबसे ज्यादा 42.4 डिग्री तापमान दर्ज किया गया। भोपाल में 40.4 डिग्री, इंदौर में 41.9 डिग्री, ग्वालियर में 38.4 डिग्री और जबलपुर में 38.9 डिग्री सेल्सियस रहा।

# एमपी लोक अदालत में एक ही दिन में सुलझे 1.14 लाख केस

## 800 करोड़ से ज्यादा की अवॉर्ड राशि मंजूर

**भोपाल (नप्र)।** मध्य प्रदेश के लोगों के लिए शनिवार का दिन राहत भरा साबित हुआ। प्रदेश भर में आयोजित नेशनल लोक अदालत के दौरान आपसी सहमति और मध्यस्थता के जरिए रिकॉर्ड 1.14 लाख से अधिक मामलों का निपटारा किया गया। मध्य प्रदेश हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश संजीव सचदेवा ने इस राज्यव्यापी अभ्यास का उद्घाटन किया, जिसके लिए प्रदेश भर में कुल 1,459 बेंचों का गठन किया गया था।

**करोड़ों का हुआ सेटलमेंट-** इस मेगा एक्सरसाइज के दौरान न केवल पुराने लंबित मामले सुलझाए गए, बल्कि मुकदमेबाजी से पहले के मामलों को भी खत्म किया गया। पक्षकारों को कुल 800 करोड़ रुपये से अधिक की अवार्ड राशि प्रदान की गई। हाई कोर्ट की जबलपुर, इंदौर और ग्वालियर पीठों में भी आठ विशेष बेंचों ने इस प्रक्रिया को गति दी।

### भोपाल जिला अदालत का प्रदर्शन

राजधानी भोपाल में जिला एवं सत्र न्यायाधीश मनोज कुमार श्रीवास्तव ने मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर लोक अदालत की शुरुआत की। भोपाल में गठित 61 बेंचों ने दिन भर में 17,517 मामलों का निपटारा किया। इनमें 2,963 लंबित मामले और 14,554 प्री-लिटिगेशन मामले शामिल थे। भोपाल के पक्षकारों के पक्ष में 39 करोड़ रुपये के अवॉर्ड पारित किए गए।

# एमपी में फिलहाल शुरू नहीं होंगे परिवहन चेक पोस्ट

## हाईकोर्ट ने लगाया स्टे; पिछले महीने दिया था इन्हें खोलने का आदेश

**भोपाल (नप्र)।** मध्य प्रदेश हाईकोर्ट ने आज प्रदेशभर में बंद पड़े परिवहन (आरटीओ) चेक पोस्टों को दोबारा शुरू करने के अपने पूर्व आदेश पर स्टे (रोक) लगा दी है। इससे परिवहन क्षेत्र में हलचल मच गई है और ट्रांसपोर्ट व्यवसायियों को राहत मिली है।

हाईकोर्ट की जबलपुर बेंच ने 16 अप्रैल 2026 को एक अवमानना याचिका पर सुनवाई करते हुए राज्य सरकार को सख्त निर्देश दिए थे कि सभी बंद चेक पोस्ट 30 दिनों के अंदर दोबारा चालू किए जाएं। जस्टिस विशाल मिश्रा की एकलपीठ ने यह आदेश जनहित याचिका और ओवरलोडिंग नियंत्रण से जुड़े मुद्दे पर दिया था।

कोर्ट ने कहा था कि चेक पोस्ट बंद करने का 30 जून 2024 का सरकारी आदेश कोर्ट की पूर्व अंडरटेकिंग और 2018 के स्टे ऑर्डर का उल्लंघन है। चेक पोस्ट सड़क सुरक्षा, ओवरलोडिंग रोकथाम और परिवहन नियमों के पालन के लिए जरूरी हैं।

**आज कोर्ट ने उसी ऑर्डर को स्टे कर दिया-** आज हाईकोर्ट ने उसी आदेश पर स्टे दे दिया। इससे चेक पोस्ट दोबारा शुरू करने की प्रक्रिया तत्काल प्रभाव से रुक गई है। यह फैसला संभवतः सरकार की अपील या संबंधित पक्षों की याचिका पर आया है। भोपाल के ट्रांसपोर्टर अमन भोंसले ने हाईकोर्ट में रिव्यू पिटीशन दाखिल की थी। जिस पर सुनवाई करते हुए स्टे ऑर्डर जारी किया गया है।

**जुलाई 2024 से बंद हुए थे चेक पोस्ट-** 1 जुलाई 2024 से प्रदेश के अंतरराज्यीय चेक पोस्ट बंद कर दिए गए थे। सरकार का तर्क था कि इससे परिवहन क्षेत्र को सुविधा मिलेगी और अनावश्यक चेकिंग से बचत होगी। परिवहन मंत्री राव उदय प्रताप सिंह ने अप्रैल के अंत में कहा था कि सरकार हाईकोर्ट के आदेश को चुनौती देगी और लीगल ओपिनियन ले रही है।